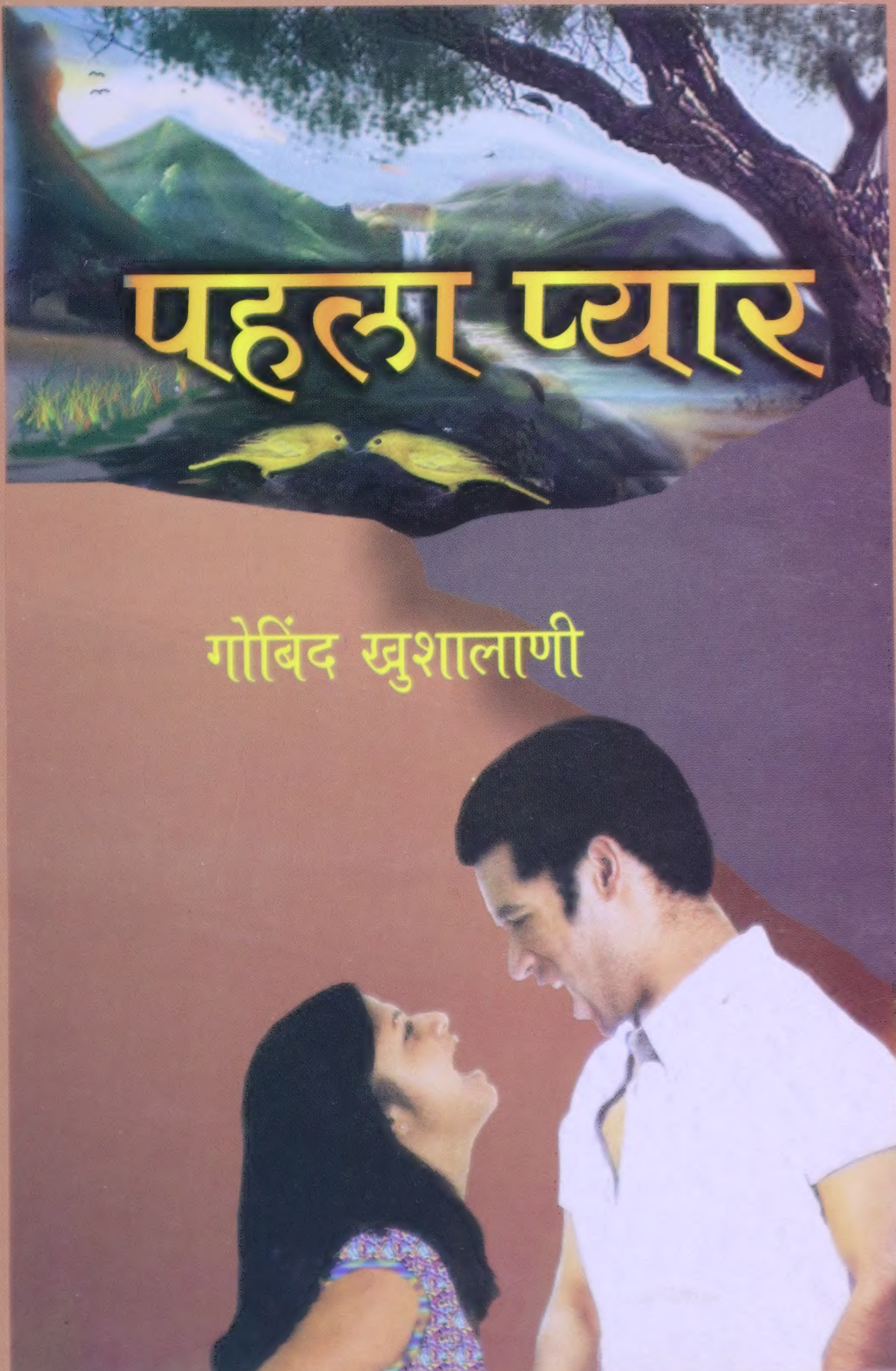
पहला प्यार

गोबिंद खुशालाणी



पहला प्यार

(उपन्यास)

लेखक
गोबिंद खुशालाणी

अनुवादक
खीमन मूलाणी

एक रहस्यमय कहानी, जो
अन्त तक पाठकों को जकड़ रखेगी

सन्त कनवर फाउंडेशन
अहमदाबाद - ३८००१४

पहला प्यार

(सिन्धी उपन्यास का अनुवाद)

लेखक : श्री गोबिंद ख़ुशालाणी

अनुवादक : खीमन मूलाणी

प्रथम संस्करण : हिन्दी २००९

प्रकाशक : संत कनवर फ़ाउंडेशन, अहमदाबाद

मूल्य : रू. १००/-

PAHLA PYAR

(Hindi translation of Sindhi Novel "Hik Dafo Vari")

By : **Gobind Khushalani**
48, Surdhara Bunglows, Opp T. V. Tower,
Ahmedabad 380054.
Tele: 079-26854739
Email : khushalani@fotoflux.com

Translator : **Khiman Mulani**
New A-14/134, Bairagarh, Bhopal 462030.
Tele: 0-9425051715

Publisher : **St. Kanwar Foundation**
407, Sakar III, Nr. Old High Court,
Ahmedabad 380014.
Tele: 079-27541971 Fax : 079-27542644

Edition : 1st (Hindi) 2009.

Price : Rs. 100/-

Cover Design : Ghanshyam Sagar.

उपन्यास के लेखक - श्री गोबिन्द खुशालाणी



श्री गोबिन्द खुशालाणी का जन्म सिन्धमें २५ जनवरी १९४० ई.में हुआ । उन्होने अंग्रेजी साहित्य में ग्रेजुएशन की उपाधि प्राप्त की। वे इन्शूरेन्स इन्सटीट्यूट ऑफ़ इण्डिया में फ़ेलो रहे। उन्होने अपने जीवन का बड़ा भाग न्यू इण्डिया इन्शूरेन्स कम्पनी लिमिटेड में बिताया। अब अहमदाबाद में अपना बिज़नेस सेन्टर चलाते हैं।

वर्ष १९५५ ई. में उन्होने १५ वर्ष की आयु में लेखन की शुरुआत की। उस समय के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में उनकी कहानियां तथा लेख छपते थे। कुछ समय बाद कैरियर में आगे बढ़ने के लिये तीस वर्षों तक लेखन कार्य से दूर रहे। अब सेवानिवृत होने के पश्चात् पुनः लेखन गतिविधियां प्रारम्भ कर दी हैं। उनके लेखों तथा कहानियों के विषय प्रायः समाजिक तथा वर्तमान समय की बातों के साथ व्यंग्य भी रहते हैं।

अब तक सिंधी भाषा में इनकी दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें ७ उपन्यास दो कहानी संग्रह तथा एक एतिहासिक पृष्ठ भूमि पर खोजनात्मक पुस्तक "**चचनामा**" सम्मिलित है। इनकी अंग्रेजी पुस्तक "**Chachnamah Retold**" भी प्रकाशित हो चुकी है, जिसकी बहुत प्रशंसा हुई है।

श्री खुशालाणी को सिंधी उपन्यास "**गुल्सतान ग़लीज़ थी रहियो आहे**" पर राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद की ओर से पुरस्कार मिल चुका है। उनके उपन्यास "**पहला प्यार**" का **सिन्ध (पाकिस्तान)** में टी.वी. सीरियल भी बना, जो बहुत लोकप्रिय हुआ। अब यह उपन्यास आपके हाथों में है।

अनुवादक-श्री खीमन मूलाणी

श्री खीमन यू. मूलाणी सिन्धी भाषा के प्रतिष्ठित कवि, कहाँनीकार एवं अनुवादक हैं। इनकी भारत तथा सिंधकी प्रतिष्ठित सिंधी एवं हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से कविताएं, कहानियां तथा लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

इन को "**राईटर्स एवं आर्टिस्टस वेलफ़ेयर फ़ाऊंडेशन मुम्बई**" तथा "**साहित्य कलश**" इन्दौर ने आजीवन साहित्यक योगदान के लिये पुरस्कृत एवं सम्मानित किया है।

इनकी अभी तक सिंधी भाषा में ९ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें ६ कविता संग्रह, २ कहानी संग्रह, एक अन्य भारतीय भाषाओं की कहानियों का सिंधी भाषा में किये गये अनुवाद की पुस्तक भी सम्मिलित है। इसके अलावा इन्होने १६ सिंधी पुस्तकों का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है।

श्री खीमन यू. मूलाणी प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर के कई साहित्यक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े हुए है।

यह उपन्यास आज से पचास वर्ष पहले की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। उस समय **मुम्बई** को **बाम्बे (बम्बई)** और **पुणे** को **पुना** कहा जाता था। पाठकों से निवेदन है, कि उपन्यास पढ़ते समय सही नाम का ध्यान रखें।

कुछ खास मुद्दों की व्याख्या

(यह उपन्यास बीसवीं शताब्दी के मध्य में तात्कालीन परिस्थियों को ध्यानमें रखकर लिखा गया है। सही पृष्ठभूमि में पढ़ने के लिये ईस व्याख्या को पढ़ने का आग्रह किया जाता है)

- महाबलेश्वर महाराष्ट्र के सातारा ज़िले में है।
- उन दिनों **जीपों** में आजकल की भांति स्टील की बन्द बॉडी नहीं होती थी। चारों ओर केनवास लगा रहता था। जीप केवल पुलिस विभाग के पास हुआ करती थी। कहीं कहीं लोक निर्माण विभाग (PWD) या वन विभाग (Forest Dept.) के अधिकारियों के पास भी होती थी, जिनका सम्बंध एसे स्थानों से होता था जहां सड़कें नहीं रहती थी। पुलिस की जीप उसके खाकी केनवास के कारण अलग लगती थी।
- **लाख** तो क्या **हज़ार** रुपये की राशि भी बड़ी होती थी। रुपये का मूल्य उस की ख़रीदी शक्ति पर आधारित रहता है। उस समय सोना 70 से 80 रु. में एक तोला मिल जाता था। 15 से 20 हज़ार में अच्छा खासा बंगला मिल जाता था।
- **बैंक** के ईंचार्ज को एजंट कहा जाता था। वह मैंनेजर की भान्ति केवल पगार पर काम नहीं करता था। एजंट पध्दति बैंको के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् समाप्त हुई।

- मृतक के अंतिम क्रिया के बाद तीसरे दिन **पगड़ी** की सामाजिक रस्म के अनुसार शाम को सब अज़ीज़ व जान पहचान के लोग शोक सभा के लिये मिलते हैं।
- पुलिस वालों को **पिस्तोल** केवल विशेष डयूटी हेतु प्रदान किया जाता था। आम तौर पर लेकर नहीं घूमते थे।
- उन दिनों **नाईटलेच** प्रचलन में नहीं था। इसलिये सुन्दर आहूजा ने इंस्पेक्टर नावाणी को समझाने की आवश्यकता महसूस की।
- उन दिनों **टेलिफ़ोन** कनेक्शन दुर्लभ होता था। यदि कोई पैसा ख़र्च करके लगाना भी चाहता था तो उसे लम्बी वेटिंग लिस्ट के कारण कनेक्शन बहुत कठिनता से मिलता था। ईसलिये जान पहचान वालों के पास से अथवा पोस्ट आफ़िस से लगाना पड़ता था। एस.टी.डी., पी.सी.ओ. की सुविधा नहीं थी।

एस.टी.डी. सुविधा उपलब्ध नहीं थी। एक नगर से दूसरे नगर में बात करने के लिये **ट्रंक कॉल** बुक कराना पड़ता था, जो टेलिफ़ोन एक्सचेंज से आपरेटर लगारकर देते थे।

टेलिफ़ोन बिल के साथ हर माह किये गये ट्रंक कॉल की सूची उपलब्ध करवाई जाती थी जिसमें निम्न लिखित विवरण होता था।

(क) किस नम्बर पर ट्रंककॉल किया गया है।

(ख) काल किस समय लगा। तिथि क्या थी।

(ग) कितने समय तक बातचीत हुई।

(घ)कॉल अर्जंट था या साधारण (लाईटनिंग कॉल की पध्दति नहीं थी)

(च) कॉल की राशि।

इंस्पेक्टर नावाणी अपराधी के फ़ोन से किये गये कॉलों का विवरण प्राप्त कर सका, वह जान सका कि किस किस से कब कब बात की गई।

१. अन्त

घर में जब एक ही उम्र के बच्चे हों, तो स्वाभाविक है कि घर में कोई भी वस्तु बच्चों की संख्या के आधार पर लानी पड़ती है। दो बच्चों के लिये मुझे घर में कैलेंडर भी दो लाने पड़ते हैं। सुबह को उठते ही दोनों अपने अपने कैलेंडर से पिछली तिथि की चुटकी फाड़ते हैं और यह काम पहले कौन करता है, दोनों इसकी होड़ लगाते रहते हैं। इस कारण दोनों एक दूसरे से पहले उठने की कोशिश करते हैं। उन की जल्द उठने की इस आदत को बढ़ावा देने के लिये मैं अगले दिन की कैलेंडर की चुटकी सर्वप्रथम फाड़ने वाले की खूब प्रशंसा करता हूँ।

उस दिन छोटा बच्चा पहले उठा और आँखें मलते हुए चुटकी लाकर मेरे हाथ में देते हुए कहा, "पपा, यह कौन सी तिथि है?"

"१५ नवम्बर।"

"आज मैं जल्दी उठा हूं। आज १६ तारीख़ हुई।"

मैं ने उस की पीठ थपथपाकर उसे शाबासी दी।

मैं ने अभी नाश्ता ही किया था कि इन्सपेक्टर नरेश का फ़ोन आया।

उस ने बताया, "महाबलेश्वर में श्रीमती भाटिया ने आत्महत्या की है।"

मैं ने कहा "श्रीमती भाटिया?.... आत्महत्या! लेकिन क्यों?"

"पता नहीं, महाबलेश्वर से आधा घंटा पहले इन्सपेक्टर क्रिश्चन का फ़ोन आया था। मैं ने उस से कहा है कि लाश को पोस्टमार्टम के लिये भेज दे। बंगले पर पहरा रखे और किसी को अन्दर जाने न दे।"

"ऐसा क्यों?"

"मैं ने सोचा कि शायद तुम इस केस में रुचि लो। इस के अलावा मुझे ख़ुद आश्चर्य हो रहा है कि श्रीमती भाटिया के आत्महत्या करने का कारण क्या हो सकता है! तो चलें महाबलेश्वर?"

" हां, ठीक है।" मैं ने कहा

"अच्छा! तुम तैयार होकर आओ, मैं फ़्युअल वग़ैरह चेक करवाकर जीप तैयार रखता हूं।"

" मिस्टर भाटिया?"

" वह महाबलेश्वर रवाना हो चुका है।"

महाबलेश्वर पुना से कुछ दुरी पर अच्छा हिल स्टेशन है। नरेश अपराध शाख़ा में इन्सपेक्टर था और मैं गुप्तचर शाख़ा में। परन्तु मैं कभी कभी अपराध शाखा में भी जाता था। वह मुझ से कुछ वर्ष जुनियर था। नरेश को पता था कि श्रीमती भाटिया मेरी पत्नी की सहेली थी और भाटिया भी हमारी मित्र-मंडली का था। नरेश को यह भी पता था कि मैं श्रीमती भाटिया (जिसका नाम सुनीता था) में ख़ास प्रकार से रुचि लेता हूं और उसे हर प्रकार की सहायता करने के लिये तैयार रहता हूं। यही कारण था कि लगभग दो वर्ष पहले सुनीता के पिता के देहांत के बाद मैंने ही उसे सम्पत्ति के निपटारे में सहायता की थी। सुनीता पैत्रिक सम्पत्ति की अकेली वारिस थी। उसे विरासत में पूना के दो बंगले, महाबलेश्वर वाला बंगला, काफ़ी शेयर, जवाहरात और बैंक बैलेंस प्राप्त हुआ था। उस के पिताजी का व्यवसाय नासिक में था, परन्तु कुछ समय पहले वे अपना कारोबार समेट कर पूना में आकर रहने लगे थे। उन्होंने कुछ धन मकानों में लगाया और कुछ शेयरों में। सुनीता के विवाह के बाद वे एक तरह से एकलता पूर्ण जीवन बिताने लगे थे।

मैं ने अपनी श्रीमती को जब बताया कि सुनीता ने आत्महत्या की है तो उस से चीख़ निकल गई। उस ने कहा - " इसी का भय था।"

" क्या मतलब?" मैं ने कहा

" मेरे दिल्ली जाने के पहले, जब वह यहां आई थी, तो मुझ से कहा था कि उस का मि. भाटिया के साथ अब अधिक समय साथ रहना संभव नहीं है। मांगने पर भी तलाक़ नहीं दे रहा है। मैं ने उस से पूछा कि बात क्या है, तुम लोगों का झगड़ा क्यों बढ़ गया है? सीधी तलाक तक बात पहुंच गई? "

" क्या बताया था उस ने?"

"कहा था मैं पहले मायके से हो आऊं, फिर वो मुझे आराम से सब कुछ बताएगी। उस के बाद तो हम दोनों की मुलाक़ात ही नहीं हुई।"

"कमाल है! तुम्हारी तो वह पक्की सहेली थी, तुम्हें भी कुछ नहीं बताया?" मैं ने अपनी श्रीमतीजी से पूछा।

" नासिक में तो मामूली जान पहचान थी, केवल एक ही स्कूल में पढ़ने तक की।

रिश्ता तो यहां आकर पक्का हुआ।"

"मुझे तो इधर उधर से छुट-पुट ख़बर मिलती रहती थी।" मैं ने कहा।

मैं लगभग आधे घंटे में तैयार होकर बाहर निकला। श्रीमतीजी को बता दिया कि संभवत: रात को मैं घर नहीं आऊं।

पति-पत्नी में अनबन के कारण, सुनीता घर छोड़कर महाबलेश्वर वाले बंगले में अकेली रहने लगी थी, हालांकि मैं जानता था, भाटिया वहां भी उस से मिलने जाता था। भाटिया कहता था कि वह रूठ कर चली गई है और ख़ुद आ जायेगी। मुझे ज़्यादा पूछताछ करना ठीक नहीं लगता था।

नरेश को इन सब बातों का पता था। इसलिये ही उस ने मुझे सचेत किया। और मेरी भी इच्छा थी कि एक बार जाकर सब कुछ देख आऊँ तो अच्छा। दूसरी कोई व्यस्तता भी नहीं थी, इसलिये अवसर अच्छा था।

सूर्य काफ़ी ऊपर आ चुका था, परन्तु मौसम में ठंड-सी थी। हम लोग पहाड़ी पर जैसे जैसे ऊपर चढ़ते जा रहे थे, वैसे ठंड का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। हवा सरसराहट से जीप में घुस रही थी। नरेश जीप चला रहा था। वह भी मेरी तरह गरम सूट पहने था। मैं ने तो कानों पर मफ़लर भी पहन रखा था। रात को कहीं रुकना पड़े, इसलिये हम दोनो ने गरम ओवरकोट भी रख लिये थे।

ढाई तीन साल पहले की बात है, मैं श्रीमतीजी के साथ रेस्टोरेन्ट में बैठा था। हम लोग पिक्चर देखकर लौटे थे। उस समय रेस्टोरेन्ट में कुछ ज़्यादा चहल पहल थी। हम लोगों को बैठे हुए अभी कुछ मिनट ही हुए थे कि पीछे से एक महिला आकर मेरी पत्नी के पास खड़ी हो गई। मैं उसे देखता ही रह गया, गोरा रंग, लुभावना चेहरा, स्वस्थ शरीर, लंबा कद, सुराही दार गरदन।

उसे ने श्रीमती से पूछा "कुमारी, पहचानती हो?"

कुमारी! श्रीमती को मेरे सामने इस नाम से किसी ने वर्षो बाद पुकारा था। वह पहले तो कुछ पल तक उसे ताकती रही, फिर श्रीमतीजी का चेहरा चमक उठा और एक चौड़ी मुस्कान उस के होठों पर निखर आई। उस ने कहा, "अरे, सुनीता। तुम यहां कैसे?"

"जैसे तुम, मैं ने सोचा तुम पहचानोगी भी या नहीं?"

"तुम ने शादी की है?"

'यह तो उस की ज़री की चमकीली साड़ी तथा उस के चलने के ढंग से ही पता हो रहा है।' मैं ने सोचा।

उस ने केवल मुस्कारकर पीछे बैठे हुए एक व्यक्ति की ओर इशारा किया।

मैं ने कहा "मिस्टर भाटिया?" वह हम लोगों की ओर ही देख रहा था। मैं ने इशारे से उस को अपनी ओर बुलाया। वह आकर मेरे साथ बैठ गया। सुनीता भी उस के साथ बैठी। भाटिया के साथ मेरी जान पहचान उस समय कोई ज़्यादा नहीं थी। वह एक प्रसिध्द क्रिमिनल वकील था, हालांकि उस की उम्र कोई ज़्यादा नहीं थी। इस प्रकार हम लोगों की मित्रता की शुरुआत हुई।

उन लोगों को कहीं जल्दी जाना था, सो हमें घर आनेका निमंत्रण देकर रवाना हो गये। उन के जाने के बाद मैं श्रीमती जी से सुनीता के बारे में पूछने लगा। उस ने बताया कि वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ती थीं। सुनीता उस से एक कक्षा पीछे थी। आज उन की मुलाक़ात लगभग दस वर्ष बाद हुई थी, क्योंकि श्रीमतीजी के पिता के स्थानान्तरण के कारण उसे नासिक छोड़ कर दिल्ली जाना पड़ा था और उस के बाद वह विवाह करके यहां पूना आ गई थी।

मैं ने जब उसे बताया कि मुझे उस की सहेली बहुत अच्छी लगी, तो उस ने मुस्कराकर मेरी ओर कुछ इस अंदाज से देखा, मानो कह रही हो, "क्या मुझ से भी अच्छी है?" आज भी जब मैं श्रीमतीजी के उस अंदाज़ को याद करता हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि वह मुझे कभी भी इतनी मोहक नहीं लगी जितनी उस समय। इस प्रकार जब कभी सुनीता मिलती थी तो मुझे उस के साथ पहली मुलाक़ात याद आती थी और श्रीमती का वह अंदाज़। मैं सोचने लगा अब न तो वह मुलाक़ात याद आयेगी, नही वह अंदाज़।

हम लोग शाम को लगभग चार बजे महाबलेश्वर पहुंचे और सीधे थाने गये। इन्सपेक्टर क्रिश्चन वहां बैठा था। वह पुलिस यूनीफार्म में था, क़द का लंबा, चौड़ी छाती, भरे हुए गाल और मोटे होंठ। वह गोवा का निवासी था। उस की आयु लगभग २७ वर्ष थी। वह भी हम लोगों की तरह सीधी भर्ती वाला था। अभी सब-इन्सपेक्टर था परन्तु चलन में इन्सपेक्टर कहना ही उचित था।

हम लोगों को देखर वह खड़ा हो गया। हाथ मिलाकर हाल चाल पूछने के पश्चात् उसने मुझ से पूछा, "आप यहां कैसे?"

जवाब नरेश ने दिया "तुम्हें तो मालूम होगा कि मिस्टर नावाणी के भाटिया परिवार से अच्छे संबंध हैं।"

"हां।"

"बस तुमने फ़ोन किया तो नावाणी ने कहा कि चलो चलकर स्वयं देख आएं।"

"आप पहले सूचना देते तो मैं पोस्टमार्टम रुकवा सकता था। अन्तिम बार चेहरा तो देख लेते। आपने फ़ोन पर कुछ निर्देश तो दिये परन्तु अपने आने की बात नहीं की।"

मैं ने कहा "वास्तव में मुझे कुछ देर से पता चला। आने की मेरी ही इच्छा थी। तुम ने कुछ जांच की है?"

"हाँ, यह तो साफ़ साफ़ आत्महत्या का मामला है। हम लोगों ने रस्सी से लाश पेड़ पर लटकी हुई देखी। पहले तो लाश को उतारकर रखा। उस के बाद उस स्थान के फ़ोटो वग़ैरह लिये। रस्सी के नीचे सीध में एक स्टूल भी मिला जो गिरा हुआ था। फ़ोटो रात तक मिल जायेंगे।"

"लाश को पोस्टमार्टम के लिये कहां भेजा है?"

"सातारा!"

"वारदात की खबर तुम्हें किस समय मिली?"

"सुबह को लगभग छह बजे, पास वाले बंगले में रहने वाले बीमा एजंट श्री चिमनदास ने फ़ोन किया था। उस समय मैं ड्युटी पर नहीं था। मुझे सिपाही घर से बुलाने आया। मैं तुरन्त दो सिपाहियों को लेकर वारदात पर गया। उसी समय मि. भाटिया को भी फ़ोन किया। ग्यारह बजे से कुछ देर बाद वे भी आ पहुंचे। पूरी जांच करने के पश्चात हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि यह आत्महत्या है।"

"मि. भाटिया तुम्हारे साथ थे?"

"हाँ, परन्तु वे लगभग एक बजे सातारा चले गये। इस बीच लाश को सातारा के लिये रवाना किया जा चुका था। मि. भाटिया का कहना था कि जैसे ही लाश वापस मिल जायेगी, उसे उठवाकर पूना ले जायेंगे और वहीं अग्निसंस्कार होगा। उस ने यहां से कुछ मित्रों और रिश्तेदारों को फ़ोन लगाये थे।"

क्रिश्चन ने कुछ चाय नाश्ता मंगाया। हम लोग हाथ मुंह धोकर फ्रेश हुए।

मैं ने कहा " क्रिश्चन, हम लोगों को वह पेड देखना है, जिस में लाश लटकी हुई थी।"

" थोड़ा रुकिये, बाद में निकलते हैं। मैं एक कॉल की प्रतीक्षा कर रहा हूं, कॉरोनर के कार्यालय से।"

" कॉल न मालूम कब आयेगा। ऐसा करो, बंगले की चाबियाँ हमें दे दो। हम वहां जाकर आते हैं।"

"ठीक है। बंगले पर दो सिपाही खड़े हैं। कहेंगे तो वे आप को सब कुछ दिखाएंगे।"

कुछ ही मिनटों में हम लोग बंगले पर पहुंच गये। दो सिपाही बंगले के गेट पर कुर्सियाँ डाल कर बैठे थे। चारों ओर शांति छाई हुई थी। इस क्षेत्र में बंगले दूर दूर थे और यह बंगला तो बिल्कुल छोर पर था। हम लोगों को देख कर सिपाही उठ खड़े हुए और हमें सलाम मारा। जीप देखते ही वे समझ गये थे कि हम लोग पुलिस के ही आदमी हैं।

नरेश के कहने पर एक सिपाही हमें उस पेड़ के तरफ़ ले जाने लगा, जहां से सुनीता की लाश मिली थी। दूसरा सिपाही गेट पर ही खड़ा रहा। यह पेड़ बंगले के बिल्कुल दाहिनी ओर था। हम लोग बंगले के गेट से अहाते में आये। सामने वाला रास्ता बंगले के पोर्च की ओर जा रहा था। अगला पूरा भाग सीमेंट का बना था। उस भाग को छोड़ कर शेष मैदान कच्चा था। हम लोग गेट से घुस कर सीधे चलने के बाद दाहिनी ओर मुड़े तो सामने एक पेड़ दिखाई दिया। मुझे समझने में देर नहीं लगी कि यही पेड़ है, क्योंकि बंगले के अहाते में और कोई पेड़ था ही नहीं। पेड़ के पीछे और कोई बंगला नहीं था। कुछ दूरी पर एक खाई दिखाई दे रही थी। बंगले के उत्तर पूर्व में एक और बंगला था। दोनों इस क्षेत्र के छोर वाले बंगले थे।

सिपाही को वापस भेजकर हम लोग उस स्थान का निरीक्षण करने लगे।

नरेश ने कहा "यार ध्यान देना, कहीं कोई सुराग़ ऊपर नीचे न हो जाये।"

मैं ने मुस्करा कर कहा " क्या घर से ही तैयार होकर आये हो कि आत्महत्या की नहीं बल्कि हत्या की तहक़ीक़ात करनी है? क्रिश्चन जांच कर चुका है।"

नरेश ने कहा, "मैं यह नहीं कह रहा कि हत्या हुई है, परन्तु यदि हुई हो तो? अनुभव बताता है कि शिष्ट समाज में हुई आत्महत्याएं अधिकतर हत्याएं ही साबित हुई हैं।"

ज़मीन कुछ गीली थी। हमें पैरों के कुछ निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे, जो

पेड़ से थोड़ा पहले आकर समाप्त हो रहे थे। पेड़ के चारों ओर हरी दूब थी। उस पेड़ से लगभग दस फ़ीट दूर एक चबूतरा बना हुआ था, जिस पर तुलसी का एक गमला रखा था। पास में एक उल्टा दीपक, एक मोमबत्ती का टुकड़ा और कुछ अधजली अगरबत्तियों के टुकड़े पड़े थे। नरेश उस चबूतरे की ओर गया। ज़मीन की ओर देखते ही उस ने कहा, "नावाणी, यह देखो। वही पैर चबूतरे तक आते हैं।"

बात सही थी। नरेश ने आगे कहा, "इस का अर्थ यह हुआ कि यह व्यक्ति, जो संभवत, श्रीमती सुनीता ही है, इस चबूतरे की ओर आया है, और पेड़ की ओर जाते समय दूब के कारण पैरों के निशान गायब हो गये हैं। दूब समाप्त होने के बाद फिर प्रकट हुए हैं।"

"हाँ, ऊपरी तौर पर देखने से तो यही लगता है।" मैं ने देखते हुए कहा।

हम लोग फिर पेड़ के सामने वाले भाग में आये। पैरों का सिलसिला, पेड़ के पास जिस स्थान पर समाप्त हो रहा था, उस स्थान पर चार पायों के निशान थे, जो स्पष्टता उस स्टूल के लग रहे थे, जिस पर चढ़ कर आत्महत्या की गई थी। और जांच करने पर दो फ़ीट दूर गीली ज़मीन पर एक और निशान दिखाई दिया, मानो किसी ने लकड़ी का तख्ता ज़मीन पर सीधा खड़ा करके फैंका हो।

मैं ने कहा "नरेश यह देखो, शायद स्टूल इस ओर गिरा है और यह उसके तख़ते का निशान है।"

स्टूल के पायों के निशान आगे कार के टायरों के निशान देखकर मुझे आश्चर्य हुआ।

मैं ने कहा "नरेश यह तो देखो, ये निशान यहां कैसे आये?"

टायरों के निशान, स्टूल के निशानों से दो तीन फ़ीट पहले ही खत्म हो गये।

"ये देखो, कुछ अलग टायरों के निशान एक गेट से दूसरी गेट तक जा रहे हैं - इस का अर्थ यह हुआ कि इस बंगले से होते हुए कोई निकला है।"

ठीक उसी समय जीप के आने की आवाज़ आई। मैं ने नरेश से कहा " शायद क्रिश्चन है। हम उसे अपने निरीक्षण की जानकारी अभी नहीं देंगे। देखें वह क्या कहता है।"

क्रिश्चन हम लोगों की ओर आया। नरेश ने पुछा, "सातारा से फ़ोन आया?"

"हां। भाटिया पूना रवाना हो चुका है। लाश उसे दे दी गयी है।"

"पोस्टमार्टम की रिपोर्ट?"

" मृत्यु गला दबने के कारण हुई है। मृत्यु के समय का अनुमान शाम छह से आठ के बीच लगाया गया है। क्योंकि लाश सारी रात बाहर खुले में, ठंड में पड़ी थी, इसलिये समय में दो घंटे का अंतर रखा गया है, पक्का नहीं कहा जा सकता।"

नरेश ने ज़मीन की ओर देखते हुए मानों आश्चर्य से पूछा, "क्रिश्चन, ये टायर के निशान यहाँ कैसे?"

क्रिश्चन ने कहा "ओह! ये निशान बाजू वाले बंगले वालों की कार के हैं।"

"वह कैसे?"

"मैं ने सुबह इस बात की भी तहक़ीक़ात की थी। वास्तव में बात यूं है कि उस बंगले वाले जब कभी शहर की दक्षिण दिशा की ओर आते जाते हैं, तो वे अपनी कार में इस बंगले के कम्पाऊंड में से निकलते हैं, क्योंकि बाहरी रास्ता काफ़ी लम्बा है। थोड़ी दूरी पर बीच में एक खाई है, आते जाते समय इस की परिक्रमा देनी पड़ती है। वैसे ये लोग एक गेट से अहाते में आकर दूसरे गेट से निकल जाते हैं। ऐसी अनुमति उन्हें श्रीमती भाटिया ने दे रखी थी।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"मि. भाटिया ने पुष्टि की है।"

नरेश ने कहा, " परन्तु कार इस ओर क्यों आई?"

" शायद कार रिवर्स करने के लिए यहाँ आई हो।"

मैं कुछ कहने वाला था कि नरेश ने इशारे से रोका।

नरेश ने कहा, "तुम ने इन लोगों से पूछताछ की है?"

"हाँ! उन लोगों का कहना है कि वे कल शाम को सिनेमा देखने गये थे। लौटते समय यहां से नहीं गुज़रे थे। उन्हें शहर में कुछ काम था। इसलिये उत्तर दिशा की ओर से लौटे थे। परन्तु यह कोई विशेष वज़नदार बात नहीं है, क्योंकि कार के सामान्य रास्ते और पेड़ के बीच में विशेष कोई दूरी तो है नहीं।"

हम तीनों लोग आकर जीप में बैठे। क्रिश्चन की जीप सिपाहियों को सौंप कर उन्हें गेट लॉक कर तुरन्त आने को कहा। हम लोग थाने पहुंचे। उस समय शाम के छह बज रहे थे। क्रिश्चन ने चाय का आदेश देकर फ़ोटो लाने के लिये किसी को फ़ोन

किया।

हम लोग चाय पीकर बैठे ही थे कि फ़ोटो आ गये। एक फ़ोटो में स्टूल गिरा हुआ था, बिल्कुल उसी स्थिति में, जिसका हम लोगों ने अनुमान लगाया था। दूसरा फ़ोटो लाश का था, जो बिल्कुल पास से लिया गया था। सुनीता का सुंदर चेहरा, उस समय भी बेजान नहीं लग रहा था। और भी कुछ थे जो वारदात वाले स्थान पर अलग अलग दिशाओं से लिये गये थे। मैं बारीकी से फ़ोटो देख रहा था और मुझे उन पर विचार प्रकट करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। नरेश भी अच्छी तरह उन का निरीक्षण कर रहा था।

सुनीता कढ़ाई की हुई क़ीमती साड़ी पहने हुए थी। उस ने मेक अप भी कर रखा था, मानो बाहर घूमने जा रही हो।

मैं ने कहा "फ़ोटो में केवल एक चप्पल दिखाई दे रही है। दूसरी चप्पल कहां गई ?"

क्रिश्चन ने कहा, "हम लोगों ने तलाश की परन्तु दूसरी चप्पल नहीं मिली।"

" वह एक चप्पल कहाँ है?"

क्रिश्चन ने पास में रखी अलमारी से चप्पल लाकर दिखाई। मैं ने चप्पल को ध्यान से देखा और फिर ठंडी सांस लेकर उसे लौटा दी।

क्रिश्चन ने कहा " मिस्टर नावाणी, बात स्पष्ट है कि श्रीमती भाटिया ने आत्महत्या की है। पेड़ तक उसके पैरों के निशान मिलते हैं। स्टूल जिस पर खड़ी होकर फंदा गले में डाला है, वह भी है। लाश रस्सी में लटकती हुई देखी गई है। पोस्टमार्टम का रिपोर्ट है कि मृत्यु गला दबने के कारण हुई है। परन्तु एक बात मैं समझ नहीं पाया हूं।"

"कौन सी ?" मैं ने पूछा

"कि इस आत्महत्या का कारण क्या हो सकता है ?"

"तुम्हें इस बारें में भी तहक़ीक़ात करनी चाहिये थी।" मैं ने कहा

"ठीक कहा आपने!.... तहक़ीक़ात तो मैं ने की है। सब से महत्वपूर्ण गवाह है मिस्टर भाटिया। उस का कहना है कि उन लोगों की शादी सफल नहीं रही। दुर्भाग्य से वे कुछ समय से अलग रह रहे थे। परन्तु वह भी पक्की तरह से कह नहीं सका कि आत्महत्या का कारण नाकाम शादी ही है।"

" क्यों? "

" क्योंकि यदि यही कारण होता तो यह वारदात उन के अलग होते ही घट जानी चाहिये थी, परन्तु आज अलग हुए लगभग दो ढाई महीने बीत चुके हैं।"

"तुम्हें श्रीमती भाटिया द्वारा लिखित कोई पत्र अथवा कोई नोट, आत्महत्या के बारे में मिला है?" नरेश ने पूछा।

"यही तो मुश्किल है कि पत्र आदि हाथ नहीं लगा है। मि. भाटिया को भी शक है कि उन की आपसी कलह ही आत्महत्या का कारण है।"

मैं ने कहा, "ऐसा नहीं है क्रिश्चन, कभी कभी समय बीतने के बाद, व्यक्ति अधिक से अधिक अपनी स्थिति पर सोचता है और स्वयं को अधिक दुखी और परेशान महसूस करता है। इसलिये यदि देर से आत्महत्या हुई तो इसका अर्थ यह नहीं है कि इस के अलावा कोई दूसरा कारण हो सकता है।"

"इस का अर्थ यह हुआ कि आप भी मुझ से सहमत हैं।"

"हाँ, अभी तक तो यही लग रहा है।"

"मिस्टर भाटिया का भी यही कहना है कि कभी कभी ऐसा हो सकता है।"

मैं ने कहा, "तुम ने मिस्टर भाटिया से पूछा कि कल वह कहाँ था?"

"हाँ, पूछने के लिए तो मैं ने पूछा, परन्तु वास्तव में मुझे मालूम था कि वह अपने पूना वाले कार्यालय में था।"

"वह कैसे?"

"कुछ दिनों से मैं पूना में था, कल शाम को पांच बजे मैं भाटिया के कार्यालय से सीधे महाबलेश्वर आया। मैं ने स्वयं उसे पूना के कार्यालय में बैठा हुआ देखा था।"

" तुम पूना क्यों गये थे?"

" मैं ने चार दिन की छुट्टी ली थी और घर सब से मिलने गया था।"

" हाँ, बराबर तुम्हारा घर वहां है। परन्तु तुम भाटिया के कार्यलय में क्यों गये थे?"

क्रिश्चन थोड़ा हिचकिचाया। फिर उस ने मुस्कराकर कहा, " यार आप लोगों से क्या छिपाना। मिस्टर भाटिया की सेक्रेटरी से अपना अफ़ेयर है।"

"तुम भाटिया की उपस्थिति में भी उस से मिलने जाते हो?"

"बताता हूं सब कुछ । मैं भाटिया की उपस्थिति में जेन से कभी मिलना नहीं चाहता । प्रयत्न करता हूं कि भाटिया को पता न चले कि मैं उस से मिलने आया हूं क्योंकि हम दोनों भाटिया के कार्यालय में एक बार बिल्कुल रोमांटिक मूड में आ गये थे। अचानक भाटिया आ गये। उन्होंने न केवल जेन को डांटा परन्तु उसे नौकरी से निकालने की धमकी भी दी और मेरी भी बेइज़्ज़ती की। इसलिये इस बार जब पूना गया तो जेन को फ़ोन कर, कहीं दूसरे स्थान पर बुलाकर मिला। कल सुबह जेन का फ़ोन आया था कि भाटिया महाबलेश्वर जा रहे हैं और मैं शाम को पांच बजे उस से मिलने आऊं। मैं ने उस से कहा कि यदि भाटिया पूरा दिन कार्यालय में अनुपस्थित हो तो पहले ही क्यों न मिला जाय । तब जेन ने कहा कि उस के पास कार्यालय में कुछ लोग मिलने आनेवाले हैं, और उसे कुछ कागज़ों का भी निपटारा करना है, इसलिये शाम पांच बजे काम पूरा करके कहीं घूमने चलेंगे। सामान्यता उसे कार्यालय में सात बजे तक बैठना पड़ता है । मैं लगभग पौने पाँच बजे उस के कार्यालय में गया । परन्तु बाहर से ही दरवाज़े पर लगे कांच से भाटिया को बैठा देख कर लौट आया।"

■

२. तहक़ीक़ात

हम लोग क्रिश्चन से विदा लेकर बाहर आये। मैं ने कहा, " नरेश, चलो पहले किसी होटल में चलकर रहने का प्रबंध करें, और फ़्रेश होकर खाना खाने के बाद कुछ काम करें।"

उस समय शाम के सवा सात बज रहे थे। हम लोग आकर जीप में बैठे। मैं ड्राईव करने लगा। मेरे दिमाग़ से कार के पहियों के निशानों वाली बात निकल ही नहीं रही थी। मैं सोचने लगा कि आख़िर ये निशान यहां कैसे आये। नरेश भी शायद यही बात सोच रहा था। उस ने कहा "यार मुझे तो क्रिश्चन की अक्ल पर तरस आ रहा है। पहियों के निशान बिल्कुल सीधे हैं। कार मोड़ने के लिये रिवर्स में चलकर गेट से निकलने के लिये निशान एक दूसरे से क्रास होने चाहिये और कुछ गोलाई में होने चाहिये। यह कार सीधे पेड़ तक आई है और वहीं से सीधे गेट की ओर लौट गई है। अर्थात मेन गेट की ओर। "

मैं ने कहा, "क्रिश्चन के कथनानुसार पैरों के निशान केवल सुनीता के हैं। परन्तु मेरे खयाल से वे निशान किसी और समय के हैं।"

नरेश ने कहा "सौ तो ठीक परन्तु तुम्हें कैसा लग रहा है?"

मैं ने कहा "यूं तो आत्महत्या के कई कारण हो सकते हैं, परन्तु परिस्थितियों के आधार पर कहा जा सकता है कि संभवतः आत्महत्या नहीं हुई है। तुम ने चप्पल देखी?"

" हाँ, उस प्रकार की एड़ी वाले निशान नहीं थे। इस के अलावा कपड़े भी कीमती पहने हुए थी जो सामान्यतः सैर सपाटे पर जाते समय पहनती होगी।"

"यह सही है। लाश का फ़ोटो ही इसका सबूत है। उस के मेक अप और बालों की स्टाईल आदि भी इस प्रकार है मानो बाहर घूमने जा रही हो। एक निराश व्यक्ति जो आत्महत्या करनेवाला है इस तरह सज संवर नहीं बैठता।"

हम लोग एक पंजाबी की होटल में आये। फ़्रेश होने के बाद हम रेस्टारन्ट की एक केबिन में जा बैठे। बेयर्र को डिनर लाने का आदेश देकर हम बातचीत करने में लग गये।

मैं ने कहा, " मुझे अब विश्वास होने लगा है कि यह हत्या हुई है और आत्महत्या

का दिखावा किया गया है । इस प्रकार हत्यारे ने अपना रास्ता साफ़ करना चाहा है, कम से कम कुछ दिनों के लिये जब तक सबूत मिट जाये।"

"बिल्कुल! देखो न यदि हम आज यहां नहीं पहुंचे होते तो क्रिश्चन आत्महत्या की रिपोर्ट तैयार कर देता और केस बंद कर देता । कुछ दिन के बाद पहियों और पैरों के निशान मिट जाते। फिर तो हमारे शक का कारण सिर्फ़ ये फोटो और उस के कपड़े ही रहते। संभवत फिर हमारा ध्यान उन की ओर न भी जाता और हम शक नहीं करते।"

"सब से बड़ा प्रमाण चप्पल है । पैरों के निशान एड़ी वाली चप्पल के नहीं हैं, परन्तु आखिर एक बाक़ी की चप्पल गई कहां?"

"वह एक चप्पल पहन कर तो नहीं निकली होगी। कौन ले गया, कहां रह गई?"

"अजीब बात है । देखो न कुछ दिनों से कोहरा अधिक है, इस लिये ज़मीन को सूखने का अवसर नहीं मिला है, अन्यथा पैरों के निशान गायब हो जाते।"

नरेश शांत था । शायद कुछ सोच रहा था । मैं ने कहा, "इस का मतलब यह हुआ कि हत्या कुछ इस प्रकार हुई है । हत्यारे को पता है कि सुनीता रोज़ तुलसी पर पानी चढ़ाती है और इस पेड़ के पास से निकलती है । स्वाभाविक है कि उस के पैरों के निशान पेड़ तक आयेंगे। इस के अलावा वह इस क्षेत्र का भी जानकार है । उसे मालूम है कि पीछे कोई बंगला नहीं है और आस पास वाले बंगले भी दूर दूर हैं । वह कार में आया है और किसी प्रकार बंगले में घुसा है । वह हाथों से या किसी कपड़े या रस्सी से गला दबाकर हत्या करने में सफल हुआ है । उसके बाद गले में रस्सी बांधकर लाश कार में रखता है । एक स्टूल भी लेता है । कार रिवर्स में लाकर पेड के पास खड़ी करता है । फिर स्टूल इस प्रकार रखकर गिराता है कि सब कुछ स्वाभाविक लगे। फिर कार से सीधे पेड़ पर चढ़ता है ताकि पैरोंके निशान ज़मीन पर न हों।"

"उस के नीचे उतरने के सिवाय कार से लाश कैसे सीधे पेड़ पर बांधी होगी?"

"हो सकता है कि लाश कार की डिक्की में रखी हो और स्टूल भी । कार रिवर्स में लाकर पेड़ के पास खड़ी कर दरवाजा खोल कर सीधे कार की छत पर चढ़ गया हो, ऐसा किया जा सकता है।"

"समय बहुत लग सकता है।"

" स्वाभाविक है । परन्तु वह पूरी योजना बनाकर आया होगा । बगंला भी तो देखो कैसे सुन्सान स्थान पर है । अंधेरा होने के पश्चात तो वहां कोई नहीं आता होगा । ये दोनों बंगले ख़ाली थे। इसलिये अन्दर की बिजली बंद थी । स्ट्रीट लाईट तो है ही नहीं ।"

" दूसरी बात यह कि बाहरी गेट से बंगले के दरवाज़े तक रास्ता सीमेंट से बना है । मतलब यदि कार बंगले के पास खड़ी की जाये और बाहर निकल कर बंगले में प्रविष्ट हुआ जाये, अथवा बंगले से निकल कर कार में बैठा जाए तो कहीं भी पैरों के निशान नहीं आयेंगे।"

"एक बात है कि क्रिश्चन बहुत उतावला है । वरना पेड़ से लाश उतारते समय लाश के पैरों और ज़मीन के बीच जो अंतर था, उसका स्टूल की उंचाई से नाप कर कुछ अंदाज़ा लगाया जा सकता था ।"

" बिल्कुल सही ! परन्तु उस समय शायद ही किसी का ध्यान इस ओर जाता । उस समय तो सब से पहले लाश को पेड़ से उतारकर नीचे रखने की ओर ध्यान जाता, बशर्ते कि पहले ही हत्या की रिपोर्ट की गई हो। इसके सिवाय यह कोई विशेष महत्वपूर्ण बात भी नहीं है, क्योंकि इस में से हत्यारे का कोई सुराग़ नहीं मिलता । बाक़ी रही बात यह कि आत्महत्या है या हत्या, इसकी पुष्टि करने के लिये और भी कई मुद्दे हैं ।"

खाना आ गया। खाना खाने के बाद मैं ने कहा, "अब हम लोगों का पहला काम होगा सामने वाले बंगले के मालिक से मिलना। एक तो वह पहला व्यक्ति है, जिस ने लाश देखी है। दूसरी बात यह है कि उस के पास कार है और सुनीता ने उसे बंगले में से कार निकालने की अनुमति दे रखी थी ।"

"अभी चलें ?"

" हां, अभी तो नौ बजे हैं। हमें जितना हो सके, यह कार्य जल्द पूरा करना चाहिये।"

"प्रश्न उठता है कि हत्या का कारण क्या हो सकता है ?"

"इस बात की ही तो तलाश करनी है ।"

"धन हो सकता है ?" नरेश ने कहा ।

"संभव है, परन्तु यदि यही कारण है तो हत्यारा भाटिया भी हो सकता है क्योंकि सुनीता को काफ़ी सम्पति पिता की ओर से प्राप्त हुई थी और सुनीता की मृत्यु के पश्चात् भाटिया ही उसका वारिस है। परन्तु भाटिया को धन की आवश्यकता है नहीं। उसके पास पैत्रिक सम्पत्ति बहुत है। उसके अलावा उस की प्रैक्टिस अच्छी चल रही है।"

नरेश शांत हो गया था। कुछ सोच रहा था।

मैं ने फिर कहा, "परन्तु एक बात याद रहे कि भाटिया शाम ५ बजे तक अपने कार्यालय पूना में था और हत्या शाम ६ से ८ के बीच हुई है। इतने समय में पूना से महाबलेश्वर पहुंच कर हत्या करना असम्भव है।"

नरेश होटल के मैनेजर से मिलकर रात रहने का प्रबंध कर आया। फिर हम बाहर निकल कर जीप में आकर बैठे। काफ़ी ठंड थी। चांदनी बिखरी थी। दूर ऊपरी पहाड़ों की छाया नीचे पड़ रही थी। छाया के बीच में चांदनी मानो चमक रही थी। जीप चलने से ठंडी हवा ज़ोर से भीतर घुस रही थी। हालांकि हम लोगों ने ओवरकोट पहन रखे थे, फिर भी ऐसा लग रहा था कि और गरम कपड़े होते तो अच्छा रहता। चारों ओर मकानों के दरवाज़े व खिड़कियां बन्द थे। कई मकानों की बिजली बन्द थी। केवल कुछ बंगलों के रोशन दानों से हल्की रोशनी नज़र आ रही थी।

हम लोग चिमनदास के बंगले के पास पहुंच गये। बंगले की बत्तियां अभी जल रही थी। जीप गेट के पास खड़ी कर हम लोग अहाते में घुसे। बरामदे के दरवाज़े के पास बेल लगी थी। मैं ने बेल का बटन दबाया तो एक अधेड़ आयु का व्यक्ति दरवाज़ा खोलकर सामने आ खड़ा हुआ। उस ने कहा, "आईये, आईये अन्दर आकर बैठिये।"

हम लोग उस के पीछे पीछे चलने लगे। बरामदा पार करने के बाद, हम लोग एक कमरे के सामने आकर खड़े हुए ही थे कि बत्ती जली और एक लड़की ने दरवाज़ा खोला। हम लोग अन्दर जाकर सोफ़ा पर बैठे।

उस व्यक्ति ने पूछा "बताइये श्रीमान, तबियत कैसी है?"

मैं सामान्य प्रश्नो के सामान्य प्रकार से उत्तर देने लगा। मुझे आश्चर्य लग रहा था कि यह व्यक्ति इतना अपनापन जताने के बावजूद भी यह क्यों नहीं पूछ रहा है कि हम लोग क्यों आए हैं। कहां से आए हैं।

पास में वही लड़की खड़ी थी। व्यक्ति ने उस से कहा " बेटी, मम्मी से कहो

चाय बनाये। मेहमान आये हैं।" मुझे उस के इस अपनेपन पर आश्चर्य हो रहा था। मैं समझ गया था कि यह चिमनदास ही है। आख़िर उस ने पूछ ही लिया "कहिये महाशय, क्या हालचाल है?"

"वैसे तो सब ठीक है, मैं आपकी कार की..."

उस ने बीच में ही काटते हुए कहा "यह तो बड़ी बात नहीं है, परन्तु मेरे पास ड्राइवर नहीं है, यदि आप स्वयं ड्राइव..."

मैं ने कहा "यह सब कुछ ...."

"यह सब कुछ केवल आप के लिये नहीं है। मैं तो कहता हूं कि किसी के काम आया जाय" कहता हुआ वह दूसरे कमरे में चला गया।

मैं ने नरेश की ओर देखा। वह मुस्करा रहा था। उस ने कहा, "यह तो हमें प्रास्पेक्ट (बीमा लेनेवाले) समझ रहा है।"

चिमनदास आया। उसके हाथ में एक प्लेट थी, जिस में बिस्कुट थे। नये सिरे से बातें शुरू करते हुए उस ने कहा, "आज सुबह से ही मूड ख़राब हो गया है। पड़ोस में एक औरत ने आत्महत्या की ; आप को तो मालूम होगा। सुबह को मैंने ही लाश देखी और पुलिस को फ़ोन किया। पुलिस के लफ़ड़ों में बहुत समय चला गया। सबेरे हमारे आफ़िस में विशेष व्याख्यान था। एक नई योजना चालू हुई है। मैं जाकर विवरण तो ले आया, परन्तु मन इतना डांवाडोल था कि पूरी तरह अभ्यास नहीं कर सका हूं। आपको आश्चर्य होगा कि इतने सारे लाभ थोड़े प्रीमियम में कम्पनी कैसे ऑफ़र कर सकती है।"

मैं ने कहा, "महाशय, आप हम से पहले ये तो पूछें कि हम क्यों आये हैं?"

"अरे, यह तो मैं भूल ही गया!"

"मैं हूं सी.आई.डी. ऑफ़िसर नावाणी और ये हैं पुलिस इंस्पेक्टर नरेश। हम लोग पूना से आये है।"

"ओह। आप लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुई।" कहते हुए वह हाथ मिलाने लगा, "बन्दे को चिमनदास कहते हैं।"

मैं ने पूछा, "आप कैसे कह रहे हैं कि श्रीमती भाटिया ने आत्महत्या की है?"

"इस की तो पुलिस पहले ही पुष्टि कर चुकी है। इस बात में दो राय नहीं हो सकती। एक तो लाश रस्सी से पेड़ पर लटकी हुई थी, जो मैंने स्वयं देखी। स्टूल पर चढ़ कर उस महिला ने स्वयं को लटकाया था। वह स्टूल भी पुलिस के हाथ लगा है।"

"आत्महत्या का कारण?" मैं ने पूछा

"कुछ भी।"

"मतलब?"

"कारण पुलिस को खोजना है।"

"आप क्या समझते हैं?"

"आप मुझ से यह पूछताछ क्यों कर रहे हैं?"

"सुनिये मिस्टर चिमनदास, हम लोग आपके पास इस उम्मीद से आये हैं कि आप एक अच्छे नागरिक की तरह हमें हर संभव सहायता करेंगे।"

"मैं इस बात से कहां इनकार कर रहा हूं?"

"तो फिर मेरे सवालों के पूरे पूरे उत्तर दीजिये।" मैं ने एक पुलिस वाले के स्वर में कहा।

"कहिये।" उस के शरीर से फुर्ती मानो बिदा हो गयी।

"सुना है कि आप के परिवार से श्रीमती भाटिया की मित्रता थी।"

"बेशक।"

"आप लोग उस के कम्पाऊंड से कार वग़ैरह निकालते रहते थे?"

"हाँ। केवल शहर की दक्षिण दिशा में आते जाते समय। उन्होंने मुझे यह अनुमति दे रखी थी।"

"और मैं आप की कार देखने आया हूं, अगर आप को ऐतराज न हो।"

"आप ख़ुशी से देख सकते हैं।"

'धन्यवाद' कहकर मैं उठने ही वाला था, कि उस ने हाथ से बिठाते हुए कहा,

"पहले बिस्कुट खाइये, चाय पीजिये, फिर बाहर चलते हैं ।"

मैं बैठ गया । हम लोगों ने चाय पी ली तो वह कप प्लेट लेकर अन्दर रखने गया । लौटकर उस ने उठने का इशारा किया । हम लोग उस के पीछे गये। बरामदा पार कर बाहर आये। चांदनी कुछ हद तक साफ़ हो गई थी, वह गैरेज का दरवाज़ा खोलने लगा तो मैं ने पूछा, "चिमनदासजी, आपके पास कार कौन सी है?"

"हिलमेन, १९४५ मोडल ।"

उस ने गैरेज की बिजली जलाकर कार की ओर इशारा करते हुए कहा, "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि इस आत्महत्या से मेरी कार का क्या सम्बंध ?"

मैं ने कोई जवाब नहीं दिया । मैं कार को बाहर से चारों ओर अच्छी तरह देखने लगा । मैं ने नरेश को इशारा किया कि वह उसे थोड़ा दूर ले जाय । नरेश ने बाहर गैरेज के दरवाज़े की ओर जाते हुए कहा, " चिमनदासजी आप का बंगला तो ,बहुत सुंदर है।"

चिमनदास ने उस के पीछे जाते हुए कहा "हाँ सर, हमारे छोटे परिवार के लिये काफ़ी है।"

वे थोड़ी दूर चले गये तो मेंने जेब से टेप निकाल कर कार के दोनों पहियों के बीच की दूरी नाप ली और एक टायर की चौड़ाई की भी । नाप को याद कर मैं बाहर निकल आया और कहा "मिस्टर चिमनदास, कार लॉक है। यदि खोलें तो.... ।"

"चाबियां ले आता हूं ।" वह तुरन्त ही चाबियां ले आया ।

मैं पहले डिकी खोल कर निरीक्षण करने लगा । चिमनदास ने चाबी लगा कर अगला दरवाज़ा खोला । अचानक गैरेज की बिजली बन्द हो गई ।

बाहर से नरेश बोला, "लगता है फ़्युज़ उड़ गया है । पूरे बंगले में अंधेरा है ।"

चिमनदास जल्दी जल्दी कार का दरवाज़ा खोल रहा था । नरेश ने टार्च की रोशनी सीधी चिमनदास के मुख पर डाली । चिमनदास, जो झुक रहा था, सीधा खड़ा हो गया और हाथ पुट्ठों से पोंछते हुए कहने लगा, "ओह ! आप के पास टार्च है ... नहीं तो मैं कार की बत्तियाँ जला रहा था।" उस के स्वर में एक प्रकार की कँपकँपी थी।

मैं ने टार्च नरेश से लेकर, कार के चप्पे चप्पे की जांच की, परन्तु मुझे जिस चीज़ की तलाश थी वह नहीं मिली, और न ही कोई ऐसा सुराग़। मैं ने बाहर आकर चिमनदास से पूछा, "आप श्रीमती भाटिया से आख़री बार कब मिले थे।"

"आज सुबह।"

मुझे कुछ ग़ुस्सा आ रहा था, परन्तु मैं ने उसे दबाकर स्वाभाविक लहज़े में कहा, "मेरा मतलब है कि जब वह जीवित थी।"

"ओह ! मैं समझता हूं कल लगभग ४ बजे शाम को हम लोग उस के कम्पाउंड से निकले थे। हम लोगों को छह बजे वाले शो में जाना था । परन्तु किसी कारणवश घर से जल्दी निकले थे। श्रीमती भाटिया भी चलने वाली थी, परन्तु जिस समय हम गुज़रे तो उस ने बुलाकर कहा कि वह शायद चल नहीं पायेगी। हम कारण पूछने हेतु नहीं रुके । क्या पता था कि यह हमारी अंतिम मुलाक़ात होगी।"

हम लोग चिमनदास का आभार मानकर बाहर आकर जीप में बैठे।

नरेश ने कहा, "कार में क्या देख रहे थे?"

मैं ने कहा, "यदि यह कार काम में लायी गई है तो हो सकता था कि, चप्पल का एक जूता इस में से मिल जाता, परन्तु अब तो पहले यह देखना है कि यह कार उपयोग में लाई गयी है या नहीं?"

नरेश ने जीप स्टार्ट कर घुमाई। मैं ने कहा, "चिमनदास का कहना है कि सुनीता का फ़िल्म देखने का कार्यक्रम था जो अचानक ४ बजे रद्द हुआ । यदि उसका आत्महत्या करने का विचार होता तो वह अवश्य उदास होती और फिर यह कार्यक्रम कैसे बन सकता था?"

"कार्यक्रम तो सुबह को ही बना हुआ लगता है, जो ४ बजे रद्द हुआ।" नरेश ने कहा,

"सवाल यह है कि उस ने कार्यक्रम अचानक रद्द क्यों किया? सज संवर कर बाहर जाने की तैयारी क्यों?"

"ये निशान चिमनदास की कार के हो सकते हैं?"

"मुझे शक है। मैं ने उस की कार के पहियों के बीच की दूरी और टायरों की

चौड़ाई की नाप ली है। वारदात वाले स्थान पर चलकर उस का मिलान करते हैं।"

"ठीक है।" नरेश ने कहा

हम लोग बंगले के पास आ पहुंचे। बंगले की चाबियां मैं ने क्रिश्चन से ले रखी थीं। जीप कम्पांऊड से निकाल कर बंगले के दरवाज़े के पास खड़ी की। जीप पक्के रास्ते से आई और वह रास्ता सीधे तौर पर बंगले के मुख्य द्वारा की सीढ़ी से जुड़ा था।

ताला खोलते हुए मैं ने कहा, "नरेश। एक तो चप्पल की तलाश करनी है। दूसरे, अन्दर हत्या के समय सामान इत्यादि में अवश्य उथल पुथल हुई होगी उसका परीक्षण करना है। इस के अलावा कुछ कागज़ पत्र यदि मिल पायें तो देखें कि इन पति पत्नी की अनबन किस सीमा तक थी।"

दरवाज़ा ड्राइंग रूम का था। सामने एक और दरवाज़ा था। बिजली जलाकर हम लोग मकान को देखने लगे। सामने वाला दरवाज़ा खोलने से निचली छत वाला संकरा सा बरामदा दिखा, जिसके एक ओर किचन और स्टोर रूम थे और दूसरी ओर कुछ दूरी पर बाथरूम और लैट्रिन थे। ड्राइंग रूम की दाहिनी ओर से एक सीढ़ी ऊपर के कारीडोर की ओर जा रही थी। नीचे कुछ न देखकर हम लोग ऊपर गये। कारीडोर में दो कमरों के दरवाज़े थे। पहले रूम का दरवाज़ा खोलकर हम लोग अंदर घुसे। दरवाज़ा खोलने के लिये हमें चाबी लगानी पड़ी। बत्ती जलाने से हमें ऐसा लगा कि यह कमरा विशेष किसी काम में नहीं लिया जाता होगा। फ़र्नीचर बिखरा पड़ा था और उस पर काफ़ी धूल थी। उस कमरे में दो दरवाज़े थे। एक बालकनी में खुल रहा था और दूसरा अटैच बाथरूम में। बालकनी काफ़ी चौड़ी थी, और लम्बाई में दो कमरों के बराबर। पीछे से किचन की छत से बालकनी में चढ़कर कमरों तक आ सकते थे। बाथरूम के सामने दूसरा दरवाज़ा था, जिसको खोलने के बाद हम, दूसरे कमरे में प्रविष्ट हो सके। एक बाथरूम दो कमरे से जुड़ा हुआ था। इस रूम में सामान अच्छी तरह सजा हुआ, ज्यों का त्यों रखा हुआ था। लग रहा था इस बेड रूम का उपयोग किया जाता होगा।

सारे बंगले में किसी भी स्थान पर कोई भी वस्तु बिखरी हुई या उथल पुथल की हुई नही दिख रही थी।

सामने मेज़ पर रखी पर्स को उठाकर, खोलते हुए नरेश ने कहा, "देखें इस में क्या है।" उस ने पर्स खोलकर मेज़ पर पल्टी की, कुछ सिक्के, सौ सवा सौ के नोट,

लिपिस्टिक, पाऊडर, कंघी इत्यादि थे। नरेश ने हरे रंग के दो कागज़ उठाकर कहा,

"ये सिनेमा के टिकट हैं। रीगल ट्रेवलिंग थिएटर, दूसरा शो दिनांक १५ नवम्बर।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि टिकट एडवांस में बुक हैं।"

"हाँ, लेकिन दो क्यों? दूसरा कौन? यदि चिमनदास के साथ जा रही थी तो टिकट उस ने अलग अपने पास क्यों रखे?"

"अजीब बात है, परन्तु ऐसा हो सकता है कि घर से निकलने का समय अलग अलग होने के कारण एक दूसरे के लिये थिएटर में प्रतीक्षा न करनी पड़े इसके लिये ये टिकट अलग रखे गये हैं। परन्तु दूसरा कौन?"

"और प्रश्न यह है कि ये टिकट कब लिये गये हैं।"

"यह तो थिएटर वालों से ही मालूम हो सकता है।"

"यह जानना बहुत ही आवश्यक है। फिर चलें अभी?"

मैं ने थोड़ा रुक कर कहा, "चलते हैं, जल्दी क्या है। पहले यहां का तो काम पूरा करें... सुनो, सामने स्टील की अलमारी या मेज़ के खाने खोलने से पहले आवश्यक है कि हम लोग उसके फ़िंगर प्रिन्ट लें।"

"इसके लिये तो पूना से फ़िंगर प्रिन्ट एक्सपर्ट को बुलाना पड़ेगा।"

"तो अब केवल आसपास ही जांच की जाये, हो सकता है शायद चप्पल मिल जाये।"

हम लोगों ने दोनों कमरों, ड्राइंग रूम इत्यादि की अच्छी तरह जांच की परन्तु चप्पल नहीं मिली। हम लोग घुसे थे पहले रूम के बाथरूम से, परन्तु बाहर निकले फिर कमरे का दूसरा दरवाज़ा खोलकर। दरवाज़ा कोरीडोर में खुला, बाहर से बन्द करते समय मैं ने देखा कि उस के लॉक में एक चाबियों का गुच्छा लटक रहा था। मैं ने गुच्छा उठाकर देखा। चार चाबियां थीं। एक इस दरवाज़े की और तीन अन्य। एक 'एम्' मार्कवाला गोल पुतला पतली ज़ंजीर से गुच्छे में लगा हुआ था।

मैं ने कहा, "नरेश, ऐसा एक दूसरा गुच्छा भी तो अंदर टेबल पर पड़ा था?"

नरेश ने सिर हिलाकर 'हाँ' की। मैं एकदम अंदर गया और गुच्छा ले लाया।

उसमें भी वही 'एस्' मार्कवाला पुतला लगा था। उसमें तीन चाबियां थीं। दोनों गुच्छों की चाबियां अलग अलग थीं। केवल इस बेडरूम की चाबियां समान थीं। मैं सोचने लगा, सुनिता को दो गुच्छों की क्या आवश्यकता थी? नरेश का कहना था कि एक गुच्छे में शायद वज़न बढ़ने के कारण दो गुच्छे रखे या बनाए होंगे।

मैं ने कहा, "ऐसा नहीं है। क्रिश्चन ने हमें बंगले की दो चाबियां दी हैं। एक बाहरी ड्राइंग रूम वाले दरवाज़े की और दूसरी पासवाले कमरे की। उस ने संभवतः दोनों चाबियां अंदरवाले गुच्छे से निकाली हैं। क्योंकि ड्राइंग रूम वाली चाबी अंदरवाले गुच्छे में नही है, परन्तु बाहर वाले गुच्छे में है।" मैं ने क्रिश्चन वाली चाबियों से चाबियां मिलाते हुए फिर कहा, "और बाहर वाले गुच्छे में पास वाले कमरे की चाबी नहीं है तो अंदर वाले गुच्छे में भी नहीं है। इस का अर्थ यह हुआ कि यह बाहरी गुच्छा उस व्यक्ति के हाथ में है, जिसे केवल ड्राइंग रूम से प्रवेश होकर बेडरूम में जाने की अनुमति प्राप्त है। और स्वाभाविक ही है क्योंकि पास वाला कमरा उपयोग में नही लिया जा रहा है। क्रिश्चन ने अंदर वाले गुच्छे में से केवल ड्राइंग रूम और पासवाले कमरे की चाबियां ही निकाली हैं। वैसे भी बेडरूम में आने के लिये पास वाले कमरे की चाबी ही काफ़ी है।"

"दूसरे किसी व्यक्ति का प्रश्न ही कहां उठता है?"

"क्योंकि मालकिन कभी भी इस प्रकार चाबियां दरवाज़े में नहीं छोड़ सकती और मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इस गुच्छे में जो अन्य चाबियां हैं, वे घर के किसी ताले की नहीं हैं।"

"यदि यह बात है तो फिर अवश्य कोई दूसरा व्यक्ति आया है।"

हम लोगों ने निरीक्षण किया। दूसरी कोई ऐसी अलमारी अथवा ताला नहीं मिला, जिसे बाहर वाली कोई चाबी लग सके। मैं ने सफाई से अंदर वाले गुच्छे में लगी एक बड़ी चाबी बेड रूम में रखी अलमारी के लॉक में घुमाई। लॉक खुल गया, परन्तु मैं ने हैंडल घुमाकर अलमारी का दरवाज़ा नहीं खोला, इस विचार से कि कहीं अंगुलियों के निशान नष्ट न हो जायें। वैसी चाबी बाहर वाले गुच्छे में तो थी नहीं।

नरेश ने कहा, "बाहर वाला व्यक्ति कौन हो सकता है?"

"हत्यारा।"

"कैसे कहा जाय? ऐसा क्यों न कहा जाय कि ये चाबियां किसी ने बाद में लगायी हैं।

मेरा मतलब है क्रिश्चन की तहक़ीक़ात के बाद। अन्यथा क्रिश्चन को यह गुच्छा हाथ लगता तो वह और नहीं तो कम से कम गुच्छा निकाल कर टेबल पर अथवा किसी और स्थान पर रख देता।"

"ऐसा नहीं है। तहक़ीक़ात के बाद बंगले पर पूर्ण निगरानी रही है। सिवाय थोड़े समय के जो हम लोगों के अभी आने और पहरेदारों के जाने के बीच बीता है। चाबियों वाला व्यक्ति बंगले के भीतर आज आया है या कल परन्तु यह हत्यारा अथवा हत्यारे के साथी के अलावा और कोई नहीं हो सकता । दूसरे किसी व्यक्ति को इस प्रकार आने की आवश्यकता ही क्या ?"

मैं ने दोनों गुच्छे जेब में डाले। बंगले के बाहरी अहाते वाली सभी बत्तियां जलाकर हम पीछे की ओर उसी पेड़ के पास आये ।

हम लोगों ने पहियों की चौड़ाई और दो पहियों के बीच की दूरी की नाप ली । परन्तु यह नाप चिमनदास की कार की ली गई नाप से अलग थी। पहियों के निशान भी अलग थे। मैंने पहियों के निशानों का पैटर्न याद कर रखा था।

नरेश ने कहा, "यह किसी दूसरे मेक की कार है।"

" यह तो स्पष्ट है। आओ, अपनी जीप से मिलान कर देखें।"

हम लोग बाहर जीप के पास आये । परन्तु उसकी नाप भी अलग थी ।

मैं ने कहा, "नरेश, ये पूरे नाप नोट कर लो । पूना चलकर वेस्टर्न इण्डिया ऑटोमोबाईल एसोसिएशन से पुष्टि कर लाना कि किस मेक की कार और टायरों के निशान हो सकते हैं। वहां प्राय हर प्रकार के स्पेसीफ़िकेशन तुम्हे मिल जाएंगे।"

नरेश ने नाप नोट कर ली।

मैं ने फिर कहा," एक बार बंगले का चक्कर लगाकर आता हूं।" बंगले की दाहिनी ओर कोई दरवाज़ा नहीं था। बिल्कुल बाईं ओर की तरह था। अहाते की एक गेट बंगले की बाईं ओर कोने में थी। दाहिनी ओर दो खिड़कियां थीं और बांउड्री की दीवार लगभग 15 फ़ीट दूर थी। बंगले की दीवार से आठ फीट की दूरी पर बाईं ओर बाऊंड्री की दीवार थी। इस ओर कुछ फूलों के गमले थे। उस स्थान पर पैरों के निशान देखकर मेरी रुचि बढ़ी। मैं ने नरेश को बुलाया। टार्च जलाकर हम पैरों के निशान देखने लगे।

मैं ने कहा, " किसी को इस ओर आने की क्यों आवश्यकता हुई?"

नरेश ने कहा, "सुबह को तहक़ीक़ात के समय संभव है कि कोई इस ओर आया हो।"

" बात शक वाली अवश्य है। पुलिस का जूता तो नहीं है। पुलिस के अलावा अन्य व्यक्ति केवल भाटिया सुबह को हाज़िर था।"

" मुझे लगता है पहली बार ये निशान हम लोगों को नहीं दिखे।"

" कह नहीं सकते ।"

" हम लोगों के पास कैमेरा आदि भी तो नहीं है ताकि फ़ोटो ले सकें।"

आगे जाकर हम ने देखा कि वे निशान बंगले के पीछे से प्रारम्भ हो रहे थे।

"लगता है किचन वाली छत से कोई कूद कर आया है। "नरेश ने कहा।

मैं ने कहा, "तुम ऐसा करो, जूते के नीशान का ख़ाका तैयार करो और टेप से नाप लेकर नोट करो । तब कहीं अनुमान लगाया जा सकता है।"

"ठीक है।"

नरेश ने निशानों का पूरा ख़ाका तैयार किया। पूरे बंगले में अन्य कोई महत्वपूर्ण बात दिख नहीं रही थी। उस समय रात के साढ़े दस बज रहे थे।

मैं ने कहा, "चलो, रीगल सिनेमा चलें।ऑफ़िस में अभी तक कोई तो बैठा होगा। अंतिम शो की इन्टरवेल तक अधिकतर सभी लोग कार्यालय में मौजूद होते हैं।"

हम ने बत्तियां बुझा कर बंगले को लॉक किया, और जीप में आकर बैठे। चारों ओर शान्ति छाई हुई थी। कुछ ही मिनटों में हम रीगल सिनेमा पहुंच गये। हम मैनेजर के कमरे की ओर बढ़े। वह उस समय पैसे गिन रहा था। हमें देख कहने लगा, "माफ कीजिये, शो तो काफ़ी पहले शुरु हो गया है, और हम इतनी देर बाद टिकट नहीं देते।"

" हम लोगों को पिक्चर नहीं देखनी है। आप से बात करनी है।"

" आप का परिचय ?"

" मैं हूं पुलिस इन्सपेक्टर नावाणी और ये हैं इन्सपेक्टर नरेश।" वह चौंक गया। उस ने उठ कर हाथ मिलाया और कहा, " बैठिये, कहिये मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं।" हम लोग कुर्सियों पर बैठ गये। उस ने कैश और काग़ज़ उठाकर टेबल के ख़ाने में फेंक दिये। "

मैं ने कहा," आप बुकिंग कितने दिन पहले करते हैं ?

"सर, यहां कहां एडवांस बुकिंग का सिस्टम है ? केवल सुबह 9 बजे से 12 बजे के बीच उसी दिन की एडवांस बुकिंग करते हैं।"

नरेश ने जेब से टिकट निकालते हुए कहा, " इसका मतलब आप ने ये टिकट कल सुबह ही इशू किये हैं।"

उस ने टिकट हाथ में लेकर देखा और कहा, " हाँ, ये टिकट कल ही इशू किये गये हैं और दूसरे शो के हैं।"

मैं ने पूछा, " दूसरे शो का क्या टाईम है ?"

" छह बजे।"

" भला आप यह बता सकेंगे कि ये टिकट कल एडवांस बुकिंग के समय लिये गये हैं या शाम को शो के समय?"

" हाँ, ये तो मैं आप को बता सकता हूं।"

" कैसे ?"

" सुबह वाले क्लर्क की डयुटी शाम को चार बजे समाप्त होती है और वह जाते समय चार्ज मुझे सोंपता है। वह जो भी टिकट बेचता है, स्वाभाविक उन्हीं के पैसे देता है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रतिदिन उस की अकाऊंटशीट में टिकटों का ओपनिंग और क्लोज़िंग नम्बर रहता है। उस ने कल वाली शीट में यदि ये दो नम्बर अकाउंट किये होंगे तो ये टिकट एडवांस बुकिंग कहलाएंगे।"

उस ने टेबल का ड्रावर खोलकर एक फ़ाईल निकाली। फ़ाईल में नम्बरों की जांच कर कहा.

" ये दोनों टिकट कल 12 बजे से पूर्व इशू किये गये हैं।"

नरेश ने कहा - "आप के क्लार्क की डयुटी तो 4 बजे तक है। हो सकता है कि टिकट 12 से 4 के बीच में इशु किये गए हों ।"

"12 बजे एडवांस बुकिंग बन्द की जाती है। फिर शो चालू होने से एक घंटा पहले बुकिंग चालू होती है। इस हिसाब से 6 बजे वाले शो के टिकट केवल 12 बजे तक इशू किये जाते हैं। और उस के बाद शाम को पांच बजे से मैं इशू करता हूं ।"

" आप का ट्रेवलिंग थिएटर तो यहां केवल सीज़न में रहना चाहिये न । इस समय धंधा कैसा चल रहा है ?"

" धंधा तो कुछ खास नहीं है परन्तु दिवाली के सीज़न में आये थे। अभी तक यहीं पड़े हैं जब तक किसी दूसरे स्थान से बुलावा आये।"

मैनेजर से बिदा लेकर हम लोग बाहर निकले। मैं ने कहा, "अब क्रिश्चन को ख़बर होनी चाहिये

कि यह आत्महत्या नहीं, अलबत्ता हत्या का प्रकरण है।"

हम लोग पूरा केस पुनः दुहराने लगे। एक तो सुनीता के पैरों के निशान किसी अन्य अवसर के हैं। स्पष्टय्ता तुलसी पूजा के समय के, वरना एड़ी वाले चप्पल के होते । कपड़े और शरीर का तौर-तरीका किसी उदास व्यक्ति के नहीं हैं। वह तो खुशी से सिनेमा जोने की तैयारी कर चुकी थी। टायर के निशानों का भी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं हैं। केवल स्टूल तक आकर रुक गये और वहीं से क्यों सीधे वापिस गये? अवश्य कोई चालबाज़ी की गयी है।

"मैं समझता हूं कि क्रिश्चन ने प्रेस विज्ञाप्ति जारी कर दी होगी कि यह आत्महत्या है।"

नरेश ने कहा। "भले ही यह ग़लत ख़बर फैले। इस लिये तो मैं ने जान बूझ कर क्रिश्चन को कुछ बताना नहीं चाहा।"

उस समय रात के 12 बजने वाले थे।

नरेश ने कहा, "इस समय क्रिश्चन के घर चलना ठीक नहीं होगा। चलो होटल में चलकर आराम करते हैं।"

मैं ने कहा, "चलो यार ठीक है, एसी क्या जल्दी है? सुबह उसे बतायेंगे।"

ठंड भी ग़ज़ब की पड़ रही थीं।

■

३. यह क्या ?

दूसरे दिन सुबह को हम लोग क्रिश्चन के कार्यालय में पहुंचे। उस ने हाल - चाल पूछने के बाद कहा, "कहिये, रात को आप कहां थे? मेरे पास क्यों नहीं आये?"

"आने का विचार कर रहे थे, परन्तु काफ़ी देर हो गई इसलिये होटल में सो गये।"

"क्या हाल चाल है? आपने तहक़ीक़ात तो पूरी कर ली होगी?"

मैं ने कहा, "हां, और हमारे विचार से यह एक जानबूझ कर, सोच समझ कर हत्या की गई है।" क्रिश्चन का मुंह खुला का खुला रह गया, उस नेकहा, "यह कैसे?"

"तुम ने जिस समय लाश देखी, उस समय ज़मीन तो बिल्कुल साफ़ होगी और निशान वग़ेरह भी ताज़ा होंगे, परन्तु तुम ने कई चीजें न देखी न जांची।"

"यह कैसे हो सकता है? लाश के नीचे स्टूल पड़ा था और स्पष्ट था कि स्टूल पर चढ़ कर, रस्सी गले में डालकर, उसे पैर से गिराया गया है ताकि रस्सी का खिंचाव बढ़े। इस बात की पुष्टि इस से भी होती है कि स्टूल वाले स्थान पर चार पायों के निशान थे, जो लाश के बिल्कुल नीचे थे। टंगी हुई लाश तो मैंने ही देखी ना। स्टूल भी मुझे स्वाभाविक रूप से उसी स्थान पर गिरा हुआ मिला। बड़ी बात कि स्टूल तक मृतका के पैरों के निशान भी स्पष्ट दिख रहे थे।"

"अब मेरी भी सुनो ताकि तुम्हें मालूम हो कि तुम्हें क्या देखना चाहिये था, जो तुम ने नहीं देखा।"

"कहिये।"

"यह बात सही है कि स्टूल लाश के नीचे था और स्टूल तक मृतका के पैरों के निशान थे। सवाल है कि क्या वे सचमुच उस के पैरों के निशान थे?"

"हाँ, क्योंकि निशान छोटे पैरों के थे, जो केवल किसी महिला के हो सकते हैं।"

"मान लीजिए कि किसी दूसरी महिला ने इस कुकृत्य मे भाग लिया हो तो?"

क्रिश्चन चौंक गया "परन्तु यह कैसे हो सकता है? मृतका के पैरों की नाप भी लगभग वही थी।"

"तुम ने जो पैरों के निशान देखे, वे बिल्कुल सीधे थे और पूरे पैरों के थे।"

" बिल्कुल।"

"चप्पल जो वारदात वाले स्थान से मिली है उसकी एड़ी पतली है और स्वभाविक है कि चलते समय एड़ी और अग्रभाग के निशान ज़मीन पर होने चाहिये "

क्रिश्चन कोई उत्तर न दे पाया। मैं ने फिर कहा, "इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वे पैरों के निशान मृतका के नहीं हैं। हालांकि इस बात में तुम ग़लत नहीं हो। पैरों के निशान श्रीमती भाटिया के ही हैं, परन्तु वे किसी दूसरे समय के हैं। पेड़ से थोड़ी दूर जाओगे तो तुम्हें मालूम होगा कि पैरों के निशान और आगे जाकर तुलसी वाले चबूतरे तक खत्म होते हैं। बीच में वे निशान पेड़ के चारों ओर दूब होने के कारण कट जाते हैं।"

"आप के अनुसार ये पैरों के निशान आत्महत्या या हत्या के समय के नहीं हैं और फिर आत्महत्या को स्वभाविक बनाने कि लिये स्टूल का उपयोग किया गया है।"

"बिल्कुल ठीक।" मैं ने कहा।

" तो फिर उस आदमी के पैरों के निशान क्यों नहीं दिखे जिस ने लाश पेड़ पर टांगी थी ? मैं ने तो केवल श्रीमती भाटिया के पैरों के निशान देखे ! आप को शायद हम लोगों में से किसी के निशान से ग़लतफ़हमी हुई है।"

"तुमने मोटर के टायरों के निशान तो देखे थे।"

" हाँ "

"और तुम ने उसको इसलिये नज़रअंदाज किया, क्योंकि पड़ोसी की कार अधिकतर अहाते में से निकलती रहती है।"

"इस बात का एक कारण तो यही है और दूसरा कारण है कि मैं ने आत्महत्या समझकर तहक़ीक़ात की थी।"

" यही तो बात है, तुम्हारे पास पूर्वाग्रह था और तुम ने उसी हिसाब से काम किया है। रस्सी में लटकी हुई लाश को देखर तुमने निर्णय कर लिया कि यह आत्महत्या है। हम लोग सब कुछ देखने के पश्चात् इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि किसी व्यक्ति ने पहले घर में हत्या की है। फिर कार दरवाज़े के आगे खड़ी कर लाश उसमें रखी है फिर पीछे आकर लाश को पेड़ पर लटकाया है। कार में होने के कारण उसे नीचे उतरने की

आवश्यकता नहीं पड़ी है। सीधे ही कार की छत पर चढ़कर पेड़ की डाल में रस्सी बांध कर लाश लटका दी है। फिर नीचे स्टूल रख दिया है ताकि किसी को शक न हो। ''

''यह बात संभव हो सकती है, विशेषकर तब जब बंगला बिल्कुल छोर पर है और चारों ओर का क्षेत्र सुनसान है।

''तुम बंगले पर चौकसी कड़ी कर दो अथवा बंगला बिल्कुल सील कर दो। अहाते के गेटों को भी लॉक करवा दो। कुछ फ़िंगर प्रिन्ट लेने हैं। मैं एक्सपर्ट को एक दो दिन में पूना से ले आऊंगा। तब तक कुछ भी ऊपर नीचे नहीं होना चाहिए।''

''ठीक है।''

''भाटिया को भी अंदर जाने न दिया जाय।'' क्रिश्चन ने सिर हिलाकर 'हां' की।

मैं ने कहा, ''एक बात और, हम लोगों को ऊपर बेडरूम से एक चाबियों का गुच्छा मिला है।''

''हाँ, वह तो मैंने भी देखा था। उसमें से ही तो दो चाबियां, जो आप लोगों के पास हैं, निकाली थीं।''

''एक दूसरा गुच्छा, उसी प्रकार का बेडरूम के दरवाज़े वाले लॉक में से मिला है।''

''दरवाज़े वाले लॉक में से?''

''हाँ, स्पष्ट है कि किसी ने कमरा खोलने का प्रयत्न किया है, परन्तु किसी को आता देख कर भाग गया है, और जल्दी में चाबियां भी नहीं निकाल सका है।''

''कैसे कहा जाय?'' क्रिश्चन ने अनमने स्वर में उत्तर दिया।

मैं ने कहा, ''कल जब तुम ने निरीक्षण किया तब बेडरूम का दरवाज़ा खोला था या नहीं?''

क्रिश्चन ने कुछ याद करते हुए कहा, '' नहीं, हम उस दूसरे कमरे में पहले घुसे थे। वहां से बाथरूम से होते हुए बेडरूम में घुसे थे। और वहीं से बाहर निकले।''

'' तुम्हे पक्का याद नहीं है कि उस समय चाबियाँ दरवाज़े में लगी थीं या नहीं।''

'' बराबर।''

" देखो तुम ने कितनी सतही जांच की है ?"

कुछ पल शान्त रहने के बाद क्रिश्चन ने कहा , "यह टाईम्स पढ़िये। मैं ने पहले ही आत्महत्या का बयान दे दिया था। तब तक मैं चाय नाश्ते का प्रबंध करता हूं।" इतना कहकर वह बाहर चला गया।

नरेश ने कहा, "यह बात सही है कि चाबियां कोई जल्दी में घबराहट के कारण छोड़कर भाग गया है और वह घबराहट भी किसी के आने से हो सकती है।"

"सही है। " मैं ने समाचार पत्र में समाचार ढूंढते हुअे कहा, "लेकिन वह किसके पहुँचने पर घबराकर भागा होगा ?"

"हत्या वाली रात को दूसरा व्यक्ति कौन हो सकता है , जो बंगले पर आया और जिस के भय से हत्यारा भाग गया। मैं तो समझता हूं , वह कल रात को पहरेदारों के जाने के बाद गया है और हम लोगों की जीप की आवाज़ सुन घबराकर भाग गया है।मैं तो यूं भी समझता हूं कि पीछे वे पैरों के निशान भी उसी के हैं। उसी ने हमारी जीप की आवाज सुनी और पीछे भाग कर जा छिपा। "

मैं ने कहा, "हो सकता है परन्तु वह भागा है तो केवल पिछली गेट से, क्योंकि दूसरे किसी स्थान पर ऐसे पैरों के निशान नहीं हैं।"

"संभव है।"

"परन्तु एक बात है , दोनों एक ही प्रकार के गुच्छे क्यों ?"

"हूँ..........।" कहकर नरेश सोच में डूब गया।

'टाईम्स' में मिस्टर मिसेज़ भाटिया के फ़ोटो छपे थे। आत्महत्या का समाचार नीचे छपा था। मिस्टर भाटिया का फ़ोटो संभवत, इसलिये छापा गया था क्योंकि वे पूना के एक प्रसिध्द वरिष्ठ वकील थे। अन्यथा सामान्य रूप से ऐसे समाचारों में मृतका के फ़ोटो के साथ उस के पति का फ़ोटो नहीं होता है।

हम लोग नाश्ता करने के बाद क्रिश्चन से बिदा लेने लगे। मैं ने कहा, "इस केस में कोई डेवलपमेंट हो तो मुझे फ़ोन करना।"

"ठीक है। आप लोग अभी पूना जा रहे हैं ?"

" बस घंटे भर में होटल में नहा धोकर निकलेंगे।"

नरेश ने कहा , "क्रिश्चन , हमारी जीप का फ़्यूएल आदि चेक करवाकर रखो। तब

तक हम तुम्हारी मोटर साईकल ले जातेहैं।"

हम लोग मोटर साईकल पर होटल पंहुचे। नहा धोकर खाना खाया और वापस थाने पहुंचे। उस समय क्रिश्चन दो लोगों से बातें करने में व्यस्त था। हमें देखकर उठ खड़ा हुआ और उन व्यक्तियों का परिचय देने लगा। एक व्यक्ति वरिष्ठ उम्र के थे, उसकी ओर इशारा करते हुए उस ने कहा, "ये हैं मिस्टर रसिकलाल मोदी, बांम्बे के सी-फेस होटल के मैनेजर और ये हैं दिनेश शाह, उसी होटल के स्वागत अधिकारी (रिसीप शन्सिट)।" फिर वह हमारा परिचय उन्हें देने लगा।

क्रिश्चन ने कहा, "इन को आत्महत्या वाले केस के बारे में कुछ कहना है।"

स्वाभाविक रूप से मेरी उन में रुचि बढ़ गई। मैं ने पास में रखी कुर्सी पर बैठते हुए वरिष्ठ पुरुष से कहा, "आपका आत्महत्या वाले केस में क्या कहना है?"

"आत्महत्या से हमारा कोई सम्बंध नहीं है। हमें केवल यह कहना है कि जिस व्यक्ति का उस महिला के साथ फ़ोटो छपा है, वह उस का पति है, इस का आप लोगों को यकीन है?"

"यह आप हम लोगों से क्यों पूछ रहे हो? उस का उत्तर तो प्रेस वाले दे सकते हैं।"

"जहां तक हम लोगों को मालूम है, वह उस का पति नहीं है"

"तुम लोग उसे कैसे जानते हो?"

"यह महिला अपने पति के साथ हमारे होटल में रह चुकी है।"

"आपकी होटल में कई लोग आते होंगे। क्या आप प्रत्येक का समाचार पत्र में फोटो देखकर कह सकेंगे कि वह आप के होटल में रह चुका है या नहीं?"

"यह बात नहीं है। जिस स्थिति में यह जोड़ा हमारे होटल से चला गया, वह याद रहने योग्य घटना थी। वैसे तो हमारा इस केस से किसी भी प्रकार का लेना देना नहीं है, परन्तु आप को तो मालूम है कि लोग आत्महत्या और हत्या जैसे समाचार चाव से पढ़ते हैं, मैं ने भी फ़ोटो देखकर पूरा समाचार पढ़ा, जो वास्तव में शीर्षक के कारण ही था। मुझे लग रहा था कि इस महिला को मैं ने कहीं देखा है। फिर दिनेश ने याद दिलाई कि यह वही महिला है।"

"वही महिला क्या?"

"वही महिला जो आज से लगभग दस माह पूर्व अपने पति के साथ हमारे होटल में रह चुकी है।"

मुझे उस की बातचीत पर आश्चर्य लग रहा था। मैं ने कहा "परन्तु वह कौन सी बात है जिस के कारण आप लोग इसे पहचान सके।"

"यह एक अजीब कहानी है।"

"परन्तु कौन सी ?" मैं ने कुछ बेसब्री से पूछा।

"एक रात लगभग ८ बजे वे हमारी होटल में आये। इस महिला के कंधे में एक प्लास्टिक का थैला था और पुरुष के हाथ में चमड़ेका बैग ....बेहतर होगा कि दिनेश आप को सुनाये।"

दिनेश ने सिर ऊपर करते हुए कहा, "उस समय काऊंटर पर मेरी डयुटी थी। यह महिला आगे बढ़ कर मेरे पास आई और कहा कि 'एक डबल बेड वाला कमरा चाहिए'। मैं ने पूछा, 'कितने दिनों के लिये?' उस ने कहा 'तीन दिनों के लिये।' मैं ने उसे एक रूम आबंटित किया। रजिस्टर आदि में इसी महिला ने ही लिखा और हस्ताक्षर किये। वह आदमी एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह उस के इशारों पर चल रहा था। वे दोनों घंटेभर उस रूम में थे। फिर बाहर आये। उस महिला ने मुझ से आकर कहा 'हम ज़रा बाहर जा रहे हैं और घंटे दो घंटे में लौट आयेंगे।' हम लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही जब हम ने देखा कि सुबह तक वे नहीं लौटे। हमें शक हो गया। कमरे में गये तो उस का सामान पड़ा था, लग रहा था कि बिस्तर का उपयोग किया गया है। हम ने बैग और थैला खोला तो उनमें रद्दी भरी हुई मिली।"

"आप का मतलब बैग और थैला दोनों ख़ाली थे, रद्दी कागज़ों के अलावा उनमें और कुछ भी नहीं था ?"

"बिल्कुल।"

"आप लोगों ने पुलिस में रिपोर्ट की ?"

" नहीं, रिपोर्ट करने का कोई अर्थ ही नहीं था।"

" क्यों ?"

" क्योंकि हमें विश्वास था कि उन्होंने अपने नाम की सही जानकारी दर्ज नहीं की

होगी।"

"कैसे कह रहे हो?"

"वे जिस मतलब से होटल में प्रविष्ट हुए थे, उस मतलब से पति पत्नी नहीं आते हैं।"

"उसका मतलब वह महिला का पति नहीं था ?"

"वह तो दिख रहा है"

"फिर आप लोग क्यों शक कर रहे हो कि जिस व्यक्ति का फ़ोटो समाचार पत्र में है, वह उस का पति नहीं है।"

" हम लोगों को यूं ही उत्सुकता हुई कि देखें सचमुच यह भी इस महिला का पति है या केवल पहले पुरुष की भांति ...." इतना कह कर वह चुप हो गया।

मैं ने कहा, "साफ़ साफ़ कहो कि आख़िर आप को कहना क्या है ?"

"आप को सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ कि उन्हों ने बिस्तर का उपयोग किया था ?"

"कैसे कह रहे हो?"

"हम लोगों को ब्रा का एक हुक मिला था।"

"ऐसा क्यों न कहा जाय कि लड़की ने कपड़े बदले थे?"

"नहीं। क्योंकि उन के पास दूसरे कपड़े थें ही नहीं। होटल से निकलते समय दोनों ख़ाली हाथ थे और हमें कमरे में से कोई कपड़ा नहीं मिला था।"

" बिस्तर का उपयोग तो स्वाभाविक है। जब आप अकेले कमरे में जायेंगे ओर कोई काम काज न हो तो स्वाभाविक है कि लेटना पसन्द करेंगे......" मैं ने बहस करते हुए कहा। उन के बात करने के ढंग और सुनीता की उड़ायी जा रही खिल्ली पर मुझे गुस्सा आ रहा था।

दिनेश ने कहा, " वह तो आप जानें।"

मैं ने कहा, "अब देखिये। एक ओर आप कह रहे हैं कि यह फ़ोटो उस के पति का नहीं है, और दूसरी ओर आपका कहना है कि इस प्रकार होटल मे पति पत्नी नहीं आते। क्या इस प्रकार आप अपनी ही बात को नहीं काट रहे हैं?"

" बिल्कुल नहीं, पहली बात एक वास्तविकता के रूप में मेरे पास आई, जो बात मैं ने स्वयं इस महिला के मुख से सुनी थी, कि 'यह व्यक्ति मेरा पति है।' दूसरी बात

में मैं अपना निजी शक प्रकट कर रहा हूँ और आप से पूछ रहा हूं कि यह व्यक्ति जिस का समाचार पत्र में फ़ोटो छपा है, क्या सचमुच उस का पति है या नहीं ?"

"क्या आप यह नहीं समझ रहे हैं कि आप को इस संबंध में पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिये थी ?"

"यह सही है, परन्तु यह व्यवहारिक बात नहीं है , क्योंकि इस प्रकार के छोटे बड़े लफ़ड़े होटलों में होते रहते हैं। हमारा अपना तो इस लफ़ड़े में कोई हाथ नहीं था। हम लोगों ने एडवांस राशि न लेकर भूल की थी, परन्तु थैले और बेग की कीमत से एक दिन के किराये में से कुछ तो वसूली हो गई थी। दोनों ही बिल्कुल नये थे।"

"क्या आप समझते है कि खास पूना से ये लोग केवल इसी काम से बाम्बे आये होंगे, केवल घंटे भर के लिये?"

"हम लोगों को उस समय पता नहीं था कि लड़की पूना की है।"

"अब तो मालूम हो गया न ?"

"हां"

"फिर क्या समझ रहे हो?"

"मेरे विचार में यह कोई खास महत्वपूर्ण बात नहीं है कि मैं क्या समझता हूं , जहाँ तक आप के केस का संबंध है।"

"वे दोनों होटल में कैसे आये थे।"

" याने?"

"वे टैक्सी में आये थे या कार में ? या बिल्कुल ही पैदल आये थे?"

"उन के जाने के बाद होटल के चौकीदारों ने बताया कि वे दोनों एक स्टेशन वेगन में आये थे। नम्बर आदि नोट करने की तो उस समय कोई आवश्यकता ही नहीं थी।"

"इस समय आप थाने कैसेआये?"

" हम लोग यहां वैसे ही घूमने के लिये निकले थे। कल शाम को आए हैं। सुबह समाचार पत्र पढ़ने से मालूम हुआ कि इस महिला ने आत्महत्या की है। गड़बड़ है। इसलिये हम ने पुलिस को बताना अपना कर्तव्य समझा।"

"धन्यवाद। आप ने कष्ट करके हमें इस बात की अच्छी जानकारी दी है। आप केस के एक पहलू को प्रकाश में लाये हैं।" यह सब कुछ क्रिश्चन कह रहा था। वे लोग उठ

खड़े हुए और हाथ मिलाकर बाहर चले गये।

उन के जाने के बाद हम क्रिश्चन से बिदा लेकर पूना की ओर रवाना हुए। दिन काफ़ी बीत चुका था।

महाबलेश्वर पार करने के बाद नरेश ने कहा, "प्रश्न यह है कि यदि सचमुच वह सुनीता थी तो वह व्यक्ति जो उस के साथ होटल में गया था, कौन हो सकता है ?"

"हो सकता है कोई उसे ब्लैक मेल कर रहा हो, पर इस प्रकार से?"

"ब्लैक मेल तो किसी भी प्रकार किया जा सकता है। यदि बिस्तर का उपयोग करने और हुक मिलने की बात नहीं होती तो यह भी अनुमान लगाया जा सकता था कि केवल बातचीत करने के लिये वे किसी गुप्त स्थान की तलाश में थे और फिर ऐसा समझा जाता कि पैसे इत्यादि की कोई बात रही होगी। परन्तु बड़ी बात, ब्लैक मेल का कारण क्या हो सकता है ?"

मैं ने कहा, "मेरी इच्छा है कि इस महिला का भूतकाल देखना चाहिये। उसे यहां आए केवल चार वर्ष हुए हैं। उससे पहले वह अपने पिता के साथ नासिक में रहती थी। उस ने वहीं पढ़ाई की। उस का पिता ठेकेदार था। वहां उस का कारोबार अच्छा चलता था, वह कुछ वर्षो से यहां आकर रिटायर लाईफ़ बिता रहा था।"

"ठीक है तो मैं कल सुबह ही नासिक जाऊंगा।"

"हां। एक और बात शायद तुम ने मार्क नहीं की। सुनीता जिस व्यक्ति के साथ होटल में गई थी, उस के पास एक स्टेशन वेगन भी था।"

"हमारे केस में कार उपयोग में लाई गई है या स्टेशन वेगन यह तो कहा नहीं जा सकता।"

"यही तो देखना है।" शाम को लगभग चार बजे हम लोग पूना पहुंच गये। नरेश मुझे घर छोड़कर स्वयं जीप लेकर चला गया।

■

४. मिस्टर भाटिया

मैं ने हाथ मुँह धोकर, चाय पी, और घर से निकला। मैं सीधे भाटिया के कार्यालय में पहुंचा। वह कार्यालय प्रातः सात बजे के बाद बन्द करता था। भाटिया उस समय सेक्रेटरी को कुछ डिक्टेट करा रहा था। मुझे देख कर उस ने कहा, "जेन, तुम जाकर कल वाले केस की रिपोर्ट तैयार करो, मैं बाद में तुम्हें बुलाता हूं।"

मुझे आश्चर्य हुआ कि उस ने दूसरे दिन से ही बाक़ायदा अपना काम आरंभ कर दिया। उस की सेक्रेटरी बहुत सुन्दर थी। सफ़ेद चमड़ी, मन मोहक आकृति, सुडौल शरीर, लम्बा क़द, बिल्कुल सुनीता की तरह। मैं मन में क्रिश्चन की पसंदगी को सराहने लगा।

औपचारिक दुख प्रकट करने के बाद मैं भाटिया के सामने कुर्सी पर बैठ गया। मैं ने कहा, "भाटिया, आख़िर यह सब कैसे हुआ ?"

"मुझे ख़ुद समझ में नहीं आ रहा है। यह वास्तविकता है कि हमारी गृहस्थी सुखमय नहीं थी। तुम्हें भी मालूम तो होगा।"

"इसकी थोड़ी बहुत जानकारी तो है, परन्तु कारण नहीं जानता। इस कलह का कारण जानना मेरे लिये इस समय बहुत आवश्यक है।"

"वैसे तो दुनिया समझती है कि हमारा जीवन सुखी था। परन्तु यह मेरा अन्तर्मन ही जानता है कि उसे और मुझे कौन सी तमन्ना और कष्ट था। मैं ने जब शादी की तब मुझे मालूम नहीं था कि उस का पहले किसी से प्यार था। स्त्री हर बात भुला सकती है परन्तु अपना पहला प्यार नहीं। उस का जिस व्यक्ति से प्यार था, उस को इस के पिता ने पसन्द नहीं किया। लड़की की ज़िद देखकर वह नासिक छोड़ कर पूना चला आया। वैसे भी उस से धंधा संभल नहीं पा रहा था। इस बीच उन की पत्नी का भी देहांत हो गया। पूना में उस ने पूंजी मकानों तथा शेयरों में लगाई। फिर निश्चिंत होकर बिताने लगा। इस बीच सुनीता का प्रेमी हांगकांग चला गया और सुनीता की शादी मुझ से हुई। हमारा वैवाहिक जीवन दो वर्ष तक अच्छा चला। कलह तब शुरू हुआ, जब गत जनवरी में हम लोग बॉम्बे गये और वहां सुनीता की मुलाक़ात उसी व्यक्ति से हुई जिस से उस ने पहला प्यार किया था। जब वह सुनीता से होटल में मिलने आया तब मैं ने समझा कि शायद वह उस का सहपाठी या मित्र होगा। मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया हूं कि उस व्यक्ति को कैसे मालूम हुआ कि सुनीता इस होटल में रुकी हुई है।"

"तुम बॉम्बे क्यों गये थे?"

"वैसे ही घूमने। सुनीता भी कह रही थी कि बोर हो गई हूं। जनवरी में बॉम्बे का मौसम अच्छा रहता है, चलो घूम आते हैं।"

"हाँ, फिर?"

"हम लोग शीघ्र ही वापस पूना आये। उस व्यक्ति ने कहा कि उस ने अपना दलाली का धंधा पूना में शिफ्ट करने का निश्चय किया है। पहले तो मैं ने इसे मात्र संयोग समझा, परन्तु धीरे धीरे मुझे मालूम हुआ कि वह यहाँ पूना में कोई धंधा ही नहीं करता। उस का मेरे घर आना जाना बढ़ गया। सुनीता ऐक दिन कहने लगी वह उस का पहला प्यार है और वह अभी भी उस से शादी करने के लिये तैयार है, यदि मैं उसे तलाक़ दूं तो। पहले तो मुझे बहुत गुस्सा आया और न जाने उसे क्या क्या कह बैठा। फिर उसे ठंडे दिमाग़ से समझाने लगा कि क्या मैं उस से प्यार नहीं करता।"

इतना कह कर भाटिया चुप हो गया। मुझे ऐसा लग रहा था कि उस की आंखें नम हो गई हैं। उस का स्वर भी भरा रहा था। उस ने मेज़ से ग्लास उठाकर पानी पिया। फिर ठंडी सांस भरते हुए कहा, "सच पूछो तो नावाणी, मालूम नहीं सुनीता में मेरा कितना सारा मोह था। उस के इतना आगे बढ़ने के बाद भी अंत तक मैं उसे समझाने का प्रयत्न करता रहा। विनती भी की। अपने जीवन और सम्मान की क़सम दी, परन्तु सब बेकार। उसे यह भी समझाया कि 'वह कोई धंधा नहीं करता और उस की नज़र में केवल तेरी दौलत है।' परन्तु न मालूम उस पर उस का कौन सा जादू चढ़ गया था कि वह मेरी एक नहीं सुनती थी। दूसरे दिन वह महाबलेश्वर चली गई। वहां उस के पिता का बंगला है, जो हम लोगों ने किराये पर नहीं दिया था, केवल इस विचार से कि हम लोगों के काम आयेगा। सुनीता वहां जाकर रही, तो भी सप्ताह में एक दो बार मैं उस से मिलने जाता था। मेरा अन्त तक उस के साथ यही व्यवहार रहा। वहाँ साथ में सिनेमा देखने भी जाते थे। मुझे उम्मीद थी कि वह कभी न कभी अवश्य रास्ते पर आ जायेगी। इसलिये मैं तलाक की बात नहीं मान रहा था। मुझे क्या मालूम कि ऐसा कर देगी।"

मैं ने कहा, "अन्तिम बार तुम से कब मिली थी?"

"महाबलेश्वर में १० तारीख को। उस ने मुझे फोन किया था। मैं गया तो कागज़ों का एक बंडल देते हुए कहा, 'सारी सम्पत्ति, सिवाय इस बंगले के, मैं ने उपहार स्वरूप आप के नाम कर दी है।' मैं ने देखा वह एक Irrevocable Assignment मेरे फेवर

में थी। इस के अनुसार सारी सम्पत्ति मेरे नाम ट्रान्सफ़र कर दी गई थी। मैं ने पूछा, 'इस का क्या मतलब ?' उस ने कहा 'अब आप यह नहीं कहेंगे कि सुन्दर मुझ से सम्पत्ति के कारण विवाह कर रहा है।' मैं ने कहा, 'तू ने सुन्दर को यह बात बताई है?' कहने लगी ' इस की आवश्यकता नहीं है। अब बताओ आप का क्या इरादा है?' मैं ने उसे कोई सीधा उत्तर नहीं दिया, परन्तु उस की बात मानने का मेरा इरादा नहीं था। एक तो मुझे विश्वास था कि जब सुन्दर को यह बात मालूम होगी तो वह पागल हो जायेगा और दूसरा मैं सुनीता को भूल नहीं सकता था।"

मैं ने कहा "वे Deeds मुझे दिखाओगे?"

वह उठा और अलमारी में से काग़ज़ निकाल कर मुझे दे दिये। मैं ने देखा सातारा के सब-रजिस्ट्रार कार्यालय में ये डीड छह तारीख को प्रस्तुत की गई थीं। ये सब नकल थीं। मूल प्रतियां तो वैसे भी रजिस्ट्रार के कार्यालय से आने में छह आठ हफ़्ते लग जाते हैं। मैं ने कागज़ पढ़कर उसे लौटा दिये।

भाटिया स्वयं एक अच्छा क्रिम्नल वकील था। मैं ने चाहा वास्तविकता बताकर, उस से कुछ सलाह लूं। मैंने कहा "भाटिया मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आत्महत्या नहीं है, पर उस की हत्या हुई है।"

आश्चर्य के कारण भाटिया का मुंह मानो फट-सा गया, कहने लगा, "परन्तु मैं स्वयं वारदात वाले स्थान पर इन्सपेक्टर क्रिश्चन के साथ था। उस समय मैं स्वयं क्रिश्चन से सहमत था कि सुनीता ने आत्म हत्या की है। तुम कैसे कह रहे हो कि हत्या हुई ? लाश तो ऐसे मिली, आत्महत्या की गई है।"

"मुझे कल ही मालूम हो गया था कि सुनीता ने आत्महत्या की है। मैं एकदम महाबलेश्वर गया। तुम मेरे पहुंचने से कुछ पहले निकल चुके थे।"

"क्या करता। लाश लेनी थी।"

"परन्तु यह वास्तविकता है कि हत्यारे ने काम अत्यन्त ही सतर्कता से किया है। सच कह रहा हूं यदि मैं समय पर नहीं पहुंचता तो सभी प्रमाण नष्ट हो जातेऔर उस के बाद, किसी को भी शक नहीं होता कि यह आत्महत्या नहीं हैं। यदि एक रात बीच में बीत जाती तो कोहरे की नमी में सब प्रमाण नष्ट हो जाते।"

" भैया शक तो मुझे भी नहीं हुआ।" भाटिया ने ठंडी सांस लेते हुए कहा, "आप पुलिस वाले क़यामत की नज़र रखते हैं।"

" ऐसा नहीं है। वास्तव में तुम्हारा मन दुखी होगा, इस लिये तुम ध्यान नहीं दे

पाये होंगे।"

"परन्तु तुम कैसे कह रहे हो कि हत्या हुई है?"

मैं ने उसे संक्षेप में समझाया कि उन लोगों ने तहक़ीक़ात के समय किन किन चीज़ों पर ध्यान नहीं दिया। मैं ने देखा उसकी आखें भर आई थीं। कहने लगा, "यह तो बिल्कुल दूसरी उलझन हुई। मेरा तो दिमाग़ ही काम नहीं कर रहा है कि यह सब कुछ क्या हो रहा है, और कौन व्यक्ति हमारे पीछे पड़ा है।"

कुछ पल शान्त रहने के बाद मैंने कहा "तुम १५ तारीख को कहां थे?"

"क्यों? मैं उस दिन - सारा दिन कार्यालय में था। न्यायालय में किसी केस की तिथि नहीं थी इस लिये सारा दिन मिस जेन के साथ कुछ रिपोर्ट तैयार करने में लगा था।"

"अब इस बात की तो पुष्टि हो गई है कि यह आत्महत्या नहीं है।तुम को कुछ ऐसी बातों की जानकारी है क्या, जो इस मामले पर कोई प्रकाश डाल सके?"

"फ़िलहाल तो मैं कुछ नहीं कह सकता मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।"

"तुम ने उस व्यक्ति का नाम नहीं बताया?"

"सुन्दर आहूजा। शुक्रवार पेठ में रहता है मुझे पूरे पते की जानकारी नहीं है।"

"तुम को ऐसा कुछ मालूम है क्या, कि वह सुनीता को किसी कारण ब्लैकमेल कर रहा हो?"

"मैं नहीं समझता, क्योंकि जिस प्रकार बात इतनी बढ़ जाती है कि वह मुझे तलाक़ देने को कहती है, साफ़ साफ़ स्वीकार करती है कि सुन्दर उस का पहला प्यार है, जिसके साथ उसे शादी करनी है और खुलेआम उस के साथ सम्बंध बढ़ाती है, उस स्थिति में भी मैं उसे न केवल स्वीकार करने के लिये तैयार हूं, परन्तु विनती भी करता हूं तो फिर कम से कम ब्लैकमेल से बचने के लिये वह अपनी अन्य कोई भी एसी बात मुझे बता सकती थी। उस समय उसे मेरी सहानभूति का विश्वास हो सकता था। एक और बात भी है कि हर व्यक्ति को ब्लैकमेल और ब्लैकमेल करने वाले से नफरत होती है। इसलिये उसे सुन्दर से नफ़रत होनी चाहिये थी, न की असीम प्यार।"

"यह तो सही है। इस समय सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि हत्या का कारण

क्या था ?"

"इसी बात ने मुझे भी चकित कर रखा है। हम वकीलों के पास भी कई ऐसे उलझे हुए केस आते हैं और हम देखते हैं कि हत्यारे कैसे न अजीबो ग़रीब तरीके अपनी सुरक्षा के लिये अपनाते हैं, परन्तु यह तो एक अलग ही केस दिख रहा है।"

"सुनीता ने सारी सम्पत्ति तुम्हारे नाम ट्रान्स्फ़र की थी ?"

"जी, अधिकतर; कुछ शेयर और नगद उस ने अपने पास रखे थे।"

"लगभग कितने?"

"मैं समझता हूं पच्चास हजार बैंक बैलेंस होगा और उतनी ही राशि के शेयर इत्यादि।"

कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद मैं ने कहा, "अच्छा मैं चलता हूं, प्रयत्न करना मेरा कर्तव्य है, जितना हो सकेगा जल्द हत्यारे को पकड़ा जायेगा।"

"मेरी सहयता की कभी भी आवश्यकता महसूस हो तो मैं हाज़िर हूं। क़ातिल जल्द से जल्द कानून की गिरफ़्त मैं आना चाहिये।"

मैं ने उसे हाथ मिलाते हुए कहा, "वास्तव में हम से ज़्यादा चिन्ता पुलिस विभाग को है कि हत्यारा जितना जल्द पकड़ा जाये उतना अच्छा।"

मैं भाटिया से विदा लेकर सीधा घर आया और आराम करने लगा। सारे दिन की थकावट ने और काम करने की अनुमति नहीं दी।

■

५. १८ नवम्बर

मैं कार्यालय में लगभग ११ बजे पहुंचा । टेलिफ़ोन उठा कर आपरेटर से कहा, "नेशनल बैंक, महाबलेश्वर से बात कराइये, और हां मुझे एजन्ट मिस्टर लाला से बात करनी है।"

मिस्टर लाला से मेरी पुरानी पहचान थी। मैं ने ही सुनीता की पहचान लाला से कराई थी और उसे अकाऊंट खोलने के लिये इन्ट्रोड्यूस किया था।

कुछ समय के बाद आपरेटर ने फ़ोन किया "मिस्टर लाला आन दी लाइन।" जल्द ही लाला की आवाज आई " येस, नेशनल बैंक........लाला स्पीकिंग।"

"हेलो, गुड आफ़्टरनून मिस्टर लाला। मैं हूं नावाणी पूना से।"

"क्या हाल है भाई, बताओ कैसे याद किया ?"

"आप को श्रीमती भाटिया के स्वर्गवास का तो पता होगा।"

"हाँ, परन्तु अजीब बात है कि ऐसी पढ़ी लिखी लड़की ने आत्महत्या की बात कैसे सोची ?"

"यह तो इस समय कहना कठिन है। सुनिये, मुझे उस के अकाऊंट का स्टेटमेन्ट चाहिये, पिछले छह महीनों का।"

"मैं आज ही पोस्ट कर देता हूं।"

"ऐसा करिये आप स्टेटमेन्ट निकलवाकर अपने साथ घर ले जाइये। मैं शाम को महाबलेश्वर आता हूं। आप से भी मिल लूंगा।"

"ठीक है।"

" भला इस समय क्या यह बता सकते हैं कि अन्तिम दिनों में उस ने पैसे जल्दी जल्दी और अधिक निकाले थे क्या ?"

" यह सही है कि पैसे निकालने की गति कुछ तेज़ थी, उसके इधर आके रहने के बाद। पिछली १३ तारीख को उस ने १६ हज़ार कैश लिये थे।"

"क्या आप को अच्छी तरह याद है ?"

" हां !...... आप को तो मालूम है कि यहां हमारे पास ईतनी बड़ी राशी की कैश की लेन देन कम होती है। काऊंटर पर जब चेक आया तो क्लर्क मेरे पास आया। मैं ने श्रीमती भाटिया से पूछा कि उन्हें सचमुच केवल कैश रुपया ही चाहिये?, और उस के ज़िद करने पर हम ने उसे भुगतान कर दिया।"

" कुछ कारण मालूम हो सका ?"

" मैं ने जब उस से पूछा कि पैसे क्यों निकाल रही हो तो उस ने बताया कि कुछ सोना और जवाहरात खरीदने हैं। वैसे तो ये सब बातें पूछने की हमें कोई आवश्यकता नहीं है, परन्तु आप के कारण उन से पहचान कुछ ज़्यादा ही बढ़ गई थी और मैंने हुज्जत कर दी थी।"

" हां, फिर ?"

" मैं ने उस से कहा था कि इतना सोना और जवाहरात तो पूना या बम्बई से ले रही होंगी तो वहां का बैंक ड्राफ़्ट क्यों नहीं लेती ? तब उस ने बताया था कि ब्रोकर यहीं आनेवाला है और उसे कैश चाहिये। वह चेक या बैंक ड्राफ़्ट नहीं लेना चाहता। मैं ने ब्रोकर का नाम पूछा तो उस ने नाम प्रेमचन्द वोरा बताया। मुझे मालूम है कि वोरा कुछ स्मगलिंग का माल भी रखता है और संभव है, इसलिए कैश लेना पसन्द करता हो।"

"यार आप ने मुझे सूचित करना आवश्यक क्यों नही समझा ?"

"पहले तो मैं ने सोचा कि आप को फ़ोन करता हूं। फिर मैं ने सोचा कि सोने और जवाहारात के लिये यह राशि कोई ज़्यादा तो नहीं है और यहां यह कोई नई बात नहीं है कि एसा धंधा करने वाले केश के लिये ज़िद करें।"

"अच्छा, मैं आज शाम तक महाबलेश्वर पहुंच जाऊंगा।"

"अच्छा भाई।"

मैं ने फ़ोन रख दिया, और आफ़िस से बाहर निकल आया। कार बाहर निकाल कर, सीधे शेयर बाज़ार में प्रेमचन्द वोरा के कार्यालय की ओर चल दिया। पार्किंग का स्थान कुछ दूर था। मैं ने कार पार्क की और पैदल ही उस के कार्यालय पहुंचा। उसके पास एक और व्यक्ति भी बैठा था। दुआ सलाम के बाद उस ने पुछा, "कहिये मिस्टर नावाणी, कैसे आना हुआ ?"

"आप से कुछ बात करनी है, परन्तु अकेले में।"

वहां बैठा व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, " अच्छा मिस्टर वोरा, फिर शाम को माल आप को पहली कंसाईन्मेन्ट में से मिलेगा।"

वोरा ने कहा " ठीक है "

" .... अच्छा।" कहता हुआ वह चला गया।

वोरा ने कहा, "कहिये, मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं?"

"आप ने कुछ दिन पहले श्रीमती सुनीता भाटिया से महाबलेश्वर में सौदा किया है। उस का विवरण चाहिये।"

" महाबलेश्वर में ? सौदा तो यहां पूना में हुआ था।"

" यह सौदा कब हुआ ?"

" लगभग दो माह पहले।"

" उस ने क्या ख़रीदा था ?"

" कुछ जवाहरात और सोना इत्यादि लगभग चार हज़ार का।"

" आप ने बिल दिया था ?"

" जी नहीं। क्योंकि माल मैं ने नहीं बेचा था। मैं ने जिस से लेकर दिया था, उसने अवश्य बिल दिया था। मेरा तो केवल कमीशन का हिसाब था।"

" उस बिल की कॉपी दिलवा सकेंगे?"

" देखता हूं, वो तो मेरे पास भी होगी। परन्तु क्या आप उसे वापिस कर सकेंगे? मैंने कमीशन खायी है, इसलिये मुझे रिकार्ड हेतु चाहिये।"

" प्रति दीजिये, मैं नक़ल कर लेता हूं।"
वह उठकर फाईल ढूंढने लगा और लगभग पांच मिनट बाद प्रति निकालकर मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा, " परन्तु मिस्टर नावाणी बात क्या है?"

" श्रीमती भाटिया की हत्या की गई है।"

वह मानो सुन्न हो गया। " कब ? कहां ?"

"महाबलेश्वर में पिछली पंद्रह तारीख को।" वह एक ठंडी सांस भर कर शान्त हो गया। मैं ने बिल की नक़ल कर ली।

मैं ने कहा, "हां, तो आप के साथ कुछ दिन पहले उस ने कोई सौदा नहीं किया है ?"

"नहीं।"

मैं उठने ही वाला था कि उस ने कहा, " और भी कोई काम होतो अवश्य बताइयेगा।"मुझे मानो कोई बात याद आ गई। मैं ने कहा, "एक काम करिएगा, वोरा। पिछली १३ और १४ तारीख को इस बाज़ार के किसी व्यक्ति ने महाबलेश्वर में १५-१६ हज़ार का कोई सौदा किया हो तो उसकी जानकारी प्राप्त कर मुझे बताइयेगा।"

"कैसा सौदा ?"

"यही सोने और जवाहरात का श्रीमती भाटिया से।"

"ओह, पक्का! लगभग तो पता पड़ जायेगा। तब मैं आप को फ़ोन करूंगा।"

"अच्छा, धन्यवाद।" कहकर मैं बाहर निकल आया।

प्रेमचंन्द वोरा पुराना पापी थौं। पुलिस को अभी तक उस का सबूत नहीं मिला था, इस लिये वह आज़ाद घूम रहा था, वैसे तो मुझे मालूम था कि वह तस्करी का माल रखता है और शायद उस के किसी गैंग के साथ भी सम्बंध हैं। मैं ने प्रण किया कि इस केस से जान छूटे तो फिर वोरा के कारनामों के तह तक जाकर, जितना जल्द हो सकेगा, उसे क़ानून के हवाले करूंगा।

उस समय मैं जल्दी में था क्योंकि मुझे महाबलेश्वर जाना था और मैंने अभी तक फ़िंगर प्रिन्ट एक्सपर्ट से बात नहीं की थी। मैं कार को तेज़ गति से चलाने लगा और तुरन्त ही घर पहुंच गया।

मैं ने हाथ मुंह धोकर श्रीमती को कहा, "खाना तैयार करो, मुझे महाबलेश्वर जाना है।"

"क्यों शाम को भाटिया के यहां पगड़ी रस्म पर नहीं चलेंगे?"

"देखो, तुम जा कर हो आओ। यह केस अत्यन्त ही आवश्यक है, और मेरा वहां पहुंचना अधिक आवश्यक है।"

जब तक खाना तैयार हो,तब तक मैं ने आफ़िस में फ़ोन किया। सब इन्सपेक्टर दारूवाला को बुलाकर पूछा " सुनो आजकल तुम क्या कर रहे हो?"

"मैंने हिट एण्ड रन प्रकरण की रिपोर्ट आज सुबह ही कम्पलीट की है। अभी तक किसी दूसरी बात पर ध्यान नहीं गया है।"

"तुम इस समय मेरे साथ महाबलेश्वर चल सकते हो?"

"कोई नया केस आया है क्या?"

"नहीं, वही श्रीमती भाटिया की हत्या का प्रकरण है। कुछ और तहक़ीक़ात करनी है और मैं समझता हूं कि फिंगर प्रिन्ट और फ़ोटोग्राफ़ लेने की आवश्यकता होगी।"

"चलिये, मैं घर फोन कर देता हूं।"

"रात को शायद वहीं रुकना पड़ेगा। घर जाकर आधे घंटे में तैयार होकर मेरे घर आ जाओ। खाना यहीं तैयार है।"

"आल राईट।"

"सुनो। अपने साथ फिंगर प्रिन्ट के पूरे साधन ले आना।"

"जी हाँ।"

"अच्छा आफिस में से अभी निकलो।" इतना कह कर मैं ने फोन रख दिया।

मैं ने खाना नहीं खाया; दारूवाला की प्रतीक्षा करने लगा। मैं सोचने लगा, किसी को सुनीता की हत्या करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। मैं मन ही मन पूरे केस को दोहराने लगा। हत्या का कारण क्या हो सकता है? सम्पत्ति? जहां तक सम्पत्ति का प्रश्न है तो यह काम केवल भाटिया ही कर सकता था, क्योंकि वही सुनीता की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था। और चूंकि सुनीता उस से तलाक़ मांग रही थी तो उसे स्वाभाविक रूप से ऐसा लगा होगा कि सम्पत्ति भी वह अपने साथ ले जायेगी। इसलिये किसी भी प्रकार से यदि उस की मृत्यु हो तो वह सम्पत्ति का मालिक बन सकता था; परन्तु अब यह प्रश्न तो उठता नहीं, क्योंकि हत्या से कुछ दिन पूर्व सुनीता ने पूरी सम्पत्ति भाटिया को उपहार स्वरूप दे दी थी। इसके अलावा हत्या वाले दिन .... लगभग हत्या के समय पर ही भाटिया अपने पूना कर्यालय में उपस्थित था। उसे पुलिस के एक जिम्मेदार अफ़सरने वहां देखा था..... इसके अलावा भाटिया को सम्पत्ति की क्या पड़ी है। उसकी प्रैक्टिस अच्छी चल रही है..... बाकी सवाल है सुन्दर आहूजा का। शायद वही एक व्यक्ति है जो सुनीता के साथ 'सी-फेस' होटल में गया है। उस के पास स्टेशन वैगन है। सुनीता के पास महाबलेश्वर भी जाता रहता

था। वह यह काम कर सकता है ? हो सकता है भाटिया की बात सही भी हो कि वह सुनीता से शादी केवल उस की सम्पत्ति के कारण कर रहा था और जब उस ने यह बात सुनी हो कि सुनीता ने पूरी सम्पत्ति भाटिया को दे दी है तो वह सहन न कर पाया हो। सुनीता का पिता उसे बिल्कुल ही पसन्द नहीं करता था..... आखिर क्यों ? सुनीता ने इस व्यक्ति की बात मुझ से या अपनी सहेली तक से क्यों नहीं की ? मैं ने निर्णय ले लिया कि महाबलेश्वर में तहक़ीक़ात पूरी करके आहूजा से मिलूंगा, और उस की गतिविधियों पर चौकसी रखूंगा। इस समय उस से मिलना उचित नहीं है, क्योंकि पहले नरेश से इस व्यक्ति और सुनीता का भूतकाल मालूम करना ज़रूरी है। नरेश कल सुबह पहुंच जायेगा। इस के अलावा सुनीता के वकील से भी मिलना पड़ेगा ताकि मालूम हो कि सुनीता ने सम्पत्ति उपहार में क्यों दी और किन परिस्थितियों में दी।

इतने में दारूवाला भी आ गया। मैं ने कहा, "इतनी जल्दी ?"

"बस, मोटर साईकल पर जल्द ही घर पर संदेश दे आया।"

"अच्छा, मोटर साईकल अन्दर गैरेज में रखो।" हम दोनों ने साथ में खाना खाया और बाहर आकर कार में बैठे। दारूवाला ने कहा, "कार मैं ड्राइव करता हूं।"

मैं ने कहा, "अच्छा, पहले सीधे पेट्रोल पम्प चलो।"

हम लोग लगभग साढ़े पांच बजे महाबलेश्वर के पुलिस थाने पहुंच गये। मैं ने क्रिश्चन से कहा, "तुम दारूवाला के साथ बंगले जाओ। वहां फ़िंगर प्रिन्ट लो, तब तक मैं मिस्टर लाला से मिलकर आता हूं।"

"मिस्टर लाला .... नेशनल बैंक ?"

"जी हां !..... फिंगर प्रिन्टस, मुख्य द्वार और बेडरूम के दरवाज़े की लेनी है। साथ ही गोदरेज की अलमारी के हैंडल और उस की तिजोरी आदि के हैंडल की भी।"

"ठीक है।"

मैं लाला के घर पहुंच गया। लाला अभी अभी बैंक से आया था। हम जाकर ड्राइंग रूम में बैठे। हाल चाल पूछने के बाद उस ने कहा, "बताओ तो श्रीमती भाटिया की हत्या कैसे हुई ? समाचार पत्रों में तो छपा था कि उस ने आत्महत्या की है।"

"सो आप समझ गये कि हत्या हुई है।"

"नहीं तो इतनी तहक़ीक़ात क्यों ?"

"वास्तव में हत्या करके लाश कुछ इस प्रकार पेड़ पर लटकायी गयी थी, कि

आत्महत्या लगे। हम लोग भी पहले चक्कर में आ गये थे।"

"परन्तु हत्या का कारण ?"

"प्रथम द्रष्टव्या तो यही दिख रहा है कि कोई उसे ब्लेकमेल कर रहा था। और मुझे पक्का विश्वास है कि ये १६ हज़ार भी इसी कारण निकाले गये हैं।"

"आप का शक किसी पर तो होगा।"

मैं ने कहा "यही तो बात है, अभी तक हम लोगों को कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिख रहा है, जिस पर शक किया जा सके। आप को श्रीमती भाटिया के बारे में कोई जानकारी है ?"

"मतलब ?"

"यूं ही ऊपरी ऊपरी जानकारी, कि वह यहां क्या करती थी और उस का जीवन कैसे बीत रहा था।"

"यह पूछते हो तो भैया सच्ची बात बताऊं ? यहां उस के बारे में अच्छा इम्प्रेशन नहीं था। उस के पास मिस्टर भाटिया तो सप्ताह में एक दो बार आते थे, परन्तु कोई दूसरा व्यक्ति भी आता था।"

"कौन ?" वैसे तो मैं समझ गया कि कौन हो सकता है।

"यह तो मालूम नहीं। यह भी किसी ने उस दिन मुझे बताया कि वह प्रायः किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सिनेमा देखने जाती है। और उस व्यक्ति के साथ स्टेशन वैगन में घूमती फिरती रहेती थी।"

मुझे याद आया कि पिछली बार तलाशी लेते समय सुनीता के पर्स से दो सिनेमा के टिकट मिले थे। कुछ और बातों के बाद स्टेटमेन्ट लेकर मैं पोलिस थाने पहुंचा। यहां कुछ देर के बाद क्रिश्चन और दारूवाला भी आ गये।

क्रिश्चन ने कहा, "काम पूरा हो गया।"

मैं ने दारूवाला की ओर देखा। उस ने कहा, "यहां का काम पूरा हुआ। प्रिन्ट तो पूना चलकर डेवलप करनी पडेगी। यदि आवश्यक हो तो यहां भी की जा सकती है, परन्तु उचित होगा कि पूना चल कर डेवलप करें। वहां अच्छी व्यवस्था है।"

मैं ने कहा, "ठीक है, पूना चल कर करेंगे।"

क्रिश्चन ने कुछ चाय नाश्ता मंगाया। नाश्ता करने बाद मैं ने कहा, " उस दिन मैं घर की तलाशी अच्छी तरह नहीं ले पाया था। अभी जाकर तलाशी ले आता हूं, ताकि कल सुबह जल्दी लौट सकें।"

"मैं साथ चलूं?" क्रिश्चन ने कहा।

मैं ने कहा, "नहीं, मैं अकेला ही जाता हूं।"

मुझे यह बात पसन्द नहीं थी कि क्रिश्चन मेरे साथ चले। रात्रि के आठ बजे थे। मैं कार में बैठ कर बाज़ार पार कर के चौराहे पर आया। वहां से कार मोड़कर सुनीता के बंगले की ओर जाने लगा। बाज़ार में शांति थी। इक्का दुक्का दुकाने और होटल खुले थे। आवागमन बिल्कुल नहीं था। काफ़ी अंधेरा था। भारी ठंड के कारण लोग घरों के दरवाज़े और खिड़कियां बन्द कर के बैठे थे। मकानों के रोशन दानों से रोशनी दिख रही थी, जिससे लग रहा था कि लोग अभी सोये नहीं हैं। वैसे भी सोने का समय अभी हुआ नहीं था।

मैं ने सुनीता के बंगले के पास अहाते के बाहर कार खड़ी कर के गेट खोला और फिर कार में आकर बैठा। कार बंगले के द्वार पर पोर्च में लाकर खड़ी की। बंगले का वह मुख्य द्वार ड्राइंग रूम में खुलता था। मैं बिजली जलाकर रूम की बारीकी से तलाशी लेने लगा ताकि कोई डायरी या पत्र इत्यादि मिले, परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं मिला। मैं ऊपर आकर पहले रूम में घुसा और बती जलाई। इस कमरे में तो सामान बिखरा पड़ा था। पूरे कमरे की दीवारों, फ़र्श चाहे सामान पर अच्छी खासी धूल जमी थी। मैं उस कमरे की बती बुझाकर बाहर निकल आया और चाबियों के दूसरे गुच्छे का उपयोग कर दूसरे कमरे में घुसा जहां सुनीता का पर्स मिला था। मैं ने बत्ती जलाकर टेबल के खाने खोले। पलंग की चादरों को उल्टा पलटा। ऐसी कोई महत्व पूर्ण वस्तु नहीं दिखी।

मैं ने गोदरेज की अलमारी खोलकर देखी। अन्दर कुछ कपड़े, साज सिंगार का सामान इत्यादि थे। नीचे तिजोरी थी। मैं ने तिजोरी खोलकर देखी। बिल्कुल ख़ाली थी। अलमारी में ऊपर एक दूसरा लॉकर भी था। वह भी खोलकर देखा। अंदर एक बॉक्स दिखा। मैं ने बॉक्स खोला। कई सोने के गहने उस बॉक्स में रखे थे। मैं उन्हें निकाल कर क़ीमत का अनुमान लगाने लगा। ठीक उसी समय मुझे पिछली बालकनी में पैरों की आहट सुनाई दी। मैं मुंह गहने के बॉक्स में डालकर आहट की टोह लेने लगा और बाहर निकलने का सोच ही रहा था, कि एक पत्थर तेज़ गति से आकर मेरी पीठ में लगा। मैं उस की परवाह न करके आगे बढ़कर बालकनी का दरवाज़ा खोल कर बाहर निकल आया। दूर से देखा एक लंबा व्यक्ति, आगे निकल रहा था। मैं स्वयं भी उसके पीछे पीछे नीचे उतरने लगा, परन्तु मेरे पहुंचने के पहले

वह बाथ रूम की छत से कूद कर भाग गया। वह बाहरी गेट की ओर भाग रहा था, जहां से मैं आया था। मैं भी बाथरूम की छत से नीचे कूद गया, लेकिन फिर बाहर अहाते से घूम कर ड्राइंग रूम में घुसा। मेरे शरीर में हल्का कंम्पन उत्पन्न हो गया था। परन्तु यह हिम्मत हारने का समय नहीं था। मैं ने अन्दर आकर बंगले की अन्दर बाहर की सभी बत्तियां जला दीं। अन्दर बेडरूम में आकर वह पत्थर उठाया, जो मेरी पीठ में आकर लगा था। पत्थर के साथ एक पत्र बंधा था। मैंने देखा सामने वाली खिड़की खुली थी और वह पत्थर उसी खिड़की से ही आया था। मुझे गुस्सा आ रहा था कि क्रिश्चन और दारूवाला ने यह खिड़की खुली क्यों छोड़ दी थी ? मैं आगे बढ़कर खिड़की की ओर गया। खिड़की को कोई चोट नहीं पहुंची थी जिससे यह मालूम हो सके कि खिड़की तोड़कर खोली गई है। मैं पत्र निकालकर पढ़ने लगा -

" मिस्टर नावाणी, यदि जीवन प्यारा है तो यह सब छोड़ दो। पुलिस और दुनिया जानती है कि श्रीमती भाटिया ने आत्महत्या की है।"

पत्र टाईप किया हुआ था। और लिखने वाले का नाम नहीं छपा था। मैं बाहर निकल कर एक बार फिर सारे बंगले की परिक्रमा दे आया। बाहर बिजली के प्रकाश में दूर पेड़ों की लम्बी लम्बी छायाएं डरावना दृश्य उत्पन्न कर रही थीं। ठंड भी गज़ब की थी। मुझ में और अधिक काम करने की शक्ति नहीं थी। मैं ने सोना और जवाहरात अलमारी में उसी स्थान पर रखे और अलमारी बन्द कर बंगले की खिड़की दरवाज़ों को बन्द करने लगा। बेड रूम का दरवाज़ा बन्द करते समय बाहर वरामदे में मुझे एक और कागज़ का टुकड़ा दिखा। मैं उसे ले आया। मैं ने देखा कागज़ बिल्कुल पहले पत्र जैसा था और टाईप राईटर भी वही काम में लाया गया था। लिखा था -

" नम्बर 12 ! आज यह काम पूरा करके जहाज़ वाली रिपोर्ट बॉस को अर्धरात्रि से पहले अवश्य पहुंचाना।"

इस में भी लिखने वाले का नाम नहीं था। मैं ने दोनों पत्र जेब में डाले। उस के बाद बंगले के दरवाज़े और खिड़कियां चेक कर, बत्तियां बुझा कर, मैं बाहर निकल आया और कार में बैठ कर पुलिस थाने की ओर जाने लगा। उस समय ठंड बहुत अधिक महसूस हो रही थी। मैं सोचने लगा........ क्या इस मामले में किसी गैंग का हाथ है ? उस समय मैं अधिक सोच नहीं सका।

पुलिस थाने पहुंच कर मैं ने पहले क्रिश्चन से प्रशन किया, "तुम ने खिड़की क्यों खुली छोड़ दी थी ?"

दारूवाला ने कहा, "मैं ने स्वयं सभी खिडकियां अच्छी तरह बन्द की थी। यह कैसे संभव है कोई खिडकी खुली रह गई हो?"

मैं सोचने लगा, क्या उस बदमाश के पास बंगले की चाबियां हैं ? वह साये की तरह बंगले की निगरानी कर रहा है ? .... क्यों? शायद दारूवाला और क्रिश्चन के जाने के तुरन्त बाद उस ने बंगले के अन्दर घुस कर खिड़की खोली है। केवल आधे घंटे बाद ही तो मैं गया हूं।

६. सुन्दर आहूजा

दूसरे दिन हम लोग लगभग १२ बजे पूना पहुंचे। मैं सीधा घर आया और ारूवाला को कहा कि घर हो आने के बाद कार्यालय में जाकर प्रिन्ट डेवलप करे। वह अपनी मोटर साईकल लेकर चला गया। मैं घर में कुछ आराम करने के पश्चात् लगभग तीन बजे कार्यालय पहुंचा। नरेश वापिस आ चुका था और मेरे कार्यालय में बैठा था।

हाल चाल पूछने के बाद मैं ने कहा, "बताओ, मामला कहां तक पहुंचा ?"

"मैं समझता हूं हम लोग तह तक आ पहुंचे हैं।"

"कैसे?"

"पूरी बात इस प्रकार है। मैं यहां से सीधे नासिक गया। वहां इन्सपेक्टर कुलकर्णी से मेरी अच्छी जान पहचान है। उस की सहायता से मुझे लक्ष्मणदास के पूरे परिवार की अच्छी जानकरी मिल गई। जब वह नासिक आया था तो उस के पास इतना पैसा नहीं था। बाद में धीरे धीरे ठेकेदारी से उस ने अच्छा धन कमाया। नेक नीयत वाला अच्छा परिश्रमी व्यक्ति था। सुनीता वहां इन्टर तक कॉलेज में पढ़ी थी। वहीं उसकी मित्रता सुन्दर आहूजा नामक युवक से हुई। इस सुन्दर आहूजा की रिपोर्ट ठीक नहीं है। उस का जीवन निर्वाह दूसरों के पैसों से होता था, जिन्हें वह चोरी नहीं करता था। मैं समझता हूं मेरा मतलब तुम समझ गये होंगे।"

"अच्छा, तो यह बात है। इस का अर्थ कि सुनीता ने उस पर पैसा लुटाया है।"

"क्या मतलब ?"

"चलो तुम अपनी बात पूरी करो तो फिर मैं बताता हूं। मेरे पास भी बहुत कुछ है सुनाने के लिये।"

"उस ने सुनीता के साथ शादी का वायदा किया। वह वैसे भी आज़ाद तबीयत की युवती थी। सुन्दर पर पैसा पानी की तरह बहाने लगी। उस के पिता को स्वाभाविक यह सब पसंद नहीं था। उस ने बेटी को समझाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह नहीं मानी। बात पूरे नासिक में फैल गई। सुन्दर को हांगकांग की किसी कंम्पनी से नौकरी का ऑफ़र मिला। उसने तत्काल वह ऑफ़र स्वीकार कर लिया और सुनीता से लौटकर शादी करने का वायदा करके चला गया। लक्ष्मणदास का नासिक में मन नहीं लगा। वह कारोबार समेट कर, पूना में रहने लगा और फिर समझा बूझा कर

सुनीता की शादी मिस्टर भाटिया से करवा दी।"

"इस पूरी बात की मुझे भी काफ़ी ख़बर मिल चुकी है।"

"फिर तो तुम्हें यह भी जानकारी होगी कि सुन्दर आहूजा यहां पूना में ही है।"

"हाँ, सुनो, उस पर मुझे शक है। सुनीता के बंगले से चाबियों के दो गुच्छे मिले थे तुम्हें याद है?"

"हाँ।"

"एक 'S' सुनिता के लिये और दूसरा 'S' सुन्दर के लिये। आहूजा को केवल ड्राइं रूम और बेडरूम की चाबियों की ही आवश्यकता थी। इसिलिये पास वाले बन्द प कमरे की चाबी दूसरे गुच्छे में नहीं थी।"

"पीछे वाले पैरों के निशान फिर तो उसी के हो सकते हैं।"

"यह हो भी सकता है। सुनीता ने हत्या के दो दिन पहले जो १६ हज़ार रुपये बैंक निकलवाये थे, वे मालूम नहीं कहां गए! हो सकता है, सुंदर के लिए हों। वह उस मिलने जाता था। यह वही व्यक्ति लग रहा है, जिसके साथ सुनीता सी-फेस होटल गई है। सुन्दर के पास स्टेशन वैगन भी है।"

मैं ने नरेश को उस के जाने के बाद हुई गतिविधियों की जानकारी दी। उसे सुनीता बैंक अकांऊट का विवरण बताया। दो माह पूर्व उस ने पांच हज़ार निकाले थे। उस बीस दिन पूर्व तीन हज़ार और उस के बारह दिन बाद छह हज़ार। इस बीच कोई रक़म जमा नहीं कराई गई थी।

नरेश ने कहा, "बीच वाली रक़म का तो कहा जा सकता है कि उस ने वोरा से सौ किया है, परन्तु शेष इतनी बड़ी रशि क्यों निकाली? वह भी इतनी जल्दी जल्दी!"

मैं ने कहा, "हो सकता है कि उस ने सब पैसा सुन्दर पर ख़र्च किया हो।"

नरेश ख़ामोश हो गया।

मैं ने फिर कहा, "महाबलेश्वर में आहूजा और सुनीता सिनेमा देखने भी जाया कर थे। हमें सुनीता के पर्स से हत्या वाले दिन के सिनेमा टिकट भी मिले हैं। इन बातों यह कहा जा सकता है कि उस दिन इन दोनों का सिनेमा देखने का कार्यक्रम थ तुम ऑटोमोबाइल एसोसिएशन में जाकर जांच करो कि हम लोगों ने वारदात वा स्थान से कार के जो नाप लिये थे, वे किस मेक की कार के हो सकतेहैं?"

नरेश ने कहा, " मेरे विचार से स्वयं जाना ठीक होगा।"

उसी समय टेलिफोन की घंटी बजी। इन्सपेक्टर दारूवाला ने बताया, "प्रिन्ट डेवलप हो गये हैं, कहें तो ले आऊं।"

मैं ने कहा, "यार, उसमें पूछने की क्या बात है ? जल्दी ले आओ।"

दारूवाला नेकहा, "मैं ने सोचा पहले देखूं तो सही कि आप कार्यालय में हैं या नहीं।"

मैं ने फ़ोन रख दिया और नरेश से कहा, "सुनो, तुम एसोसिएशन के कार्यालय से होकर, आहूजा से मिलते आओ...... परन्तु रुको; दारूवाला प्रिंट ला रहा है, उनको देखकर फिर हम दोनों साथ निकलते हैं। मैं सुनीता के वकील से मिलने जाऊंगा।"

कुछ ही समय में दारूवाला आ गया। वह अपने साथ १३ फ़ोटो लाया था। कई जगह के प्रिन्ट एक दूसरे पर चढ़े थे। गोदरेज की अलमारी और तिजोरी के हैंडल पर अंगुलियों के निशान की बनावट से लग रहा था कि ये ज़नाना अंगुलियां हैं। उन के ऊपर कुछ मर्दाना प्रिन्ट स्पष्ट थे। उन से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अन्त में किसी पुरुष ने ही हैंडल खोला है और फिर बन्द किया है। नरेश ने भी मेरे मत की पुष्टि की। मुझे एक दूसरा विचार आया।

मैं ने कहा, "अब एक काम करो। तुम सुन्दर आहूजा से मिलो। उसे बताओ कि श्रीमती भाटिया की हत्या हुई है और इस बारे में उस से हमें कुछ पूछ ताछ करनी है। इसलिये वह पुलिस थाने पहुंचे। मेरी इस केबिन का हैंडल बिल्कुल साफ़ करवा देते हैं। चपरासी को बता दो कि जैसे ही तुम्हें आता देखे, यहां से खिसक जाये। तुम भी कुछ ऐसा करना ताकि सुन्दर पहले हैंडल पर आ जाये। उस के बाद तुम कुंडे को खींच कर दरवाज़ा खोलना। ऐसा करने से न केवल हम लोग उस से पूछ ताछ कर सकेंगे परंतु हमें उस की अंगुलियों के निशान भी मिल जायेंगे।"

"यह तो ठीक है, परन्तु अंगुलियों के निशान क्यों ?"

" यही तो मुख्य बात है कि देखें कि सुनीता के सोलह हजार कहां गये? उस अलमारी और तिजोरी पर किस के निशान हैं, ?"

" हो सकता है कि सुनीता ने स्वयं पैसे आहूजा को दिये हों ?"

" देखते हैं, मेरी एक थियरी है।"

"अच्छा तो फिर मैं चलूं ?"

"तुम ने सुन्दर का पता तो नहीं लिया।"

"ओह।"

"वह शुक्रवार पेठ में कहीं रहता है, पक्का पता नहीं है।"

"अच्छा मैं ढूंढ लूंगा।"

"और हां, पांच बजे से पहले नहीं आना क्योंकि मैं शायद तब तक लौट न सकूं।"

"ठीक।" इतना कह कर वह निकल गया।

मैं ने दारूवाला से कहा, "तुम शाम को पांच बजे यहां आ जाना और पास वाले कमरे में सेक्रेटरी के साथ बैठना।"

"ठीक है। फ़ोटोग्राफ़ तो उस के जाने के बाद ही लेंगे?"

"हाँ, और परिणाम भी आज ही चाहिये।"

"यह सब कुछ तो हो जायेगा।" दारूवाला विदा लेकर चला गया।

मैं ने इन्टरकाम पर सेक्रेटरी को कुछ निर्देश दिये कि शाम को पौने पांच बजे मेरी केबिन का हैंडल और कुंडा बिल्कुल साफ़ करवा दे। उसके बाद यदि वह मेरी केबिन में आये तो कुंडे को खींच कर दरवाज़ा खोले। हैंडल को हाथ भी नहीं लगाये। और यदि मुझे लौटने में देर हो जाये तो आगंतुकों को अपने कमरे में बिठाये। और अभी फ़ोन पर श्रीमती भाटिया के वकील मिस्टर जावा से बात कराये। उस के बाद मैं ने मिस्टर जावा से फ़ोन पर बात की। मैं ने कहा कि मैं इसी समय उस से मिलना चाहता हूं।

उस ने कहा "कभी भी आ जाइये।"

मैं बाहर आकर कार में बैठा।

जावा का कार्यालय बिल्डिंग की तीसरी मंज़िल पर था। मैं लिफ़्ट में बैठ कर ऊपर पहुंचा। कार्यालय के अन्दर एक केबिन थी। बाहर एक क्लर्क बैठा था। मैं ने क्लर्क से कहा, "मुझे मिस्टर जावा से मिलना है।"

क्लर्क ने पूछा - "आप का नाम?"

"इन्सपेक्टर नावाणी, मिस्टर जावा मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"पांच मिनट बैठिये। केबिन में एक व्यक्ति गया है। वह बाहर निकले फिर आप जाना।"

मैं चुप चाप उस के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। वह मुझे घूर कर मेरा परीक्षण करने लगा, और पूछा, "कहिये, कौन सा केस है। सिविल या क्रिमिनल ?"

मैं ने कहा, "पुलिस का सम्बंध केवल क्रिम्नल केसों से होता है।"

"वंडरफुल, किस के बारे में ?"

"मुझे श्रीमती भाटिया की वसीयत आदि के बारे में पूछना है।"

"यह तो सिविल केस है।" उस ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

"तुझे मालूम होना चाहिये कि श्रीमती भाटिया की हत्या हुई है।"

"बहुत ही आश्चर्यजनक ! फिर तो वंडरफुल क्रिम्नल केस कहलायेगा। सच बताऊं मिस्टर नावाणी, मुझे क्रिमिनल केसों का बहुत शौक़ है। जब देखता हूं कि कोई होशयार वकील बहस में गवाहों को उड़ा देता है तो मुझे बहुत आनंद आता है। साथ ही गवाहों पर गुस्सा भी आता है और सरकारी वकील पर दया। मेरे मन में आता है कि एक बार मैं किसी का गवाह बन जांऊ, फिर देखना कैसे बचाव पक्ष को धूल चटाता हूं।"

मैं बोर होने लगा। मैं ने कहा, "मुझे श्रीमती भाटिया की वसीयत के बारे में पूछना है।"

"उस दिन भी तो यही बात थी न। सरकारी वकील से छोटी-सी चूक हो गई। परन्तु वह भी क्या करता। केस ही आश्चर्यजनक था।"

मैं ने थोड़ा झुंझलाते हुए कहा, "परन्तु इन बातों से मेरा क्या वास्ता ?"

"वास्ता ? वास्ता तो बहुत है, परन्तु आप हम वकीलों की बातें नही समझेंगे कि क्यों हम लंदन के केस में दिये गये निर्णय का संदर्भ यहां पूना में प्रस्तुत करतेहैं। पस्थितियां भले ही एक जैसी हों, परन्तु बिल्कुल वही तो नहीं होंगी। यदि एक जज भूल करे तो सभी जज उसे दोहराते रहें ,संदर्भ देने के लिये ; हम वकीलों की यही इच्छा रहती है।"

"सो क्या?"

" यही तो बता रहा हूं , श्रीमती भाटिया की भी अजीब बात है। उस ने कोइ वसीयत नहीं की, परन्तु जीते जी सारी सम्पत्ति अपने पति को सौंप (Assign) दी। उस के बाद कहा कि पति को तालक़ देना है। फिर एक व्यक्ति आया , कहने लगा , यह समर्पण (Assignment) निरस्त करना है। परन्तु श्रीमान कमान से निकला तीर कहीं वापिस लौटता है ?"

मैं ने पूछा "निरस्त करवाने वाला व्यक्ति कौन था ? मिस्टर भाटिया ?"

"नहीं ! कह रहा था कि उसे श्रीमती भाटिया ने भेजा है। नाम का मुझे पता नहीं।" केबिन का दरवाजा खुला और एक व्यक्ति बाहर निकल गया। मैं केबिन में अन्दर घुसा। मिस्टर जावा उठ खड़े हुए और हाथ मिलाकर सामने कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

जावा ने कहा, "कहिये कैसे आना हुआ ?"

मैंने ने कहा, "आप को मालूम होगा कि श्रीमती भाटिया की हत्या हुई है।"

"हत्या ? मुझे तो आत्महत्या का पता था।"

"पहले आत्महत्या ही मानी गई थी , परन्तु बाद में यह प्रमाणित हो चुका है कि उस की हत्या की गई है।"

"कहिये, मैं क्या मदद कर सकता हूं ?"

"आप ने कुछ दिन पहले श्रीमती भाटिया की सम्पत्ति का निपटारा किया है। उस बारे में पूछना है।"

"वह तो मृत्यु के काफ़ी दिन पहले उस ने मिस्टर भाटिया को सारी सम्पत्ति उपहार स्वरूप दे दी थी।"

"उस का कोई कारण ?"

" कारण तो उस ने कुछ नहीं बताया , परन्तु मैं समझता हूं कि शायद मिस्टर भाटिया ने यह शर्त रखी थी कि 'यदि पूरी सम्पत्ति मेरे नाम कर दो तो मैं तलाक़ नामा लिख कर दे सकता हूं।' क्योंकि दो दिनों के बाद वह मेरे पास यहां आई थी, यह सलाह करने कि क्या करना चाहिये। मैं ने उसे बताया कि वर्तमान नियमों के अनुसार तलाक़नामा तब न्यायालय सुन सकता , जब दोनों पक्ष तैयार हों। इस के अलावा कुछ और भी आवश्यक शर्तें हैं, जैसे कुछ समय अलग रहना आदि। ये शर्तें भी

पूरी करनी होगी।"

"फिर?"

"वह तो कह रही थी कि अब मिसटर भाटिया बहुत कर तो मान जायेंगे। उसके पास इन्कार का कोई कारण नहीं रहा। इस बात से मैं ने समझा कि शायद सम्पत्ति का ही मुख्य प्रश्न था।"

"भला ये दस्तावेज़ सातारा में कैसे रजिस्टर हुए हैं?"

"वास्तव में श्रीमती भाटिया मेरे पास यहां आई थी। पूरी बात तय करने के पश्चात् उसने निश्चित तिथि पर कागज़ तैयार कर महाबलेश्वर लाने के लिये कहा। उस समय मैं ने सोचा कि दस्तावेज़ सातारा में रजिस्टर करवाना ठीक रहेगा। मैं ने सातारा से अपने एक मित्र को महाबलेश्वर बुलवाया। श्रीमती भाटिया के हस्ताक्षर लेने के बाद मैं ने और राणा ने गवाहों के रूप में हस्ताक्षर किये। उस के बाद मैं ने सब काग़ज़ राणा को सौंप दिये और कहा कि वह उन्हें ले जाकर सब रजिस्ट्रार सातारा के कार्यालय में रजिस्टर करवाये।"

"पहली बार जब श्रीमती भाटिया आप के पास आई थी तब क्या वह अकेली थी?"

"हाँ।"

"उसे आप का पता किसने दिया?"

"हम दोनों की जान पहचान सीधी थी। वह एक दो बार मिस्टर भाटिया के साथ मुझे किसी पार्टी में मिली थी।"

"उस के बाद कोई व्यक्ति आप के पास यह समर्पण (Assignment) निरस्त करवाने के लिये आया था क्या?"

"निरस्त करवाने कि लिये?" वह थोड़ा हिचका, फिर कहा, "नहीं, इस बारे में तो कोई व्यक्ति नहीं आया।"

"अच्छा! धन्यवाद!" कह कर मैं उठ खड़ा हुआ।

पौने पांच बजे मैं अपने कार्यालय में पहुंच गया। नरेश अभी तक वापिस नहीं लौटा

था। दारूवाला सेक्रेटरी वाले कमरे में बैठा था। मैं ने अपनी केबिन का दरवाज़ा कुं
को खींच कर खोला। फिर रूमाल निकालकर कुंडे और हैंडल दोनो को साफ़
कर दिया। चपरासी जा चुका था। ठीक आधे घंटे के बाद एक व्यक्ति ने हैंडल को
पकड़ कर दरवाज़ा खोला और अन्दर घुस कर पीछे देखने लगा। तुरन्त ही नरेश भी
अन्दर आ गया। दोनों आकर कुर्सियों पर बैठे। नरेश ने कहा, "सर, ये हैं मिस्टर
सुन्दर आहूजा और मिस्टर आहूजा, ये हैं इन्सपेक्टर नावाणी।" मैं ने उठ कर सुन्द
आहूजा से हाथ मिलाया।

मैं ने कहा, "आप को श्रीमती भाटिया की हत्या की तो ख़बर होगी?"

"हाँ। अभी तक तो मैं यह समझ रहा था कि उस ने आत्महत्या की है, परन्तु अभी
इन्सपेक्टर नरेश ने बताया कि उस की हत्या की गई है और इस बारे में आप मुझ से
पूछताछ करना चाहते हैं।"

"आप श्रीमती भाटिया को कब से जानते थे?"

"लगभग छह वर्षों से।"

"आप का उसके साथ कैसा सम्बंध रहा?"

"मतलब?"

"मैं समझता हूं कि मैं बिल्कुल स्पष्ट बोल रहा हूं?"

"हम दोनों का केवल मित्रता का सम्बंध रहा।"

"क्या यह सही नहीं है कि पहले आप उस से शादी करने वाले थे?"

"वास्तव में यह उस का मत था।"

"परन्तु आप भी उस के साथ समहत थे?"

"यह तो........."

"बेहतर होगा कि सीधा उत्तर हाँ या ना में दें।"

"ठीक, हां।"

"आप के हांगकांग जाने के बाद, उस की शादी मिस्टर भाटिया के साथ हुई। जब
यह बात आप को मालूम हुई तो आप ने क्या किया?"

"कुछ नहीं, क्योंकि उस समय मेरा शादी करने का विचार नहीं था। मैं हांगकांग में था।"

"आप हांगकांग से वापिस आने के बाद उससे मिलते थे?"

" हां इस बारे में मिस्टर भाटिया भी जानते थे"

"आप उस से जल्द जल्द मिलते थे ?"

"कह नहीं सकता जल्दी किसे कहा जाय, परन्तु कभी कभी उस को मिलने अवश्य जाता था। वास्तव में मिस्टर भाटिया से भी मेरी मित्रता हो गई थी। मैं उन के परिवार का मित्र था और न केवल श्रीमती भाटिया का।"

"आप उस के साथ महाबलेश्वर में भी मिलने जाते थे?"

"हाँ, लगभग तीन चार बार।"

"क्यों ?"

वह कुछ झुंझला उठा। कहने लगा, " उसे समझाने, कि इस प्रकार वह अपना गृहस्थ जीवन बर्बाद न करे।"

"क्यों ?"

"मैं ने अपना कर्तव्य समझा।"

"अन्तिम बार कब महाबलेश्वर गये थे?"

"१३ नवम्बर।"

"१५ नवम्बर को कहां थे?"

"यहां, पूना में।"

मैं ने कहा, "ठीक है। आप को जानकारी होगी कि यदि आप का यह बयान सही नहीं निकला तो उस का परिणाम क्या हो सकता है।"

वह उठने ही वाला था कि नरेश ने कहा, " रुकिये, मैं ने आप के स्टेशन वैगन की पिछली सीट के पास रबर मेट के नीचे एक ज़नाना चप्पल देखी है।"

वह आश्चर्य में पड़ गया। मैं ने उतावलेपन से कहा, "कहां है ?"

" वहीं पड़ी है। वास्तव में मैं आटोरिक्शा में उस के पास गया था, क्योंकि जीप नहीं

थी। लौटते समय इस के साथ स्टेशन वेगन में ही चला आया। यह ड्राइविंग में व्यस्त था तो मैं स्टेशन वैगन का निरीक्षण करने लगा। मैं ने जान बूझ कर उस समय कुछ नहीं कहा।"

"जाओ, ले आओ।"

नरेश ने कहा, "मिस्टर आहूजा, आप भी मेरे साथ चलिये।"

वे दोनों उठकर बाहर गये। वे तुरन्त ही लौट आये। मैं ने देखा दोनों ही बार केबिन का दरवाज़ा नरेश ने कुंडे को खींच कर खोला। उस के हाथ में चप्पल थी। मैं ने आहूजा से पूछा " यह चप्पल वहां कैसे आई ?" वह घबरा गया, और कहा " मुझे मालूम नहीं यहाँ कैसे आई।"

" कमाल है, वाहन आप का और आप को पता नहीं है।"

" मैं सच कह रहा हूं........"

" क्या आपने किसी महिला को लिफ़्ट दी थी ?"

" निकट समय में नहीं, परन्तु यदि दी भी हो तो क्या एक चप्पल छोड़कर वह दूसरा पहन कर चली जायेगी ?"

" आप ने कार किसी को चलाने को दी थी ?"

" नहीं।"

"अच्छी तरह याद कीजिए कि........ पिछली १५ तारीख को कार किस के पास थी ?"

"ओह !....... उस समय तो महाबलेश्वर के गैरेज में थी। तेरह तारीख़ को जब मैं सुनीता से मिलने गया था, तो कार वहाँ बिगड़ गई थी। मैं गैरेज में रखकर, बस में वापस पुना आया था, क्योंकि उस दिन मुझे वापिस आना ही था।"

" कौन सी गैरेज में ?"

" गैरेज का नाम ही महाबलेश्वर गैरेज है।"

" आपने वहां से कार कब वापिस ली ?"

" सोलह तारीख को।"

मैं ने चप्पल अपने पास रख दी। मैं ने कहा " अच्छा आप जा सकते हैं, परन्तु यह बात

याद रखिएगा कि ये सब बातें सही होनी चाहियें।"

"आप विश्वास रखिये।" इतना कहकर वह उठ खड़ा हुआ, और हाथ मिलाकर बाहर निकल गया। मैं ने देखा कि वह कुछ उलझा हुआ - सा लग रहा था। और हाथ मिलाते समय उस का हाथ कुछ कांप रहा था।

उसके जाने के बाद मैं ने इन्टरकाम पर सेक्रटरी से कहा, "श्याम, इन्सपेक्टर दारूवाला को यहां भेजो, उस से कहो कि कुंडे को खींच कर दरवाज़ा खोले........ और हां महाबलेश्वर में क्रिश्चन से बात कराओ।"

कुछ ही समय में दारूवाला हैंडल के फ़िंगर प्रिन्ट लेने में व्यस्त हो गया। नरेश ने कहा, "नावाणी, बेहतर होगा कि यह चप्पल और केस के कागज़ मेरे हवाले करो, नहीं तो पूरे केस की क्रेडिट गुप्तचर शाखा वालों को मुफ़्त में मिल जायेगी।"

मैं ने मुस्कराकर कहा, "मुफ़्त में क्यों? मैं केस पर काम नहीं कर रहा हूं क्या?"

"यह तो सही है। परन्तु औपचारिक आदेश तो नहीं है, और नाहक तुम पर छींटे न पड़ें।"

मैं ने कहा, "अब सब्र करो। यह सब कुछ अनौपचारिक है। वैसे भी यह पूरा काम Executive पुलिस का है। विशेष कर क्रिश्चन का।"

उस समय टेलिफ़ोन की घंटी बजी। मैं ने रिसीवर उठाया। ट्रंककाल लग चुका था क्रिश्चन की आवाज़ आई। मैं ने कहा, "महाबलेश्वर गैरेज की साख कैसी है?"

"अच्छी फ़र्म है।"

"जिस कार का श्रीमती भाटिया की हत्या से सम्बंध है, वह उसी गैरेज में रिपेयर हुई है।"

"रिपेयर हुई है तो उस गैरेज का इस केस से क्या सम्बंध?"

"भाई सुनो तो सही। सम्बंध है, तब तो कह रहा हूं। कार के मालिक का कहना है कि हत्या वाले दिन से दो दिन पहले कार उसी गैरेज में रिपेयर हेतु दी गई थी और एक दिन बाद में वापिस ली गई है।"

"क्या आप को विश्वास है कि कार वही है?"

"हां! क्योकि एक चप्पल उसी कार में से मिली है और कार का मेक....." कह

कर मैं ने नरेश की ओर देखा तो उस ने सिर हिलाकर 'हां' की "....... भी वही है, जिसका अनुमान हम लोगों ने टायरों की नाप से लगाया है।"

"फिर मुझे क्या करना है?"

"तुम गैरेज वालों से मिलो। उन से पूछो कि कार कब उन के पास आई और उन्होंने कब लौटाई। विशेष कर यदि हत्या वाले दिन कार मालिक को नहीं लौटाई गई है तो उन के किसी मिकेनिक या ड्राईवर ने तो उस का उपयोग उस दिन नहीं किया है ? तहक़ीक़ात बिल्कुल विस्तृत रूप से करना।"

"अच्छा, ठीक है।"

"परन्तु सुनो तो, कार का नम्बर है बी. एम. वाई. ४२६३"

"हाँ। मैं नोट करता हूं। बी-एम-वाई-४-२-६-३ अच्छा, आज तो गैरेज बन्द हो चुका है। कल जांच कर के दोपहर बारह बजे तक फ़ोन करूंगा।"

मैं ने रिसीवर रख दिया। दारूवाला काम पूरा कर चुका था। मैं ने उसे अपने पास बैठने कि लिये कहा।चपरासी भी आ चुका था। उसे चाय लाने के लिये कहा।

मैं ने नरेश से कहा, "तुम ने कार के स्पेसिफ़िकेशन कैसे प्रमाणित किये?"

"आहूजा के पास जाने से पहले, मैं ऑटोमोबाइल एसोसिएशन में गया था। वहां से मालूम हुआ कि यह पूरी नाप स्टेंडर्ड टेन (Standard - १०) कार की होनी चाहिये। आहूजा के पास उसी मेक का स्टेशन वैगन देख कर मेरी स्वाभाविक रुचि बढ़ी क्योंकि उस मेक के स्टेशन वेगन और कार में कोई अन्तर नहीं होता। इंजन और चेसिस बिल्कुल एक जैसे ही होते हैं, केवल बॉडी का अन्तर होता है।"

"कार के बदले स्टेशन वेगन का उपयोग ज़्यादा सुविधाजनक रहा होगा।"

"यह तो स्वाभाविक है।"

मैं ने फिर दारूवाला से कहा, "ये रिज़ल्ट कब मिलेंगे?"

"कल सुबह तक। यदि आप कहें तो रात को लेट बैठ कर काम पूरा कर दूं।"

"ठीक है। कल। असल काम तो कल तुम्हारी और क्रिश्चन की रिपोर्टों के बाद शुरू होगा।" चाय आ गई। चपरासी ने लाकर टेबल पर रख दी। मैं चाय बनाने लगा।

मैं नेकहा, " परन्तु नरेश , काम इतना सरल नही है। इस केस के पीछे किसी तस्कर गैंग का हाथ है। मेरी तो इच्छा है कि औपचारिक आदेश प्राप्त कर लूं। मेरे पास तो पिस्तोल भी नहीं हैं।"

"तुम इस बात की परवाह न करो। मैं पुलिस थाने पहुंचते ही , आहूजा की गतिविधियों पर नज़र रखने के आदेश जारी कर देता हूं। पूरी तहक़ीक़ात हेडक्वार्टर से संचालित होगी। वारदात भले ही सातारा ज़िले में हुई है परन्तु मृतका पूना की थी तो सच्चा झूठा सुराग़ यहां ही मिलने की सम्भावना अधिक है। कारण देकर मैं सब कुछ नियमित करवा देता हूं।"

"मुझे तो लगता है कि आहूजा से ही सच्चा प्रमाण मिलेगा।", मैं ने उसे चाय का कप देते हुए कहा। मैं ने दूसरा कप दारूवाला की ओर भी बढ़ाया।

नरेश ने चाय पीते हुए कहा, "और वह प्रेमचन्द वोरा ?"

मैं ने कहा "हाँ !....... वह यदि केस में है तो मामला और भी उलझा हुआ समझो। वोरा के काम भी कुछ ऐसे ही हैं।"

नरेश ने कहा , "तुम्हें उस बदमाश की जो चिठ्ठी मिली , उस में किसी जहाज़ के बारे में कहा गया है। इस का अर्थ यह निकलता है कि कुछ तस्करी आदि का मामला भी है। वोरा तो इस बात के अधिक करीब है , परन्तु आहूजा भी हो सकता है।"

" कैसे?"

" क्योंकि वह कोई धंधा आदि नहीं करता। किसी भी काम में व्यस्त न होने के बावजूद वह कार रखे हुए है। है तो अकेला व्यक्ति। परन्तु प्रश्न यह है कि वह कार कैसे मेनटेन कर रहा है ?"

" सुनीता जो उसे पैसे देती थी।"

" बेशक ! परन्तु सुनीता उसे सदैव पैसे देती रहेगी यह आहूजा को भी विश्वास नहीं होगा। इसके अलावा सुनीता उसे कितने पैसे देती थी , यह भी कहा नहीं जा सकता।"

" ऐसा नहीं है। मैं ने तुम्हें सुनीता के बैंक अकाऊंट का विवरण दिखाया था। उस ने समय समय पर आवश्यकता से अधिक पैसे निकाले हैं।"

" बराबर। यदि वह भी किसी गैंग से सम्बधित थी तो हो सकता है कि कोई उसे ब्लैकमेल कर रहा हो।"

" ऐसा भी हो सकता है कि उस गैंग की ओर से आहूजा ब्लैकमेल कर रहा हो या वोरा या दोनों।"

" यह तो इस समय कहना कठिन है।"

मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ पलों की शांति के बाद मैं ने कहा, " परन्तु उन गैंग वालों को मुझे धमकाने की क्या आवश्यकता थी ?"

" यह तो स्वाभाविक है। उन लोगों ने आत्महत्या प्रचारित की, और तुम हत्या प्रमाणित कर रहे हो। उन को यह बैठ गया है कि कहीं तुम इस बात की तह तक न पहुंच जाओ।"

"नहीं। मैं तो ऐसा समझ रहा हूं कि उन्होंने देखा कि हम लोग बात के बिल्कुल समीप आ पहुंचे हैं। इसलिये उन्होंने और कोई चारा न देखकर धमकी से काम लेने का सोचा।"

" क्या तुम समझ रहे हो कि हम लोग बात के समीप आ पहुंचे हैं ?"

" अभी नहीं। उस समय उन लोगों ने सोचा तब धमकी दी थी।"

" उस समय तो हमें कई बातों की जानकारी भी नहीं थी। हम लोग तब शुरुआत ही कर रहे थे।"

" शुरुआत तो कर दी थी नरेश .... वे समझ रहे थे कि हम लोग समीप पहुंच चुके हैं .... मैं कुछ सोच रहा हूं .... परन्तु कोई बात पक्की तरह नहीं सूझ रही।"

कुछ पल बिल्कुल शांति रही। नरेश ने कहा "अच्छा, तुम सोचो मैं चलता हूं।" वह उठ खड़ा हुआ। उसने दारूवाला से कहा, "जीप में चल रहे हो या तुम मोटर साईकल लाये हो?" वह भी उठ खड़ हुआ। कहने लगा, " चलो, मुझे भी हेडक्वार्टर चलना है।"

वे दोनों बिदा लेकर चले गये। मैं यूं ही विचारों में डूबा रहा।

■

७. गैंग

मैं दूसरे दिन ठीक ग्यारह बजे कार्यालय पहुंचा। डाक आदि देखकर दारूवाला को फोन किया। मैं ने उसे तुरन्त कार्यालय में आने को कहकर फ़ोन रख दिया। सेक्रेटरी को बुलाकर उसे निपटारा करने हेतु डाक दी और कुछ आवश्यक पत्रों के उत्तर लिखवाने लगा। वह मेरे सामने कुर्सी पर बैठा था। मैं ने कहा, " टेलिफ़ोन लाइन सीधे मेरे फ़ोन से जोड़कर आओ।"

वह स्विच बोर्ड में आवश्यक फेर बदल कर लौट आया। अभी डिक्टेशन पूरी ही नहीं हुई थी कि दारूवाला आ गया। मैं ने उसे सामने पड़ी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, और श्याम से कहा, "तुम अभी जाओ, बाद में तुम्हें बुलाता हूं।" उस के जाने के बाद दारूवाला से कहा, "क्यों, सब प्रिन्ट तैयार हो गये?"

"हां, कल वाले प्रिन्ट की मैं ने श्रीमती भाटिया के घर से मिले प्रिन्ट से मिलान भी कर लिया है।"

"फिर?"

"मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं ये सब कल वाली प्रिन्ट और गोदरेज की अलमारी तथा तिजोरी के प्रिन्टस् समान हैं।"

"अच्छा ये प्रिन्ट घर में मिली किसी ओर प्रिन्ट से मिल रही है?"

"नहीं, उसका कारण यह है कि अलमारी को छोड़कर जो अन्य प्रिन्ट घर में से मिले हैं, वे स्पष्ट नहीं हैं। एक के ऊपर दूसरे प्रिन्ट हैं।" तब फ़ोन की घंटी बजी। क्रिश्चन का कॉल था। कहने लगा, " मैं ने जांच की। यह कार हत्या वाले दिन गैरेज से बाहर निकली थी।" उस समय केबिन का दरवाज़ा खुला और नरेश केबिन में प्रविष्ट हुआ। मैं ने फोन में कहा, "एक मिनट।" फिर रिसीवर पर हाथ रख कर.

नरेश से कहा, "श्याम के केबिन में जाकर फ़ोन का रिसीवर उठा कर बातें सुनो।" वह उल्टे पैर लौट गया। मैं ने टेलिफोन में कहा - "हाँ, यह कैसे?"

"उस दिन सुबह को कार मालिक अर्थात मिस्टर सुंदर आहूजा ने पूना से गैरेज वालों को ट्रंक काल किया था कि कार दो तीन घंटे में तैयार कर श्रीमती भाटिया के बंगले में पहुंचा दो।"

"अर्थात् पंद्रह तारीख को?"

"जी हाँ।"

"श्रीमती भाटिया के बंगले पर क्यों?"

"मिस्टर आहूजा प्राय: वहां आते जाते रहते थे। गैरेज वालों ने पहले भी एक दो बार इस प्रकार कार वहां छोड़ी थी। और वास्तव में इस बार भी यह कार उसी बंगले से लाये थे।"

"कार छोड़ने कौन गया था?"

"गैरेज का कोई मिकैनिक।"

"किस समय?"

"मैं ने उस मिकैनिक से पूछा। उस का कहना है कि वह एक बजे मध्याह्न भोजन के लिये घर जाता है। उस दिन वह कार लेकर घर गया था और लौटते समय कार श्रीमती भाटिया के घर छोड़ आया। उस के अनुसार उसे घंटे से अधिक समय नहीं लगा होगा।"

"क्या उस समय आहूजा बंगले पर था?"

"इस बात की उसे जानकारी नहीं है। उस का कहना है कि वह कार लेकर बंगले के गेट से घुस कर पोर्च तक पहुंचा और हार्न बजाया तो श्रीमती भाटिया ने खिड़की में से झांक कर पूछा, 'क्या है।' मिकेनिक ने उसे बताया कि आहूजा का आज सुबह फ़ोन आया था कि कार आप के बंगले पर पहुंचाई जाये। श्रीमती भाटिया ने उस से कहा, अच्छा चाबी कार में रख दो। उस के बाद वह कार रखकर चला अया।"

"फिर यह कैसे हुआ कि उन्होंने डिलिवरी १६ तारीख को दी।"

"उन का कहना है कि दूसरे दिन सुबह को गैरेज खोलते समय उन्हें कार बाहर खड़ी मिली और चाबियां गैरेज के दरवाज़े से अन्दर फेंकी हुई मिलीं। उन लोगों ने पहले यह समझा कि शायद कार में कोई मिस्टेक है, इस कारण आहूजा समय से पहले आकर रख गया। क्योंकि उन्हे मालूम नहीं हो सका कि कौन सा डिफ़ेक्ट है, उन लोगों ने कार अन्दर खड़ी कर दी, जब तक आहूजा आये।"

"गैरेज में चौकीदार होगा?"

“नहीं ,इतनी बड़ी गैरेज नहीं है।”

“अच्छा , उन्होंने यह बात आहूजा को बताई तो उसने क्या कहा ?”

“हाँ , वह १६ तारीख की सुबह साढ़ेआठ से नौ बजे के बीच कार की डिलीवरी लेने पहुंचा तो उन लोगों ने उस से पहला प्रश्न किया कि वह कार बिना बताए क्यों रख गया ? आहूजा को बहुत आश्चर्य हुआ था और पूरी बात सुनने के बाद उस ने कहा था कि उस ने पूना से कोई फ़ोन नहीं किया कि कार श्रीमती भाटिया के बंगले पर छोड़ आओ। यह भी हक़ीक़त है कि वह इस प्रकार कई बार निर्देश दे चुका था , परन्तु इस बार नहीं दिया।”

“ समय के बारे में क्या उन्हें विश्वास है कि वह सुबह साढ़े आठ से नौ बजे के बीच आया था ?”

“ हां, वे पूरे आठ बजे गैरेज खोलते हैं और कह रहे हैं कि आहूजा लगभग आधे पौने घंटे बाद आया था।”

“ अच्छा , आहूजा के कहने पर गैरेज वालों ने क्या यह आवश्यक नहीं समझा कि पुलिस में इस वारदात की रिपोर्ट करें , हो सकता था कि कार किसी अपराध के काम में लाई गई हो।”

“ इस बारे में मैं ने उन्हें धमकाया है। उन का कहना है कि यह उन की साख का सवाल था और आहूजा ने भी उन्हें मना किया था कि पुलिस में रिपोर्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

“वह, उन का नियमित ग्राहक होगा।”

“जी हाँ।”

“ख़ैर तुम उन से निपटो। और कोई ख़ास बात ?”

“ हां , गैरेज वालों का कहना है कि कार रिपेयर का जितना भी बिल होता था, आहूजा कैश भुगतान करता था। एक बार तो पांच सौ रुपये तक की राशि भी कैश अदा की थी।”

“कार की पूरी मरम्मत वहां करवाता था क्या ?”

"हाँ, प्राय: आता जाता रहता था।"

"कुल कितनी बार उसने कार की मरम्मत करवाई थी?"

"अन्तिम तीसरी बार थी।"

"ख़ैर, कैश इत्यादि देना कोई बड़ी बात नहीं है।"

"मैं ने इस लिये पूछा कि वह पैसे इत्यादि कैसे देता था ताकि मालूम हो सके कि पार्टी कैसी है, वग़ैरह।"

"अच्छा, बाय।" कह कर मैं ने फ़ोन रख दिया।

नरेश भी पास वाली केबिन से मेरे पास आ गया। मैं ने कहा, "नरेश, लगता है आहूजा कुछ नाटक कर रहा है। पहले कार गैरेज खुलने के पहले ही रख जाता है। फिर एकदम गैरेज खुलते ही उसकी डिलिवरी लेने जाता है।"

"यही तो आश्चर्य हो रहा है। सुबह इतनी जल्दी डिलिवरी लेने गया है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि रात वह महाबेलश्वर में ही था।"

"गुड पुवाइंट।"

दारूवाला से फ़िंगर प्रिन्ट के फ़ोटो लेकर हम लोग उन्हें अच्छी तरह देखने लगे।

मैं ने कहा, "दारूवाला, मैं ये सब अपने पास रखता हूं।"

"ठीक है, अच्छा मैं चलूं?"

"अच्छा।" मैं ने कहा वह उठा और सलाम कर चला गया।

नरेश ने कहा, "आहूजा होटल डी-पेरिस में अधिकतर रोज़ शाम को जाता है और उस का जाना इतना नियमित है, मानो वहां नौकरी करता हो। वह रोज़ पूरे समय पर पहुंचता है।"

"यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"तुम को तो पता है कि पुलिस यदि सच्चाई से काम करे तो सब कुछ सरल है। मैं ने कल अपने दो सब इन्सपेक्टरों से बात की उन लोगों ने जांच कर आज सुबह मुझे पूरी जानकारी दी। उन्हें कुछ जानकारी होटल के स्टाफ से मिली और कुछ शुक्रवार पेठ के लोगों से। आहूजा यार है, विशेष कर होटल वालों, सिनेमा वालों और पुलिस वालों के लिये।"

"अच्छा, वह वहां कब तक रहता है?"

"रात्रि के बारह भी हों, सुबह का एक भी हो। कई बार तो घर ही नहीं जाता।"

"पैरिस होटल की साख कैसी है?"

"वहां का मेनेजर कोई मिस्टर डिसूज़ा है। उसे किसी जालसाज़ी के प्रकरण में सज़ा भी हुई थी। आम तौर पर तो होटल वालों की कोई शिकायत नहीं आई है। वैसे तो होटल की साख आम आदमियों में अच्छी है। प्रायः विदेशी पर्यटक और रहन सहन के शौक़ीन यहां आते रहते हैं। सप्ताह में एक दो बार डिनर और डांस का कार्यक्रम भी होता है।"

"और क्या?"

"प्रेमचन्द वोरा की रिपोर्ट अभी नहीं आई है।"

"खैर अभी मेरी रुचि आहूजा में अधिक है।"

"क्यों?"

"मैं ने जो कुछ कल कहा था, आज की रिपोर्टों के आधार पर बिल्कुल सही निकलता है।"

"तुम्हारा मतलब कि हत्या आहूजा ने की है?"

"यह तो अभी देखना है।"

"यह सब कुछ पैसों के कारण ही हुआ है?" नरेश ने कहा "१६ हज़ार बराबर गुम हैं परन्तु सोना और जवाहरात आदि वैसे के वैसे पड़े हैं।"

"यह तो केवल इसलिये ताकि आत्महत्या प्रमाणित हो सके। यदि ये सब चीज़ें गुम होतीं तो चोरी के साथ हत्या की कड़ी सरलता से मिल जाती।"

"केवल सोलह हज़ार के लिये हत्या?"

"नहीं, केवल सोलह हज़ार के लिये नहीं। सुनीता ने उस की उम्मीदों पर पानी फेरा था। इस हत्या का कारण निराशा और ना उम्मीदी ही है क्योंकि सुनीता से शादी करने के बाद उस की सम्पत्ति से न जाने उस ने क्या क्या मौज उडाने की प्लानिंग की होगी। कर्ज़ा लिया होगा। परन्तु उस की पूरी योजना फेल हो गई। इस लिये ही शायद उस ने गुस्से में यह कुकृत्य किया है।"

"................."

"वैसे भी आहूजा जैसा इन्सान क्या नहीं कर सकता? सोलह हज़ार तो बड़ी बात है थोड़ी सी राशि के लिये भी हत्या कर सकता है। ऐसे ऐयाश व्यक्ति हमेशा दूसरों के पैसों पर पलते हैं। उन का हाथ सदैव तंग रहता है और कर्ज़ा देनेवालों की उचित चाहे अनुचित मांगों को मानने के लिये सदैव तैयार रहते हैं। उन्हें कर्ज़ा देनेवाले प्राय: ब्लैकमेलर होते हैं।"

"परन्तु वह गैंग कौन सी है?"

"यह एक प्रश्न नहीं परन्तु ऐसे कई प्रश्न हैं। यदि आहूजा हत्यारा नहीं है तो हर प्रश्न का उत्तर कठिन है।"

"क्या तुम्हें अभी भी शक है कि आहूजा हत्यारा नहीं है?"

"अब तो शक की कोई बात ही नहीं रही है। परन्तु हमारा मतलब केवल आहूजा को गिरफ़तार करने से पूरा नहीं हो सकेगा। यह केवल हत्या का मामला नहीं दिखता। प्रेमचंन्द वोरा का तस्करों से सम्बंध रहा है। आहूजा की आय दिख नहीं रही है तो भी वह अच्छे से अच्छा जीवन बिता रहा है। होटल वालों की साख शत प्रतिशत सही नहीं है। ये सब बातें सोचनेसे मैं समझता हूं कि इस गैंग की चेतावनी को गंम्भीरता से लेना चाहिये।"

"मेरी इच्छा है कि होटल पैरिस से जांच की जाये कि वह प्रति दिन वहां क्यों जाता है?"

"नहीं, मेरी इच्छा है कि एक बार स्वयं चल कर देखा जाये कि वह क्या करता है। उस के बाद पूछताछ की जाय।"

"अच्छा, तो अब जनाब का दिल ग्राऊंड वर्क करने को कह रहा है।" नरेश मुस्करा रहा था।

"ऐसा नहीं है। मैं बात की तह तक जाना चाहता हूं। यदि होटल वाले स्वयं किसी अपराध में उस के साथ सम्मिलित हैं तो सच का पता कभी नहीं चल पायेगा। पूछताछ करने से तो वे सतर्क हो जायेंगे।"

"फिर आज शाम को?"

"हाँ, मैं अकेला ही जाऊंगा। तुम तीन पुलिस वालों को सादे कपड़ों में बाहर बिठा देना। ऐसे सिपाही चुनना जिन्हें उस क्षेत्र में कोई पहचान न सके। उन को मुझ से मिलवा देना, ताकि आवश्यकता पड़ने पर मैं उनकी सहायता ले सकूं।"

"ठीक है।" ■

८. वास्तविकता या .....

शाम को साढ़े छह बजे मैं होटल पेरिस पहुंच गया। बत्तियां जलनी शुरू हो गई थीं। होटल के बाहर एक बोर्ड स्टूल पर खड़ा किया गया था , " जाम सेशन डाईन एण्ड डांस।" मैं फ़ुल सूट में आया था। होटल का दरवाज़ा एक बड़े हाल में खुल रहा था। दरवाज़े के पास काफ़ी प्रकाश था। बाक़ी पूरे हाल में बिल्कुल धीमा प्रकाश था। हाल की दूसरी ओर फ़र्श से लगभग एक फुट ऊंचा एक चौड़ा स्टेज बना हुआ था, जिस पर कई जोड़े डान्स कर रहे थे। स्टेज के एक कोने में बैंड था। बिल्कुल धीमा संगीत चल रहा था और बीच बीच में कुछ तेज़ भी हो रहा था। डान्स करने वाले संगीत से ताल मिला रहे थे। मैं कुछ मिनट यह सब देखता रहा। फिर पूरे हाल का निरीक्षण किया। कहीं पर भी आहूजा नहीं दिखा। बायीं ओर का टेबल ख़ाली था। मैं आगे बढ़कर दीवार के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया। ऐसा करने से एक ही समय में बिना मुड़े मैं स्टेज और दरवाज़े को देख सकता था। केवल बीच बीच में गर्दन मोड़ने की आवश्यकता थी। शेष बैठे हुए लोगों की पीठ दरवाज़े की ओर थी। वेटर आदेश लेने पहुंचा। मैं ने उसे एस्प्रेसो काफ़ी और बटर टोस्ट लाने को कहा। मेरा ध्यान डांस में बिल्कुल नहीं था। मैं बीच बीच में दरवाज़े की ओर देखने लगा। सामने खड़ा स्टीवार्ड बार बार मेरी ओर देख रहा था। उस ने शायद मेरा मतलब समझ लिया था कि मुझे किसी के आने का इन्तज़ार है। काफ़ी और बटर टोस्ट आ गये। मैं अनमना - सा खाने लगा। अभी दो टुकड़े ही खाये होंगे कि आहूजा अन्दर घुसा। दरवाज़े के तेज़ प्रकाश में उस का चेहरा साफ़ दिख रहा था। ब्लैक रंग का चेक्स वाला फ़ुल सूट पहने हुए था। क्लीन शेव , टाई का कलर उस की पतली मूछों से मैच कर रहा था। क्रिम लगाने के कारण उस के बाल चमक रहे थे। मुझे लगा मैं ने अभी पहली बार उसे घूर कर देखा है। वह जैसे ही अन्दर घुसा तो मैं ने नज़रें झुका कर काफ़ी का कप मुंह से चिपका दिया। प्लेट के घेरे में मेरा चेहरा काफ़ी ढंक गया। वह चारों ओर देखता हुआ अन्दर आने लगा। उस ने एक दो से 'हाई' 'हेलो' किया। मुझे लगा वह सीधा मेरे टेबल की ओर आ रहा है। मैं खुद को सम्हालने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु वह टेबल को लांघ कर सीधा स्टेज और हाल की दीवार के बीच में बायीं ओर बनी लॉबी में चला गया। मैं ने जल्दी जल्दी काफ़ी पी, कुछ मिनटों के बाद उठा, ताकि किसी को शक न हो। मैं लॉबी के अन्दर गया, थोड़ा चलने पर मैं ने एक बोर्ड देखा .एक तीर के निशान पर 'क्लांक रूम' लिखा था और अन्दर जाने का इशारा किया हुआ था।

मैं आगे जाने लगा। कुछ ही क़दम चलने के बाद वह लॉबी समाप्त हो गई। फिर बायं ओर एक संकीर्ण गली शुरू हो रही थी। मैं उसमें घुसा। सामने क्लॉक रूम का बो चमक रहा था। मैं सीधा उस ओर बढ़ा। दायीं ओर एक दूसरा दरवाज़ा था, जो बन्द था उसके ऊपर लाल अक्षरों वाला एक बोर्ड चमक रहा था - 'नो एडमिशन।' मैं सीध क्लॉक रूम में गया। वहां कोई नहीं था। मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि आहूज उस बन्द रूम में ही गया है। आस पास कोई दिख नहीं रहा था। मैं ने उस रूम में घुस का विचार किया। मेरा दिल एक क्षण के लिए धड़का। उनका गुप्त अड्डा तो नहीं है मुझे उस समय पिस्तौल न होने का एहसास हुआ। भले ही बाहर 'नो एडमिशन लिखा है, परन्तु कोई चौकीदार तो है नहीं। शायद दरवाज़ा बन्द हो। मैं हिम्मत कर आगे बढ़ा। हैंडल घुमाकर दरवाज़ा खोला। अन्दर चारों ओर अंधेरा था। केवल दू धीमी रोशनी दिख रही थी। मैंने जैसे ही अन्दर पैर रखा तो किसी ने मुझे ज़ोरदा धक्का दिया। मैं बाहर आ कर गिरा। अभी खुद को सम्हाल कर उठने का प्रयत्न कर ह रहा था कि एक ज़ोरदार घूंसा आकर मेरी खोपड़ी से टकराया। मैं झुंझला उठा। म जोश में उस हमलावर पर वार करने के लिये तैयार हुआ। सिर उठाकर देखा तो वह स्टीवार्ड खड़ा था। अभी मैं कुछ करूं अथवा वह आगे बढ़े ही बढ़े कि अन्दर रूम में स आवाज़ आई "अरे रुको रुको..." ऐसे ही आहूजा बाहर निकल आया। उस ने स्टीवा से कहा " द्वारिका, तेरा दिमाग़ तो ख़राब नहीं हुआ है, यह मेरा मेहमान है।" द्वारिका का सारा जोश ठंडा पड़ गया।

वह कनफ्यूज़ हो गया। कहने लगा, "सर, यह आपके साथ तो नहीं आया था। मु क्या मालूम कि यह आप का महेमान है। इस ने जान बूझ कर इस रूम में घुसने क प्रयत्न किया।"

"परन्तु उस समय तुम इन का ध्यान बोर्ड की ओर खिंचा सकते थे।"

द्वारिका के ललाट पर पसीने की बूंदें उभर आईं। उस ने ललाट को पोंछते हुए कहा, "आई एम वेरी सॉरी। वास्तव में मुझे इस पर शक था।" वह चला गया। आहूजा न कहा, "इस प्रकार मेरा पीछा करने की क्या आवश्यकता थी? आप यदि मुझ से पूछ कि मैं यहां क्यों आता हूं तो क्या मैं आप को सच नहीं बताता?"

मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं अपने कपड़े ठीक करने लगा। आहूजा ने कहा, "अ देखना चाहेंगे कि मैं यहां क्यों आता हूं?"

मैं ने कहा, "यह तो अवश्य देखना है। परन्तु तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं यह आया हूं।" मैं ने 'आप' की बजाय 'तुम' में बात करना पंसन्द किया।

" वास्तव में दाखिल होते ही मैं ने आपको देख लिया था , परन्तु कुछ बोला नहीं , क्योंकि मैं देखना चाहता था कि आप यहां क्या करना चाहते हैं।"

मैं आगे बढ़कर वाश बेसन में हाथ मुंह धोकर कपड़े आदि ठीक कर आया। बाहर हाल में आकर हम लोग एक ख़ाली टेबल पर बैठ गये। आहूजा ने दो कप काफ़ी के मंगवाये। मैं बिल्कुल ख़ामोश था। काफी पीने के बाद आहूजा ने कहा "अब चलिये, टाईम हो गया है।"

हम लोग उसी बन्द कमरे में घुसे। अन्दर घुसते ही मैंने देखा कि दरवाज़ेके पीछे अंधेरे में एक व्यक्ति चोकीदारी के लिये खड़ा था। उस व्यक्ति ने मेरी ओर प्रश्नवाचक उंगली उठाई, परन्तु आहूजा ने हाथ के इशारे से उस के प्रश्न का उत्तर दे दिया। मैं देख रहा था, आहूजा की यहां बहुत अच्छी जान पहचान थी। कोई उसे कुछ नहीं कह रहा था। हम लोग अन्दर बढ़ कर उस प्रकाशित गली की ओर मुड़े तो आहूजा ने कहा, "सुनिये, जो कुछ भी आप देखें, उस पर कोई गड़बड़ नहीं कीजियेगा, अन्यथा हम दोनों का जीवित निकलना कठिन है।"

उस गली में कुछ आगे बढ़ने के बाद एक सीढ़ी थी, जिससे उतर कर हम लोग एक चौड़ेहाल में पहुंचे। यह एक सिनेमा हाल था। सामने एक छोटा पर्दा था और हाल में लगभग एक सौ कुर्सियां थीं। हम लोगों को दो कुर्सियां मिल गईं। मुझे समझने में देर नहीं लगी कि यहां केवल ग़ैर कानूनी ब्लू फ़िल्म ही दिखाई जाती होगी।

फ़िल्म चालू हुई। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब मैं ने देखा ब्लू फ़िल्म नहीं अपितु कोई डाक्युमेन्टरी चालू की गई है। कुछ ही मिनटों के बाद लोगों ने बाहर निकलना शुरू किया और सारे हाल में एक धीमा शोर मच गया। मैं ने महसूस किया कि इस फ़िल्म में किसी की रुचि नहीं है।

मैं ने आहूजा से कहा, " चलो बाहर चलें।" वह एकदम उठ खड़ा हुआ। हम लोग होटल से बाहर निकल आये।

आहूजा ने कहा, "कहां चलें ?"

मैं ने कहा, "मेरे कार्यालय में।"

आहूजा का चेहरा बिल्कुल भावहीन था। हम दोनों आकर कार में बैठे। मैं ने कार स्टार्ट करते हुए कहा, "इन लोगों ने ब्लू फ़िल्म के बजाय यह डाक्युमेन्टरी फ़िल्म क्यों दिखाई ?"

"मैं समझता हूं कि शायद इन लोगों को भनक लग गई थी कि आप पुलिस
आदमी हैं।"

"वैसे ऐसा पहले भी कभी हुआ है ?"

"ऐसा कभी कभी होता है। जो लोग यहां नियमित रूप सेआते हैं , उन्हें मालूम
कि जब कभी कोई डाक्युमेन्टरी अथवा फ़ीचर फ़िल्म दिखाई जाये तब ऐसा समझ
चाहिये कि कोई गड़बड़ है।"

कुछ समय शांति रही। हम लोग कार्यालय में पहुंच गये। चौकीदार ने उठकर सला
किया। एक चाबी मेरे पास भी रहती थी। मैं ने वह चाबी चौकीदार को दी। उस
दरवाज़ा खोल कर बिजली जलाई। आहूजा को सामने पड़ी विज़िटर्स कुर्सी पर बैठ
का इशारा कर मैं उस के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। अपनी केबिन खोलने की
ने आवश्यकता नहीं समझी।

मैं ने पुछा - "तुम वहां नियमित फ़िल्म देखने जाते हो ?।"

"तो आप क्यां समझ रहे हैं कि मेरा इन लोगों के साथ कोई कारोबारी रिश्ता है
वह भी किसी अपराध में ?"

"मैं ने ऐसा तो नहीं कहा।"

"आप कहें या नहीं , परन्तु यह स्पष्ट है कि आप ने मेरे पीछे जासूस लगा रखे है
पिछले दो दिन से कोई न कोई मेरे पीछे रहता ही है और मेरी कारगुज़ारियों पर बया
दर्ज करता रहता है। आज आपने स्वयं कष्ट किया है।"

"सुनो, मैं चाहता था कि सच की तह तक मैं ख़ुद पहुंच सकूं तो अच्छा परन्तु आ
केवल तुम से ही सच उगलवाना पड़ेगा।"

"मतलब ?"

"मतलब यह कि तुम ने श्रीमती भाटिया की हत्या की है इस बात में ज़रा भी श
नहीं है। तुझे गिरफ़्तार करने से पहले मैं चाहता था कि तेरे साथियों का भी पत
लगाऊं , इसलिये अभी तक मैं ने तुझे गिरफ़्तार नहीं किया है। तुम इस समय पुलि
हिरासत में हो।"

"मैं इस कानूनी बात में नहीं जाना चाहता कि गिरफ़्तार करने से पहले मुझे वार
दिखाइये, परन्तु इतना अवश्य पूछना चाहूंगा कि आप का अनुमान किन बातों प

आधारित है ? इसके अलावा आप मेरे किन साथियों की तलाश में हैं ? मेरा कहना है कि आप कोई भी कदम उठाने से पहले मुझे अवश्य अच्छी तरह सुनिएगा।"

"इसीलिये ही मैंने यह सब किया है, नहीं तो तुम्हें गिरफ्तार करने के लिये केवल दो कानस्टेबल ही काफ़ी थे।"

"आप कैसे कह रहे हैं कि मैंने श्रीमती भाटिया की हत्या की है?"

"तुम्हें मालूम था कि श्रीमती भाटिया के पास सोलह हज़ार कैश है। वैसे वह भले ही तुम्हें पैसे देती हो, परन्तु उस दिन उस ने तुम्हें पैसे देने से इन्कार किया है, हालांकि ये पैसे लगता है कि उस ने केवल तुम्हारे लिये ही निकलवाये थे। कहो, यह सही है न?"

"यह सही है कि उस ने पैसे मेरे लिये, मेरे कहने के अनुसार ही निकलवाये थे और वायदे के अनुसार उसने वे मुझे उसी दिन दिये थे?"

"तुम ने उस से पैसे कब मांगे थे?"

"११ तारीख को फ़ोन पर मैं ने उस से पैसे मांगे थे। उस ने दूसरे दिन आने के लिये कहा। मैं १२ तारीख को गया तो उस ने अभी पैसे नहीं निकलवाये थे। १३ तारीख को निकलवा कर दिये।"

"बारह तारीख की रात तुम वहां रुके थे?"

"हाँ, होटल में।"

"जब उस ने तुम्हें पैसे देने का वायदा किया, तो क्या उस ने तुम्हें ऐसा नहीं कहा कि उस ने पूरी सम्पति भाटिया को लिख कर दे दी है। और अब उस के पास बाक़ी इतना कुछ नहीं बचा है कि समय समय पर तुम्हारी आवश्यकताएं पूरी कर सके?"

वह आश्चर्य में पड़ गया। एक क्षण के बाद उस ने कहा, "हाँ, उस ने कुछ इस प्रकार की बात अवश्य कही थी और उस समय उस ने यह भी कहा था कि यह अन्तिम बार है और अब वह कुछ नहीं दे पायेगी।"

मैं ने कहा, "उसी समय यह सुनकर कि उस ने सारी सम्पत्ति भाटिया को लिखकर दे दी है, तुम खफा भी हो गये थे। अच्छा तुम यह बता सकते हो कि तुम ने सोलह हज़ार उस से क्यों मांगे थे?"

"मैं समझता हूं कि इस बात का केस से कोई सम्बंध नहीं है। इस लिये उत्तर देना आवश्यक नहीं समझता।"

"यही तो बात है, जिसे तुम कह रहे हो कि आवश्यक नहीं है, वास्तव में यही बात इतनी आवश्यक है जिस के कारण तुम हत्या करने के लिये भी तैयार हुए हो।"

"क्या ....?" उस का मुंह फट गया।

मैं ने फिर अपना प्रश्न दोहराया, "तुम बता सकते हो कि तुम ने उसे से सोलह हज़ार क्यों मांगे थे?"

उस ने धीमी आवाज़ में कहा, "होटल पैरिस वालों की काफ़ी उधारी हो गई थी। मैं अपनी फिज़ूल ख़र्ची पर काफ़ी पछतावा कर चुका था और इस बार प्रण किया था कि सुनीता से पैसे लेकर उधार चुकता कर, फिर ये काम बन्द कर दूंगा।"

"जैसे ब्लू फ़िल्म देखना, शराब पीना इत्यादि। गांजा, चरस भी पीते हो क्या?"

"नहीं, परन्तु जो कुछ भी फ़ालतू ख़र्च है, बन्द करने का प्रण किया।"

"परन्तु आज तक तुम ने प्रण का पालन नहीं किया है।" मैं ने टोकते हुए कहा। उस ने कोई उत्तर नहीं दिया।

मुझे अभी तक यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि वह कैसे इस प्रकार की फिल्में रोज़ बर्दाश्त करता होगा। अवश्य कोई दूसरा मतलब होगा इस के होटल में नियमित रूप से रोज़ जाने का।

मैं ने कहा, "ब्लू फ़िल्म देखने के बाद वेश्यावृत्ति के लिये जाते होंगे?"

"बिल्कुल नहीं।"

"यह कैसे? तुमने शादी तो की नहीं है।"

"वास्तव में मुझ पर अब इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।"

मैं ने मुस्करा कर कहा, "यदि इस प्रकार दिल भर जाय तो फिर क्या होता है? उलटी।"

आहूजा ने भी मुस्करा कर कहा, "विश्वास कीजिये, यह तो केवल टाईम पास करने की बात है। न तो रोज़ देखता हूं और न कभी पूरी फ़िल्म देखता हूं।"

मैं ने फिर कहा, "क्या यह बिल्कुल आवश्यक था कि तुम इन की उधारी तत्काल चुका दो।"

"हाँ, नहीं तो न मालूम वे क्या करते। असल बदमाश हैं। सच कह रहा हूं यदि मैं

आकर बात को नहीं सम्हालता तो पता नहीं आप ही क्या हालत बनाते ।"

अब मैं कुछ नहीं बोला।

आहूजा ने कहा, "आप यह किस आधार पर कह रहे है कि सुनीता ने पैसे मेरे लिये निकलवाये थे और बाद में देने से मना कर दिया ?"

"इस बीच उसे मालूम हो गया था कि तुम उस के साथ पैसों के कारण शादी करना चाहते हो।"

"यह बात आप किस आधार पर कहते हैं ?"

"क्या यह हक़ीक़त नहीं है कि तुम वकील मिस्टर जावा के पास भाटिया को किया गया सम्पत्ति का समर्पण (Assignment) निरस्त करवाने के लिये गये थे ?"

"यह ख़बर आप को मिस्टर जावा ने दी ?"

"तुम मेरे प्रश्न का उत्तर दो।"

"हाँ, मैं ज़रूर गया था , परन्तु वह निरस्त नहीं हो सका।"

"क्या तुम ने श्रीमती भाटिया को अपने इरादे की जानकारी दी थी ?"

"नहीं, परन्तु उसे ख़बर अवश्य लग गई थी कि मुझे उस की यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं थी।"

"तुम खुद इस बात का अनुमान लगा सकते हो कि जिस महिला ने अपने पति को चैलेंज किया हो कि उस का प्रेमी उस के साथ शादी पैसे के लिये नहीं कर रहा है और वह प्रेमी उस के विश्वास को ठेस पहुंचाये तो उस महिला के मन में उस प्रेमी के प्रति कितनी नफ़रत पैदा हो सकती है।"

"परन्तु मैं ने ऐसा कुछ नहीं किया जिसके लिये उस के मन में मेरे प्रति नफरत पैदा हो। एक तो शादी की ज़िद मेरी नहीं अपितु उस की थी। दूसरा मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि जावा ने मेरे इस प्रयत्न की बात उसे नहीं बताई होगी।"

"यह तो तुम कह रहे हो न? इस प्रकार क्या, दूसरी कोई भी सफाई देने के लिये तुझे न्यायालय पूरा पूरा मौक़ा देगा।"

वह शांत रहा। मैं ने कहा, "अच्छा, यदि श्रीमती भाटिया ने स्वयं अपनी इच्छा से पैसे तुम्हें दिये तो फिर तिजोरी पर तुम्हारी उंगलियों के निशान क्यों ?"

मैं ने देखा वह बिल्कुल नर्वस होता जा रहा था। उस के बोलने में हिचक पैदा हो गयी

थी। कहने लगा, "परन्तु पैसे तो तिजोरी में से मैं ने ही निकाले थे, सुनीता की उपस्थिति में और उस के कहने पर।"

"यह कैसे हो सकता है मालकिन की उपस्थिति में तुम तिजोरी से पैसे निकालो? स्वाभाविक तो यह है कि वह स्वयं तुम्हें पैसे निकाल कर दे, यदि वह स्वयं देना चाहे तो।"

वह बिल्कुल चुप हो गया। कुछ पल के बाद उस ने कहा, "यह आप कैसे कह रहे हैं कि मैं १५ तारीख को वहां गया था?"

"क्योंकि उस दिन वह तुम्हारे साथ सिनेमा देखने जाने वाली थी। उस ने इस के लिये टिकट भी मंगवा ली थी। इसके अलावा दूसरे दिन तुम लगभग नौ बजे सुबह कार की डिलेवरी लेने महाबलेश्वर गैरेज गये थे। इस का मतलब कि तुम १५ तारीख की रात महाबलेश्वर में थे, क्योंकि पूना से पहली ट्रांस्पोर्ट की बस वहां ११ बजे पहुंचती है। कार की डिलिवरी लेना इतना जल्दी का काम नहीं है, कि तुम यहां से टैक्सी में गये होंगे।"

उसने कुछ सोचकर कहा, "देखिए, आप का अनुमान सही नहीं है। यदि वह मेरे साथ पिक्चर पर चलने के लिये तैयार थी, इसका अर्थ यह है कि हम दोनों की ग़लतफ़हमी दूर हो चुकी थी। कोई झगड़ा नहीं था। फिर तो स्वाभाविक है कि वह मुझे पैसे भी देगी जो उसने बैंक से निकाले ही मेरे लिये थे।"

"ऐसा नहीं है। जिस समय उस ने तुम्हें पैसे देने से आनाकानी की है, उसी समय ही हत्या करने का यह मलिन विचार तुम्हारे मन में उत्पन्न हुआ है, क्योंकि तुम्हें पैसे बिल्कुल आवश्यक रूप से चाहिये थे। तुम ने जानबूझ कर कार ख़राब की है और दो दिन तक श्रीमती भाटिया को, माफ़ी लेकर या किसी दूसरी प्रकार मनवा कर शायद पैसे मांगना छोड़ कर खुश किया है, यहां तक कि उसने पिक्चर पर जानेका कार्यक्रम भी बना डाला है। योजना के अनुसार तुम ने१५ तारीख को गैरेज वालों को फ़ोन किया है कि वे कार बंगले में पहुचा दें। क्योंकि तुम वहां जाने वाले थे, इसलिये श्रीमती भाटियाने अन्य सभी कार्यक्रम रद्द कर दिये और तुम्हे उस के साथ बिल्कुल अकेले में मिलने का अवसर मिल गया और तुम हत्या करने में सफल हो गये। फिर आत्महत्या का यह नाटक रचाकर तुमने यह समझा कि तुम पुलिस और दुनिया को धोखा देने में सफल हो गये हो।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि कार का हत्या से क्या सम्बंध है? मगर आप यह कैसे कह रहे हैं कि मैं ने कार जान बूझ कर ख़राब की है?"

"नहीं तो यह कैसे आवश्यक हो कि तुम कार कुछ दिनों के लिये गैरेज़ में छोड़ जाओ? क्यों अचानक ही अचानक वह कार जिस में तुम पूना से महाबलेश्वर आये हो, इतनी ख़राब हो जाए कि तुम्हे रिपेयर हो कर उसी दिन न मिल पाये?"

"ऐसा नहीं है। मेरी कार का कार्बोरिटर चोरी हो गया था। महाबलेश्वर में मेरी कार की मेक और मॉडल का वह पार्ट उपलब्ध नहीं था, इसीलिये ही मैं ने कार को गैरेज में छोड़ देने का सोचा।"

कार्बोरिटर ! मैं कुछ पलों के लिये मानो स्तब्ध रह गया। मेरी आंखों के सामने सिनेमा के पर्दे की भान्ति चित्र आते जाते रहे।

चिमनदास के गैरेज में, जब वह अंधेरे में बती जलाने का प्रयत्न कर रहा था तो उस समय नरेश ने बाहर से टार्च की रोशनी ठीक उस जगह पर फेंकी थी, जहां चिमनदास झुकने का प्रयास कर रहा था - तब वहां कार के हैंड ब्रेक के आगे एक कार्बोरिटर पड़ा था, जिसे मैं ने उस समय बेकार समझा था। मुझे उस समय ऐसा लगा था मानों चिमनदास कुछ सकपका गया है, परन्तु उस ने जब कहा कि कार की बत्तियां चालू कर रहा था तो मैं स्वाभाविक समझकर ख़ामोश रहा। अब लग रहा है कि बंगले की बिजली फ्यूज़ उड़ने के कारण नहीं गयी थी परन्तु मेन स्विच बन्द किया गया था।

मुझे विचारों में खोया हुआ देखकर आहूजा ने कहा, " मिस्टर नावाणी, मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि मुझे इस केस में बे मतलब फंसाया जा रहा है।"

मैं ने ख़ुद को सम्हालते हुए कहा, " यह तो हर अपराधी कहता है। भला तुम यह क्यों नहीं बताते कि उस दिन तुम ने पैसे तिज़ोरी में से खुद क्यों निकाले थे जबकि मालकिन मौजूद थी।"

" परन्तु यह वास्तविकता है।"

" मुझे तो यह स्वाभाविक नहीं लग रहा है।"

" परिस्थितियां ही कुछ ऐसी थीं।" कहकर उस ने सिगारेट जलाई।

मैं ने कहा, " मैं उन परिस्थितियों के बारे में जानना चाहता हूं।"

" इतना आवश्यक है क्या ? यदि न बताऊं तो?"

" मैं समझूंगा कि तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं है। इस समय जो परिस्थिति है, उस के

अनुसार हर बात तुम्हारे विरुध्द है। तुम्हारे दलील वज़नदार नहीं हैं। हत्या में तुम्हारी कार का उपयोग किया गया है, इस बात का तुम्हें भी विश्वास है। यदि तुम्हारा इस हत्या में हाथ नहीं होता तो तुम्हारा कर्तव्य बनता था कि कार के पार्ट की हुई चोरी की रिपोर्ट पुलिस में करते; और तुम कहते हो कि कार किसी तीसरे व्यक्ति के कहने पर रिपेयर होने के बाद गैरेज से एक दिन के लिये बाहर रही है। इसके लिये तुम्हारे पास कोई तर्क संगत उत्तर नहीं है। तुम ने पुलिस में इस बात की भी कोई रिपोर्ट क्यों नहीं की ? अलमारी के हैंडल पर तुम्हारी अंगलियों के निशान हैं, इस सम्बंध में भी तुम कोई उचित उत्तर नहीं दे पा रहे हो। हत्या वाले दिन - हत्या होने के पश्चात् तुम अलमारी वाले कमरे में घुसे हो। बंद करते समय जल्दी में चाबियां दरवाज़े में ही छोड़कर आ गये हो। लाश वाले स्थान पर तुम्हारे पैरों के निशान न पड़ें , इस लिये तुम पीछे की ओर से उतरे हो।"

वह बुझ गया। सिगरेट यूं ही उस के हाथ में पड़ी रही। मुरझाई आवाज़ में कहने लगा, "आप लोगों को बहुत कुछ मालूम हो गया है।" वह फिर चुप हो गया। कुछ सोचने लगा।

मैं ने कहा " फिर बताओ ना कैसे कहा जाय कि तुम्हारा हत्या से सम्बंध नहीं है ? मैं जो तुम्हें इतना बोलने का अवसर दे रहा हूं , वह केवल इसलिये कि मेरा मामले की तह तक जाने का इरादा है। अन्यथा तुम्हें गिरफ़्तार करने के लिये मेरे पास काफ़ी कारण और सबूत हैं।"

कुछ मिनटों के लिये वह शान्त हो गया। फिर उस ने बोलना शुरू किया, "वास्तविकता यह है कि सुनीता और मेरा बचपन का प्यार था। किन्हीं कारणों की वजह से हमारी शादी नहीं हो सकी और उसका मुख्य कारण था मेरा कुछ समय के लिये विदेश जाना। यहां आने के बाद मेरी जब सुनीता से मुलाक़ात हुई तो मुझे लगा कि वह अभी तक मुझे भुला नहीं पाई है। हमारी मुलाकातें बढ़ती रहीं। सुनीता की इच्छा थी कि भाटिया से तलाक़ लेकर मुझ से शादी करे। मेरी ऐसी ख़ास इच्छा नहीं थी। मुझे मालूम था कि मैं यदि किसी भी प्रकार उस से शादी करने के लिये तैयार हो जाऊंगा तो उस की मायके वाली सारी सम्पत्ति मेरी हो जायेगी। मुझे विदेश से उसी कम्पनी का दूसरी बार ऑफ़र मिला था, परन्तु मैं किसी न किसी बहाने उन से समय की मोहलत लेता रहा, केवल इसी विचार से कि सुनीता से आख़री बात तय की जाये। यदि तुरन्त शादी होने के चान्सिज़ थे, तो मुझे इन्कार नहीं था। बहरहाल मैं यहां बेरोज़गार था। सुनीता मुझे सारा खर्च पहुंचाती रहती थी। अधिकतर तो मुझे मांगने की आवश्यकता ही नही पड़ती थी, परन्तु जब कभी मांगता था तो वह कभी मना नहीं करता थी।

उस दिन भी फ़ोन पर मैं ने उस से १६ हज़ार की माँग रखी। पहली बार हुआ कि वह आनाकानी करने लगी और कहने लगी कि मैं फालतू ख़र्च घटाऊं। उस के पास अब इतना पैसा नहीं बचा है। मैं ने जब फिर कभी तकाज़ा नहीं करने का वायदा किया तो उस ने दूसरे दिन बैंक से पैसे निकलवाकर देने को कहा। उस समय इतनी बड़ी रकम स्वाभाविक रूप से उस के पास नहीं थी, परन्तु दूसरे दिन वह पैसे नहीं निकलवा सकी। मैं जब गया तो उस ने रात भर रुकने को कहा और सबेरे पैसे देने को कहा। उस रात मैं वहां होटल में ही रुका। दूसरे दिन दोपहर लगभग बारह बजे सुनीता के पास गया। उसने पैसे निकलवाकर रखे थे। हम दोनों ने साथ में खाना खाया। बाद में हमेशा की तरह सम्भोग भी किया जो वास्तव में हम लोग जब भी आपस में मिलते थे तो करते थे। मुझे रात को उस के बंगले में रहना पसन्द नहीं था, इसलिये किसी होटल में चला जाता था। सम्भोग के बाद सुनीता बिस्तर पर लेटी थी। उसे नंगा सोना अच्छा लगता था। मैं ने जब उठकर कपड़े पहने तो उस समय उस के शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं था। उस ने केवल रज़ाई ओढ़ रखी थी। मुझे जल्दी वापिस लौटना था। मैं ने उस से कहा, 'उठकर पैसे तो निकाल दो।' उस ने पर्स से चाबियों का गुच्छा निकाल कर देते हुए कहा, 'पैसे अलमारी की तिजोरी में पड़े हैं, निकाल लो।' मैं ने पैसे निकालकर बैग में डाले। सुनीता ने कहा 'दरवाज़ा बाहर से बन्द करके जाना।' दरवाज़े में कुछ ऐसा प्रकार का लॉक फिट है कि बन्द करने के बाद बाहर से चाबी के अलावा कोई खोल नहीं सके, केवल अन्दर वाला व्यक्ति खोल सकता है, (नाईट लैच)। मैं उसे एक चुम्मा देकर बाहर निकल आया और दरवाजा बन्द कर दिया। नीचे आकर मैं ने कार स्टार्ट की तो स्टार्ट नहीं हुई। अधिक ठंड होने के कारण मैं ने समझा कि शायद बैटरी काम नहीं कर रही है, परन्तु जब मैं माथापची करके थक गया तो महाबलेश्वर गैरेज वालों को ऊपर से फ़ोन किया। कुछ देर बाद गैरेज का मिकेनिक आया! कार को चेक करने के बाद उस ने कहा कि 'इसका तो कार्बोरेटर ही गुम है।' इस बात की ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया था। मिकेनिक अपनी कार से मेरी कार बांध कर ले गया। मैं भी उस के साथ चला गया। वहां मुझे बताया गया कि यह कार्बोरेटर पंचगनी, सातारा या पूना से मंगाना पडेगा। मुझे उस दिन आवश्यक रूप से वापिस लौटना था, इस लिये मैं कार को वहीं छोडकर बस से पूना चला आया।"

"अर्थात्, तुम पैसे १३ तारीख को ही ले आये थे?"

"हां। १५ तारीख को मुझे कार लेने के लिये जाना था। मैं ने एक दिन पहले सुनीता को फ़ोन कर दिया था, परन्तु १५ तारीख को दोपहर से पहले सुनीता का फ़ोन आया कि तुम आज नहीं आओ, क्योंकि भाटिया आनेवाला है। इसलिये मैं ने जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया?"

" परन्तु रात को तुम कैसे सुनीता के बंगले में गये?" मैं ने यूंही उस की थाह लेने के लिये एक अनर्गल प्रश्न उस की ओर फैंका।

"दर असल......." वह थोड़ा हिचका, फिर कहने लगा, "........... मैं ने सोचा कि कल कार की डिलिवरी लेने जाना ही है। क्यों न रात को ही पहुंच जाऊं। सुबह से महाबलेश्वर जाने का मूड़ तो था ही। मैं पूना से बस में गया और लगभग १० बजे रात्रि को सुनीता के बंगले पर उस से मिलने गया। मुझे मालूम था कि सिनेमा से वे लोग नौ बजे से पहले नहीं आएंगे। बंगले की सभी बत्तिया बन्द थीं। अगले गेट में से घुस कर मुख्य द्वार की ओर मुड़ ही रहा था तो मैंने देखा कि पिछला गेट भी खुला है। मैं सुनीता पर ख़फ़ा होने लगा कि उस ने अकारण ही चिमनदास जैसे व्यक्ति को छूट दे रखी है कि कम्पाऊंड से जब चाहे निकल सकता है। यदि वह कार बंगले से निकालता है तो उस का कर्तव्य बनता है कि दोनों गेट अच्छी तरह बन्द करके जाये। उस दिन दोनों गेट खुले थे। अगला गेट बन्द करने के बाद मैं दूसरा गेट बन्द करने के लिये बढ़ा।"

आहूजा का चहेरा पीला पड़ गया था। उस के स्वर में दुख अधिक था , कम्पन कम। एक पल रुकने के पश्चात् उस ने कहा, " मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब मैं ने पिछले पेड़ पर सुनीता की लाश लटकी हुई देखी। पहले तो जोश में पेड़ की ओर बढ़ ही रहा था परंतु बाद में मैं ने अपने आप को रोक लिया कि कहीं अकारण फंस न जाऊं। लग रहा था कि उस ने आत्महत्या की है। परन्तु मुझे विश्वास था कि यह कोई चाल है। मैं सुनीता को अच्छी तरह जानता था, वह कितनी भी निराशा या कष्ट में क्यों न हो, आत्महत्या का सोच भी नहीं सकती। पिछला गेट खुला छोड़कर मैं ने बंगले के भीतर जानेका विचार किया। ड्राइंग रूम का दरवाज़ा खोल कर बिना बिजली जलाये ऊपर बेड रूम की ओर गया।"

" पिछला गेट बायीं ओर है। उस ओर गया तो तुम्हें पेड़ पर लटकी लाश कैसे दिखी ?"

" खुला गेट तो दूर से ही दिख रहा था। मैं बायीं ओर जाना पसन्द नहीं करता हूं, विशेषकर रात के समय। रास्ता संकीर्ण है। पेड़ पौधे और गमले भी बहुत पड़े रहते हैं।"

" फिर ?"

" इसलिये दायीं ओर वाले रास्ते से गया। अभी मैं मुड़ा ही था कि दूर से यह दृश्य देखा चान्दनी में बिल्कुल साफ़।"

" बेडरूम की ओर क्यों गये थे?"

" केवल यह देखने के लिये कि यह सब कैसे हुआ था। और पुलिसे को फ़ोन भी करना था। अभी बेडरूम का दरवाज़ा खोला ही नहीं था कि किसी के आने की आहट सुनाई दी। आहट धीरे धीरे मेरे समीप आ रही थी। मैं घबरा गया और जल्दी बरामदेवाली खिड़की से कूद कर नीचे उत्तर आया। घबराहट में मेरी चाबियों का गुच्छा बेडरूम के दरवाज़े में ही लगा रह गया। मैं एकदम उल्टे पैर बंगले के पिछले कम्पाऊंड की दीवाल फांद कर बायें गेट से बाहर चला आया। रात होटल में बिताकर, चुपचाप सुबह को कार की डिलिवरी लेकर पूना चला आया।"

" तुम्हारे पास बंगले की कौन कौन सी चाबियां थीं ?"

" ड्राइंग रूम और बेडरूम की।"

"तुम्हें श्रीमती भाटिया ने दी थीं ?"

"जी हाँ।"

" परन्तु उस गुच्छें में तो चार चाबियां थीं।"

" दो मेरे पूना वाले फ़्लैट की हैं।"

" फिर तुम ने पुलिस को फ़ोन क्यों नहीं किया ?"

" सचमुच पहले मैं ने यही सोचा था, परन्तु फिर मैं ने सोचा कि मेरी भलाई इसी में है कि मैं चुप रहूं, कहीं अकारण ही लफ़ड़े में न पड़ जाऊं। जानेवाली चीज़ तो चली गई।"

" तुम्हारे पास फ़ोन है ?"

" यहां पूना में ?"

" हाँ।"

" नहीं, मेरे घर के सामने ही जनता गैरेज है। मैं वहीं से सुनीता को फोन करता था, और वह भी मुझे वहीं फ़ोन करती थी। आप लोग गैरेज वालों से पूछताछ कर सकते हैं। इस के अलावा सुनीता के ट्रंक कॉल बिलों से भी यह बात प्रमाणित हो सकती है। उसने मुझे जनता गैरेज में १५ तारीख को सुबह लगभग ११ बजे फोन किया था। यह दूसरी बात है कि हम दोनों के बीच जो बात चीत हुई उस का मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है कि कौन सी और क्या बातचीत हुई। परन्तु विश्वास कीजिये कि मैं १५ तारीख को रात १० बजे ही बंगले पर पहुंचा हूं और उस से पहले खेल खत्म हो चुका था।"

मेरे दिमाग़ में एक ही समय कई बातें दौड़ने लगी। उस समय रात के ११ बजे थे। मैं ने कहा, "तुम चिमनदास को जानते हो?"

"हाँ, मैं उस के बारे में सुनीता से भी सुनता रहता था। वह एक विनोदी प्रकार का व्यक्ति है। परन्तु मुझे आश्चर्य होता है कि महाबलेश्वर में उस का बीमे का क्या बिज़नेस होता होगा।"

"अच्छा, विदेश से लौटने के पश्चात् तुम्हारी और सुनीता की मुलाक़ात कैसे हुई?"

"बम्बई के एक होटल में।"

"कौन से होटल?"

"ग्रीन होटल।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह ग्रीन होटल में उस तारीख को मौजूद होगी?"

"हम लोगों का पत्र - व्यवहार चालू था। उसे मेरे वापस लौटने की तारीख़ मालूम थी। इसलिये उस ने उसी प्रकार से बम्बई जाने का कार्यक्रम बनाया।"

"वहां आप लोग आपस में अकेले में मिले थे?"

"क्या मतलब?"

"मेरा मतलब है कि बम्बई में आप लोग आपस में अकेले घूमने गये थे अथवा अकेले में मिल थे?"

"नहीं, भाटिया की उपस्थिति में हम लोग ऐसा कैसे कर सकते थे। इस के अलावा यह, सुनीता की शादी के पश्चात् हमारी पहली मुलाक़ात थी। उस का मेरे प्रति क्या रुख था, उस की भी मुझे जानकारी नहीं थी। पत्र व्यवहार तो केवले दोस्ताना प्रकार का था।"

"क्या तुम शपथपूर्वक कह सकते हो कि जो कुछ तुमने मुझे बताया है, वह बिल्कुल सच है?"

"बिल्कुल सच है, मैं शपथ ले सकता हूं।"

"तुम अभी आज़ाद हो। कल शाम को ५ बजे कार्यालय में आना कुछ और पूछना है तुम से।"

"ओह शोअर। विश्वास रखिये, मैं इस मामले में हर प्रकार की मदद देने के लिये तैयार हूं।"

हाथ मिलाकर वह बाहर चला गया। आहूजा की बातचीत में मुझे सच्चाई और दुख नज़र आ रहा था। उसका बोलना बिल्कुल साफ़ और प्रभावशाली था। यह मौक़े की तकाज़ा भी थी। उसे अपनी स्थिति साफ़ करनी थी। कुछ इसलिये और कुछ कार्बोरेटर के चिमनदास की कार में होने के कारण मुझे लग रहा था कि वह झूठ नहीं बोल रहा है। इस के अलावा अलमारी पर अुंगलियों के निशान भी उस की सच्चाई में विश्वास जगाने वाली बात थी। इतनी सतर्कता से खेल रचाने वाला हत्यारा दस्ताने तो अवश्य पहनेगा।

इसलिये मैं ने सोचा कि फ़िलहाल ढील देने में कोई हर्ज नहीं है।

■

९. शुरुआत

आहूजा के जाने के बाद मैंने फ़ोन करके नरेश को कार्यालय में आने के लिये कहा। उस के बाद मैं ने टेलिफ़ोन आफिस के ट्रंक बुकिंग में फ़ोन किया। वहां से आवाज़ आने पर मैं ने कहा, " मुझे मिस्टर मॉनिटर से बात करनी है।" थोड़ी देर में फ़ोन पर आवाज़ आई " येस, मॉनिटर!"

"हैलो। मैं हूं इन्सपेक्टर नावाणी, सी.आई.डी. ऑफिसर ऑन स्पेशल डयूटी।"

"कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"मुझे यहां के किसी टेलीफोन के ट्रंक कालों का विवरण चाहिये। इस महीने में उस फ़ोन से महाबलेश्वर में कब और किस किस फ़ोन पर बात की गई है।"

"मैं आपको बता सकता हूं। चालू माह का विवरण चाहिये तो आधा घंटा लगेगा इकट्ठा करने में। पिछले माह का विवरण हो तो ट्रंक काल बिल से जल्दी मिल जाता।"

"चालू महीने का है। आप भले ही आधे घंटे बाद फ़ोन किजिए। मेरा नम्बर है २३६७८ और जिसका विवरण चाहिए उसका नम्बर है २३५३७।"

उसने नम्बर दोहराकर पुष्टि करनी चाही। मैंने पुष्टि कर दी। उसने आधे घंटेबाद फोन करने का वायदा करके लाईन काट दी। मैं ने रिसीवर रख दिया और चुपचाप आराम कुर्सी पर बैठ गया। मैं मन ही मन केस की घटनाओं पर सोचने लगा। अब केस काफ़ी साफ़ था। आहूजा की बातों से मुझे काफ़ी जानकारी मिली। उस ने केस के कई पहलुओं पर प्रकाश डाला था।

नरेश आ गया। कहने लगा, " पहले बताओ कुछ खाया पिया है?"

मैं ने कहा, " दो तीन घंटे पहले बटर टोस्ट के साथ काफ़ी पी है।" वह उल्टे पैर बाहर गया और चौकीदार को कुछ चाय नाश्ता लाने का कह कर वापस आ गया।

मैं ने उसे आहूजा के साथ हुई पूरी बातचीत कह सुनाई। उस ने कहा, "इस का अर्थ यह हुआ किं चिमनदास का इस केस से गहरा सम्बंध है। उस ने ही कार ख़राब की थी।"

मैं ने कहा, " उस का हत्या में बहुत बड़ा हाथ है। अथवा यूं कहा जाये कि वही हत्यारा है। यदि मेरा अनुमान सही है तो कहा जायेगा कि हम हत्यारे के निकट पहुंचे

हैं। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि यह सब हम को पहले ध्यान में क्यों नहीं आया।"

नरेश ने कहा, "याद है वह चेतावनी हम लोगों को कब मिली ? जब तक हम लोग हत्यारे के निकट नहीं पहुंच जाते तब तक चेतावनी का प्रश्न ही नहीं उठता। बंगले में दो पत्र मिले उस समय तक हम लोग केवल चिमनदास से मुलाकात कर चुके थे।"

"चिमनदास गैंग का आपरेटर भी हो सकता है।"

"स्वाभाविक है अन्यथा महाबलेश्वर में उस की बीमा एजन्सी क्या चलती होगी।"

इतनेमें चाय आ गयी। कुछ केक स्लाइस भी थे। नरेश ने चाय तैयार करते हुए कहा, "पर तुम पूरी बात तो बता नहीं रहे हो।"

मैं ने कहा, " देखो, चिमनदास का हत्या में बड़ा हाथ है। इस बात में ज़रा सा भी शक नहीं है।"

" यह तो एक संयोग भी हो सकता है कि कार्बोरिटर उसकी कार में था और बिजली का फ्यूज़ उड़ गया। अब तुम यह सिध्द नहीं कर सकते कि बिजली का फ़्यूज़ नहीं उड़ा था।"

" यह सही है। पर कई बातें ऐसी होती हैं जो आवश्यक नहीं कि सिध्द की जायें। इस के अलावा एक बड़ी बात और भी है , जिसे हम लोगों ने नज़रअंदाज किया है। यह बात यदि पहले हमारे ध्यान में आ जाती तो हम लोग इस से पहले ही हत्यारे को पकड़ लेते। देखो, हत्या वाले समय में वह परिवार के साथ सिनेमा देखने गया है। क्यों ? उस का बंगला सुनीता के बंगले के बिल्कुल समीप है और यदि थोड़ी बहुत संभावना है तो केवल वहां के लोग ही हत्या होती देख सकते हैं। अच्छा, सबसे बड़ी बात जिस की ओर हम लोगों ने ध्यान नहीं दिया वह यह भी है , चिमनदास सिनेमा देखने के बाद अवश्य सुनीता के बंगले से निकला है , क्योंकि दूसरा रास्ता काफी लम्बा है, और फिर ऐसा कोई कारण भी नहीं है कि वह बंगले में से रात को लौटते समय न निकले...."

" यह तो सही है।"

" इस के अलावा आहूजा का कहना है कि जब वह रात को दस बजे बंगले में गया था तो कम्पाऊंड के दोनों गेट खुले थे। चिमनदास की कार लौटते समय पेड के पास से निकलती है तो उस ने पेड पर लटकी लाश तो अवश्य देखी होगी। फिर ऐसा कोई कारण नहीं दिखता कि उस ने लटकी हुई लाश न देखी हो। कोई भी व्यक्ति उस

स्थान से निकलेगा तो अवश्य देखेगा। परन्तु उस ने पुलिस में रिपोर्ट सुबह ६ बजे की है। कह रहा है कि सुबह को मार्निंग वाक पर जा रहा था तो लाश पेड़ में लटकी हुई देखी।"

"लौटते समय अवश्य दूसरे रास्ते से घर लौटा है। अन्यथा कार के पहियों के निशान होने चाहियें। जो हैं वे एक बार ही के हैं, शाम को जाने के समय के।"

कुछ पलों के लिये नरेश सोच में डूब गया। मैं चुप चाप केक खाने और चाय पीने में व्यस्त हो गया। उसी समय फ़ोन की घंटी बजी। मॉनिटर का फ़ोन था। कहने लगा,

"कागज़ क़लम लेकर लिखें।" मैंने लिखना शुरू किया।

१३ तारीख़........ १२बजे२७८

१४ तारीख़........ १६बजे२७८

१५ तारीख़........ ९ बजे२६७

१५ तारीख़........ १०बजे२७८

मैं ने पूछा, "टेलिफ़ोन करने का समय सही है न?"

"वास्तव में हम लोग काल बुकिंग का समय नोट करते हैं और आप को उसी आधार पर अंदाज़न समय बताया है। वैसे बिल बनाते समय ही सही टाईम लिखने की आवश्यकता होती है। यह विवरण दूसरी शाखा में रहता है। बहरहाल मैं ने आप को ऑपरेटर वर्कशीट से बुकिंग का समय लेकर जो बिल्कुल सही होता है, उसमें जितना समय लाईन देने में लगता है, वह जोड़कर आप को लिखावाया है। हम लोगों को मालूम है कि महाबलेश्वर की लाइन कितने समय में देते हैं।"

"क्या आप विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यदि वास्तविक समय से इस विवरण का मिलान करें तो अधिक अन्तर नहीं होगा?"

"हाँ, निश्चित।"

"अच्छा, आप ये रफ़ शीट सुरक्षित रखिये, उनकी केस में आवश्यकता पड़ेगी।"

"ठीक है।"

"एक और बात, क्या आप मुझे महाबलेश्वर गैरेज का फ़ोन नम्बर दे सकते हैं?"

"रुकिये, मैं देखता हूं।"

मैं ने फ़ोन का रिसीवर पकड़ रखा। दो तीन मिनट बाद आवाज़ आई, "फ़ोन नम्बर मिल गया.....२६७"

"अच्छा, धन्यवाद।" मैं ने रिसीवर रख दिया।

नरेश ने मेरी ओर प्रश्न वाचक नज़रों से देखा। मैं ने कहा, " मेरे पास एक थियरी है।"

"कौन सी ?"

"यह चिमनदास से मिलने के बाद कह सकूंगा। तुम सुबह आठ बजे वारंट पर हस्ताक्षर करने के लिये आ जाना।"

"तो क्या अभी तुम महाबलेश्वर जा रहे हो ?"

"नहीं।"

"फिर इस बीच में चिमनदास से कैसे मिलोगे?"

"क्रिश्चन को फ़ोन करता हूं। चिमनदास को गिरफ़्तार करने के कई कारण हैं, परन्तु सबूत नहीं है। उसे गिरफ़्तार करने की धमकी देकर क्रिश्चन उस से सच उगलवा सकता है और सुबह ८ बजे तक टेलिफ़ोन पर बता सकता है।"

"मैं सुनूं तो सही, तुम्हारी थियरी क्या है ?"

"सचमुच मेरे सामने भी कोई बात पक्की तरह से साफ़ नहीं है। मैं यूंही अंदाज़े से कह रहा हूं।"

कुछ मिनट शांत रहनेके बाद मैं ने कहा, " मैं ने तुम्हें केवल इसलिये बुलाया कि आहूजा के साथ हुई पूरी बातचीत बताऊं। सुबह तक तुम भी कुछ सोचो। मुझे कई नये डेवलपमेन्ट दिख रहे हैं।"

नरेश ने कहा, "एक बात साफ़ है, हम लोगों के पास आहूजा के विरुध्द केवल हालाती सबूत हैं, जो हर स्थिति में ठोस नहीं हो सकते। वैसे देखा जाये तो हत्यारे ने इतनी सतर्कता बरती है, कि अपने पैरों के निशान भी नहीं छोड़े हैं, और होशियारी से कार का उपयोग किया है। तो क्या यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि उस ने दस्ताने भी पहने रखे होंगे?"

" बिल्कुल। पहली बात जो आहूजा से बात करते समय मुझे सही लगी वह यही थी। इसका अर्थ यह हुआ कि आहूजा का यह कथन कि पैसे उस ने स्वयं सुनीता की उपस्थिति में निकाले, झूठा नहीं है।"

" सही है।ऐसा कहा जा सकता है कि पैसे श्रीमती भाटिया की हत्या के पहले निकाले गये हैं।"

कुछ क्षणों की शान्ति के पश्चात् मैं ने कहा, "अच्छा, अब चलें। तुम सुबह आठ बजे पहले पहुंच जाना।"

"तुम किस समय आओगे?"

"लगभग उसी समय।"

हम लोग चौकीदार को ऑफ़िस बन्द करने का कहकर बाहर आये। मैं ने ऑफ़िस वाली अपनी चाबियां जेब में डालीं।

सुबह छह बजे उठकर मैंने बम्बई की ग्रीन होटल के लिये ट्रंककाल बुक करवाया। थोड़ी देर में फ़ोन लग गया। आवाज़ आने पर मैं ने कहा, "मुझे मैनेजर मिस्टर मोदी से बात करनी है।"

" मोदी ?....... मैं हूं खम्भाटा - ग्रीन होटल बम्बई से बोल रहा हूं।"

" मिस्टर मोदी मैनेजर नहीं है क्या ?"

" मोदी तो कोई नहीं है। कहिये, मैं मैनेजर हूँ।"

" ओह।......... मैं पुलिस इंस्पेक्टर नावाणी पूने से बोल रहा हूं। मुझे मिस्टर रसिकलाल मोदी या दिनेश शाह से बात करनी है।"

उसने फिर नाम पूछे। मैं ने कहा, " रसिकलाल मोदी और दिनेश शाह होटल के मैनेजर और रिसीपशन्सिट।"

"हमारे यहां इन नामों वाला कोई कर्मचारी नहीं है। मैनेजर मैं हूं खम्भाटा और रिसीपशन्सिट है मिसिज़ जोज़ोफ़ीन।"

" आप कब से यहां पर हैं ?"

" पिछले चार सालों से।"

" तो क्या आप को पता है कि ये दोनों व्यक्ति किसी दूसरे होटल में हैं या आप उन को जानते हैं ?"

" हूं............" मुझे लगा वह अपनी यादाश्त पर ज़ोर लगा रहा है। " नहीं मुझे नहीं मालूम।"

मुझे याद आया कि उन दोनों व्यक्तियों ने होटल सी-फ़ेस कहा था। ग्रीन होटल का नाम तो आहूजा ने बताया था। मैं ने कहा " क्या आप मुझे होटल सी-फ़ेस का -फ़ोन नम्बर बता सकते हैं ?"

" इस नाम का कोई होटल बम्बई में नहीं है।"

" अच्छा, धन्यवाद।"

" ओर कोई सेवा मेरे लिये हो तो बताइये।"

" बस, धन्यवाद।" मैं ने रिसीवर रख दिया।

मैं शीघ्र ही चाय पीकर घर से तैयार होकर निकला। मैं शिवाजी पेट्रोल पम्प की ओर जाने लगा। यह पेट्रोल पम्प भाटिया के कार्यालय के सामने ही था। भाटिया यहीं से पेट्रोल लेता था। और वहीं उस का खाता भी था। मैं जैसे ही पेट्रोल पम्प में घुसा, एक अटेंडेन्ट ने आगे बढ़कर मुझ से पूछा 'कितने लिटर?' मैं ने उसे दस लिटर भरने के लिये कहा और कार से बाहर निकलकर अन्दर कार्यालय में गया। क्लर्क को मैं ने अपना परिचय दिया तो वह सतर्क होकर बैठ गया। मैं ने कहा मुझे मिस्टर भाटिया एडवोकेट के अकाऊंट का विवरण चाहिये। वह आनाकानी करने लगा। उस ने कहा "चाबियां तो मैनेजर के पास हैं। सब किताबें तिजोरी में लॉक की हुई हैं।"

मैं ने कहा, " मैनेजर को फ़ोन लगाओ और कहो कि तुरन्त आये मुझे जानकारी अभी चाहिये।"

वह शायद बात की गम्भीरता को भांप गया। कहने लगा " कौन से महीने का विवरण चाहिये आपको?"

" इस महीने का।"

" ओह वह तो यहीं है।" कहकर वह उठा और लकड़ी का एक बक्सा ले आया। उसमें कई लिफ़ाफ़े थे। एक डायरी में से नम्बर पढ़कर उस ने उस नम्बर का लिफ़ाफ़ा निकाला। उस में भाटिया के हस्ताक्षर युक्त व्हाऊचर थे। उस ने कहा, "इस महीने में जो भी पेट्रोल और ऑइल उस ने ख़रीदा है, उस के ये सभी व्हाऊचर है, इन्हीं के आधार पर महिने के अन्त में हम बिल बनाते हैं।"

मैं व्हाऊचरों पर लिखी तिथियों का निरीक्षण करने लगा। मेरा शक सही निकला। भाटिया ने १५ तारीख को दो बार तीस तीस लिटर पेट्रोल लिया था। दो व्हाऊचर १५ तारीख के थे। वही कार नम्बर और वही भाटिया के हस्ताक्षर। मैं ने डायरी में से एक कागज़ निकालाकर उन व्हाऊचरों की रसीद बना दी और उन का विवरण भी नोट किया।

वह रसीद क्लर्क को देते हुए मैं ने कहा, "देखो, यह बात किसी को मालूम नहीं होनी चाहिये। मैं शाम को मैनेजर से मिलूंगा।"

मैं ने बाहर निकलकर देखा तो अटेंडेन्ट कार में पेट्रोल भरने के बाद मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैं ने बिल लेकर पैसे दिये, फिर कार में आकर बैठा।

मैं ठीक सात बजे कार्यालय में पहुंचा। नरेश आ चुका था। बैठते ही मैंने फ़ोन का रिसीवर उठा कर आपरेटर से कहा, " इंस्पेक्टर क्रिश्चन , महाबलेश्वर तत्काल।" आपरेटर ने कुछ मिनटों में लाईन देने का वायदा कर फ़ोन बन्द कर दिया।

नरेश ने कहा, " क्या क्रिश्चन काम कर पायेगा?"

" और कोई रास्ता भी तो नहीं है। समय बहुत कम है।"

" याद करो, तुम ने ८ बजे वारंट पर हस्ताक्षर करने को कहा है। इस बीच में चिमनदास गिरफ़्तार होगा और यदि वह हत्यारा नहीं है तो तुम उस का बयान इस बीच लेकर सच्चे हत्यारे को गिरफ़्तार कर पाओगे?" वह मुस्करा रहा था। मुझे उसकी बातों पर मज़ा आ रहा था।

मैं ने कहा, " अब चिमनदास के बयान की आवश्यकता नहीं है। तुम ठीक ८ बजे वारंट पर हस्ताक्षर कर देना।"

वह आश्चर्य में पड़ गया, " किस का, चिमनदास का ?"

" वह तो उस से पहले ही गिरफ़्तार हो चुका होगा !"

" फिर ?"

" पहले तुम चाय के दो प्लालों की व्यवस्था करके आओ, फिर बताता हूं।"

वह बाहर किसी को चाय लाने का कह आया। वह प्रश्नवाचक निगाहों से मुझे ताकने लगा। मैं ने कहा " भाटिया ने १५ तारीख सुबह को महाबलेश्वर गैरेज वालों को फ़ोन किया है - अपने कार्यालय से।"

" भाटिया का महाबलेश्वर गैरेज में क्या काम ?........ओह समझा। आहूजा

हत्यारा नहीं है। उस का तो अब तुम्हें विश्वास है न ?"

"वह तो कल ही लगभग पक्का हो गया था, जब मैं ने आहूजा से बात की थी। तुम ने स्वयं महसूस किया कि इतना सतर्क हत्यारा दस्ताने पहनना कैसे भूल सकता है।" नरेश की आंखों में एक अजीब प्रकार की चमक आ गई फिर कहने लगा,

"तुम्हरा मतलब है कि हत्यारा भाटिया ही है।"

मैं ने कहा, "भाटिया और चिमनदास का हत्या से काफ़ी सम्बंध है। सही हत्यारा कौन है, यह केवल क्रिश्चन से बात करने के बाद कह सकता हूं।"

ठीक उसी समय टेलिफ़ोन की घंटी बजी। ऑपरेटर की आवाज़ थी, "इंस्पेक्टर क्रिश्चन पुलिस थाने में नहीं हैं। उन्हें बुलवाया गया है। कुछ समय बाद फिर कोशिश करता हूं।"

"ठीक है।" कह कर मैं ने फ़ोन रख दिया।

मैं ने कहा "नरेश, एक और बात कि वह व्यक्ति जिस के साथ सुनीता सी-फ़ेस होटल में गई थी, उसे भी हम लोग आहूजा ही समझ रहे थे।"

"वह तो ठीक है।"

"परन्तु आहूजा का कहना है कि हांगकांग से लौटनेके बाद उसकी सुनीता के साथ पहली मुलाक़ात बम्बई ग्रीन होटल में हुई थी, और न सी-फ़ेस होटल में। उनका पत्रव्यवहार चालू था।"

"यह तो आश्चर्यजनक बात है।"

"उस से बड़ी बात इस गैंग की है, आख़िर वह व्यक्ति कौन था, जिस ने मुझे पत्थर के माध्यम से पत्र भेजा।"

नरेश शांत रहा।

मैं ने कहा, "भाटिया और चिमनदास - दोनों का हत्या से सम्बंध है। परन्तु बात क्या है कि हत्या के समय चिमनदास सिनेमा हाल में बैठा था और भाटिया अपने कार्यालय में"

चाय आ गई। मैं ने चाय पीते हुए कहा, "सी-फ़ेम होटल वाले दोनों व्यक्ति नकली थे। इस नाम का कोई होटल शायद बम्बई में है ही नहीं।"

नरेश ने मानो अचानक रुचि लेते हुए कहा, "कैसे?"

" मैं ने आज सुबह ग्रीन होटल में फ़ोन किया था। उन्होंने बताया कि सी -फेस नाम का होटल बम्बई में है ही नहीं।"

"नक़ली लोगों की आवश्यकता ?"

" केवल हम लोगों को गुमराह करने के लिये, इन दोनों व्यक्तियों को पैसों से ख़रीदा गया है।"

नरेश ने कहा, " उन्हें ख़रीदने वाला व्यक्ति कौन हो सकता है ? प्रश्न यह है कि उस व्यक्ति को मालूम था क्या कि समाचार पत्र में पति पत्नी का फ़ोटो छपेगा , ताकि वह उसी का संदर्भ देकर उन दो किराये के व्यक्तियों को भेजे।"

" अब यह सब कुछ डिडक्शन की बात है। पहली बात कि हत्यारा बिल्कुल चालाक है। दूसरी बात कि वह सुनीता के मित्रों में से कोई है।"

" और तुम्हारे कहने के अनुसार आहूजा हत्यारा नहीं है।"

" यह तो मैं पहले ही कह चुका हूं कि आहूजा हत्यारा नहीं है। चिमनदास और भाटिया सुनीता के इतने समीप थे जितना आहूजा जब तक बाहरी गतिविधि का प्रश्न है। हत्या करने के पहले उस ने सोच समझ कर योजना बनाई है। उस ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि यह हत्या नहीं आत्महत्या है। साथ ही उस ने यह भी व्यवस्था की है कि यदि यह सिध्द भी हो जाये कि यह हत्या है तो वह पुलिस को गुमराह कर सके। इसके लिये उस ने व्यवस्था यह की है कि वह किसी प्रकार समाचार पत्रों में यह आत्महत्या का समाचार छपवायें। समाचार पत्र में यह समाचार आने के बाद ज़रूरत पड़े तो उस का संदर्भ देकर पुलीस को गुमराह करने का प्रयास करे और वह सफल हुआ है।"

" परन्तु समाचार पत्र में तो समाचार पहले ही छप चुका था। और हम ने तो यह बाद में स्पष्ट किया कि यह हत्या है। ऐसी स्थिति में वह पहले ही कैसे सतर्कता बरत सकता था ?"

मैं ने कहा, " देखो नरेश यह बिल्कुल पूर्व नियोजित और पढ़े लिखे दिमाग़ की उपज है। उस ने यह समाचार पहले ही छपवा दिया। यदि यह समाचार काम में आ गया तो ठीक नहीं तो छपने में हानि ही क्या है ? फिर भी हमने यहां दूसरी ग़लती की है , हालांकि उस समय हमें मालूम नहीं था कि वे दोनों सी-फ़ेस होटल वाले व्यक्ति नकली हैं। आत्महत्या के बदले हत्या हम लोगों ने ही महसूस की। इस बात को सबसे

पहले हम लोगों ने चिमनदास के सामने प्रकट किया।"

"परन्तु हम लोगों ने उसे ऐसा नहीं कहा था कि श्रीमती भाटिया की हत्या हुई है।"

"तुम भले ही न कहो, परन्तु वह हमारी गलत समय पर की गई मुलाक़ात से समझ गया था कि यह कोई गंभीर बात है। और फिर हम लोगों ने सुनीता के बंगले की बत्तियां जलाकर घंटेभर तक तलाशी ली। ऐसे व्यक्ति के लिये यह समझना बड़ी बात नहीं है कि हम लोगों को शक हुआ है कि सुनीता की हत्या हुई है।"

नरेश की आंखों में चमक आ गई। कहने लगा, "बिल्कुल चेतावनी वाला हिसाब हो गया न। यह सतर्कता भी चिमनदास ने ही बरती है, क्योंकि सब से पहले उसी ने महसूस किया है कि हम लोगों के पास हत्या की थियरी है।"

मैं ने कहा, "अब यह पक्का है कि वे दोनों व्यक्ति चिमनदास के किराये के आदमी थे, क्योंकि उन के आने तक किसी अन्य व्यक्ति को पता नहीं था कि हम लोगों को हत्या का शक हुआ है। क्रिश्चन को भी केवल आधा घंटा पहले मालूम हूआ था। वैसे तो आत्महत्या समझ कर केस बन्द किया गया था ना?

इन नकली व्यक्तियों के माध्यम से हम लोगों का ध्यान आहूजा की ओर आकर्षित किया गया और एक बिल्कुल मासूम ख़बर हम लोगों के पास आई जो अस्वाभाविक नहीं लगती थी। उस ख़बर ने हमें सुनीता का भूतकाल ढूंढने के लिये मजबूर किया और हम को आहूजा का सूत्र मिला। आहूजा के साथ उस की कार का, जिसका वारदात से सीधा सम्बंध था। कार उस समय गैरेज में थी और जिस प्रकार का बयान गैरेज वालों ने दिया और पहले आहूजा ने दिया उस हिसाब से हमारा शक आहूजा में अधिक मजबूत हुआ। इस के सिवाय सुनीता द्वारा बैंक से पैसे निकलवाना, उन पैसों का लापता होना, तिजोरी पर आहूजा की उंगुलियों के निशान, आहूजा की समर्पण (Assignment) रद्द करवाने की कोशिश, बंगले में उस के पैरों के निशान और चाबियों का मिलना, ये सब असली हत्यारे के लिये लाभदायक बातें थी। यह भी वास्तविकता है कि आहूजा जैसे आशिक मिजाज लोग पैसे के लिये कभी कभी कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि उनका हाथ खाली रहता है और फिज़ूल ख़र्ची अलग।"

"इस का मतलब यह हुआ कि हत्यारा चिमनदास ही है।" नरेश ने अपना निर्णय बताते हुए कहा।

"उफ़ ! तुम ने अभी तक बात नहीं समझी। मैं कहता आ रहा हूं कि हत्यारा कोई और ही है, और तुम्हें समझ जाना चाहिये था कि वह भाटिया ही है। चिमनदास ने उस की सहायता दिलो जान से की है।"

" चिमनदास बराबर दोषी है , परन्तु भाटिया के लिये केवल यह सबूत है कि उस के अपने टेलिफ़ोन से महाबलेश्वर गैरेज में फ़ोन किया गया है। हो सकता है कि उस के किसी ग्राहक अथवा किसी अन्य व्यक्ति ने फ़ोन का उपयोग किया हो। साथ ही यह भी याद रखना चाहिये कि वह शाम को पांच बजे तक कार्यालय में हाज़िर था। "

" मेरा शक पक्का तब हुआ जब मैं ने शिवाजी पैट्रोल पंम्प में उस का अकाऊंट देखा। उस ने १५ तारीख सुबह को तीस लिटर पेट्रोल भरवाया है और उसी दिन शाम को अथवा कहा जाये देर रात को फिर दूसरी बार ३० लिटर पेट्रोल लिया है।"

" मतलब ?"

" मतलब यह कि पहली बार वह किसी लम्बे सफ़र पर गया है जो केवल महाबलेश्वर का ही था। रात को लौटते समय फिर उसने टैंक फुल करवा दिया , क्योंकि उसे पक्का मालूम था कि सुबह फिर महाबलेश्वर जाना है। सुबह तक पुलिस को ख़बर होगी अथवा सुबह छह बजे चिमनदास अवश्य पुलिस को फ़ोन करेगा। उस ने जितना जल्द हो सके महाबलेश्वर पहुंचना चाहा ताकि क्रिश्चन को भ्रमित कर, तहक़ीक़ात अपने मन माफ़िक पूरी कराये।"

" परन्तु , भाटिया तो हत्या वाले दिन लगभग हत्या वाले समय अपने कार्यालय में बैठा था।"

" और चिमनदास उसी समय सिनेमा देख रहा था। इसलिये तो मैं कहता हूं कि वारंट पर ८ बजे हस्ताक्षर करना, पहले नहीं।"

" साढ़े सात बज रहे हैं।" नरेश ने घड़ी दिखाकर मुस्कराते हुए कहा।

मैं ने टेलिफ़ोन करके आपरेटर से पुनः प्रयत्न करने का वायदा लेकर फ़ोन रख दिया।

नरेश ने कहा, " चिमनदास तो ख़ुद कह रहा है कि वह सिनेमा में था , परन्तु भाटिया को तो क्रिश्चन ने स्वयं देखा है।"

"दोनों में से एक झूठ बोल रहा है, साथ ही दोनों का हत्या में हाथ है।"

"इस का अर्थ यह हुआ कि तुम क्रिश्चन की गवाही को महत्व नहीं दे रहे हो?"

" इतना नहीं। यह याद रखो कि क्रिश्चन भी एक प्रेमी जीव है। परन्तु यह दूसरे प्रकार का है। इसमें और आहूजा में एक बुनियादी अन्तर यह है कि आहूजा से कुछ भी कर

सकने की उम्मीद की जा सकती है जब कि क्रिश्चन से बिल्कुल नहीं। यह डरपोक किस्म का व्यक्ति है। और ऐसे व्यक्ति हर बात, यहां तक कि अपनी चाल चलन, खाने पीने को बिल्कुल हल्के रूप में लेते हैं। उस की ईमानदारी में मुझे तिल मात्र भी शक नहीं है, परन्तु यह वास्तविकता है कि इस व्यक्ति को ठगी से मोहरा बनाकर काम में लाया जा सकता है। इस हत्या में एक ऐसे वकील का हाथ है जो इस के पहले कई हत्या के मुकदमें लड़ चुका है। उसने न केवल अपने को बचाने के सभी तरीके अपनाये हैं, परन्तु कुछ ऐसे भी सहायक बनाये हैं, जिन को ख़ुद अपराध मे फंसा कर, सज़ा के भय से हमेशा के लिये उन का मुंह बन्द रखने का प्रबंध भी किया है।"

"याने उस ने एक से अधिक व्यक्तिओं को हमराज़ बनाया है?"

"बिल्कुल।"

"एक चिमनदास और दूसरा?"

"यदि मेरा अनुमान गलत नहीं है तो दूसरी उस की सेक्रेटरी है।"

"या खुद क्रिश्चन।"

ठीक उस समय टेलिफ़ोन की घंटी बजी। मैं ने नरेश से कहा, कि बाहर सेक्रेटरी के रूम में जा कर एक्सटेंशन उठा कर सुने।

वह बाहर निकल गया। मैं ने फ़ोन का रिसीवर उठाकर कहा, "हेलो, इन्सपेक्टर नावाणी।"

ऑपरेटर की आवाज़ आई, "इन्सपेक्टर क्रिश्चन फ्रॉम महाबलेश्वर ऑन लाईन।"

क्रिश्चन की आवाज़ आई, "गुड मॉर्निंग मिस्टर नावाणी .... कहिये सुबह सुबह कैसे याद किया है?"

मैं ने कहा, "गुड मॉर्निंग .... सुनो, १५ तारीख को जब तुम भाटिया की आफ़िस में गये थे तो क्या वह उस समय वहां बैठा था?"

"हाँ।"

"और उस की कार वहां खड़ी थी?"

"अरे हां, वह तो वहां नहीं थी।"

"कैसे कह रहे हो?"

“ मुझे यह बात पहले ही ध्यान में आनी चाहिये थी।”

“ खैर छोड़ो इस आनी चाहिये थी को। बताओ तुमने क्या देखा वहां ?”

“आप को तो मालूम है की सीढ़ी वाले बरामदे की छत नीची है और वहीं से मिस्टर भाटिया के ऑफ़िस में जाने का रास्ता है। जब कार वहां खड़ी होती है, तब सीढ़ी के पास कुछ अंधेरा-सा रहता है। बिल्कुल ऐसा नहीं कि आदमी कुछ देख ना सके। बहुत दिन पहले जब मैं भाटिया के ऑफ़िस में गया था तो उस अंधेरे की बात निकली थी। खैर इस बार गया तो बिल्कुल साफ़ रोशनी थी , और मैं ने उस समय यह बात शायद इसलिये भी मार्क नहीं की क्योंकि मेरे मन में पहले ही यह विचार बैठा हुआ था कि भाटिया ऑफ़िस में नहीं है, और अचानक जब भाटिया को ऊपर बैठा हुआ देखा तो मैं घबरा गया। अब जब आप पूछ रहे हैं , तो मुझे रोशनी वाली बात अच्छी तरह याद आ रही है , और मैं शपथपूर्वक कह सकता हूं कि कार उस समय वहां नहीं थी। क्यों? वह कार हत्या में काम लायी गयी है क्या ?”

मैं ने उस के प्रश्न को टालते हुए पूछा, “ क्या तुम विश्वास के साथ कह सकते हो कि भाटिया उस समय ऑफ़िस में मौजूद था ?”

“ माफ़ कीजिये, मैं ने पहले इस बारे में गम्भीरता से नही सोचा था .... नाऊ वेट अ मिनट (अब एक मिनट प्रतीक्षा कीजिये) ..... अन्दर कोई व्यक्ति था, जो बिल्कुल भाटिया जैसा लग रहा था।”

“ बिल्कुल से मतलब ?”

“ मतलब यह कि मैं ने उस का पूरा चहेरा नहीं देखा था। कांच के दरवाज़े में से देखा तो वह सीधा नहीं बैठा था। कुछ मुड़ा हुआ बैठा था। वह अपनी वही कोट और टोपी पहने हुआ था और नीचे सिर करके कुछ लिख रहा था।”

“ क्या तुम्हें याद है कि पहले तुमने क्या बताया था ?”

“ हां।”

“ और अब ऐसा क्यों ?”

“ क्योंकि आप ने कार की बात याद दिलाई है , मुझे शक हो रहा है कि कुछ तो गड़बड़ है।”

“ इसलिये तुम अपना स्टेटमेन्ट बदल रहे हो?”

" नहीं, बदल नहीं रहा हूं अपितु उसे अधिक सतर्कता से प्रस्तुत कर रहा हूं। इतना तो विश्वास के साथ कह सकता हूं कि जो व्यक्ति भाटिया की कुर्सी पर बैठा पीठ दिखाकर कुछ लिख रहा था, वह या तो भाटिया स्वयं था या बिल्कुल उस के जैसा कोई दूसरा व्यक्ति था।"

" कम से कम तुम यह विश्वास के साथ नहीं कह सकते कि वह भाटिया ही था?"

" बिल्कुल ठीक।"

" पता है तुम्हारी इस लापरवाही के कारण हम लोग कितने परेशान हुए हैं?"

" आई एम रियली वेरी सॉरी।"

" अच्छा, उस चिमनदास बीमा एजन्ट को तुरन्त गिरफ़्तार कर लो।"

" हत्या के अपराध में?"

" हाँ!"

" तो हत्या उसी ने की है?"

" नहीं, उस ने हत्या में मदद की है और पुलिस को गुमराह किया है।"

" परन्तु हत्या किस ने की है, और वह गैंग कौन सी है?"

" यह सब चिमनदास से मालूम होगा। तुम उस का स्टेटमेन्ट लो और यदि वह धूल में लट्ठ मारे तो मुझे फ़ोन करो।"

" परन्तु यदि वह पूछे कि उस का हत्या में हाथ होने का पुलिस के पास क्या सबूत या कारण है तो?"

मैं ने कहा, " यह तुम्हें समझाने की आवश्यकता है? तभी तो कह रहा हूं कि यदि वह धूल में लट्ठ मारने का प्रयत्न करे तो मुझे फ़ोन करना और वह शहर से बाहर न निकले इस की व्यवस्था करना। तुम्हें मालूम है इन बातों में पुलिस वाले दिल से कम, दिमाग और हाथों से अधिक काम लेते हैं।"

" समझ गया। आज उस का फ़ोन भी खराब करवा देता हूं। परन्तु आप को किसी पर तो शक होगा?"

" यह सब कुछ दो घंटे बाद बताता हूँ। चिमनदास को गिरफ़्तार कर, उस का स्टेटमेन्ट लेकर मुझे दस बजे के बाद फोन करो तो सब बताऊंगा......।"

"कुछ कुछ तो मैं भी समझने लगा हूं।"

" मतलब कि इतनी समझ रखते हो।"

उस के गला साफ़ करने की आवाज़ आई।

मैं ने कहा, " चिमनदास के पास टाईप राईटर अवश्य होगा। वह ज़ब्त कर उस पर कोई लेटर टाईप कर के, मुझे भेजो और टाईप राईटर पुलिस कस्टडी में रखो।"

" लेटर पोस्ट करूं ?"

" नहीं , किसी के हाथ भेजो..... ऐसा करो, एस.टी. बस के ड्राईवर को दो और उसे कहो कि डिपो मेनेजर तक पहुंचाये। मैं यहा बस पहुंचने के समय पर किसी सिपाही को भेजूंगा।"

" ठीक।"

" अच्छा, बाय।" मैं ने फ़ोन रख दिया। नरेश सेक्रेटरी के कमरे से आकर मेरे सामने बैठा। कहने लगा " बस, अब तुम्हारे अनुमान में मुझे ज़रा भी शक नहीं है।"

मैं ने कहा, " तुम्हें याद होगा, क्रिश्चन ने कहा था कि महाबलेश्वर से पूना छुट्टी पर आने से पूर्व उस ने मिस जेन को लिखा था। यह ख़बर भाटिया को कुछ दिन पूर्व , क्रिश्चन के पूना पहुंचने से पहले मालूम हुई है , इसलिये उस ने अपने लिये एक ठोस गवाह रखने के लिये क्रिश्चन का उपयोग किया है। हत्या करने की इच्छा तो उसे बहुत दिनों से थी। शायद उस दिन से जब सुनीता ने आहूजा से फिर सम्बंध बढ़ाये।"

" फिर तलाक़ तो दे सकता था न ?"

" प्रश्न इतनी बड़ी सम्पत्ति का भी था।"

" उस का तो भाई अभी प्रश्न ही नहीं रहा।"

" यह सही है। वास्तव में सुनीता द्वारा सम्पत्ति सोंप देनेवाली बात ही उस के लिये बड़ी हार थी, उस के स्वाभिमान को चोट लगी थी कि वह उसे बिल्कुल पसन्द नहीं करती और किसी भी परिस्थिति में उसे तालक देकर अपने पहले प्यार से शादी करने के लिये तैयार है। हत्या का कारण पहले सम्पत्ति फिर ग़ैरत समझो। वास्तव में भाटिया स्वयं भी तो सुनीता को बहुत चाहता था।"

नरेश कुछ सोचने लगा।

मैं ने कहा, " तलाक़ एक पक्षीय नहीं हो सकता, इसलिये सुनीता चाहते हुए भी तलाक़ नहीं ले पा रही थी। परिणाम स्वरूप उस ने आहूजा से खुले आम सम्बंध बढ़ाये और अलग महाबलेश्वर में रहने लगी। इस मतलब से कि भाटिया बदनामी से तंग आकर तलाक़ दे देगा। परन्तु उसे मालूम नहीं था कि इस बात का इतना भयानक परिणाम भी हो सकता है और उसे मौत की गोद में सोना पड़ेगा।"

" आखिर हत्या किस तरीक़े से हुई ? क्रिश्चन ने आफ़िस में भाटिया को देखा। वास्तव में अब लग रहा है कि शायद वह कोई दूसरा व्यक्ति है ...... परन्तु कौन हो सकता है ?"

" यह तो अब तुम्हें विश्वास हुआ कि आहूजा और क्रिश्चन की सब गतिविधियों की भाटिया को ख़बर थी। आगे सहायता करनेवाला एक व्यक्ति चिमनदास और दूसरी है मिस जेन।"

" भाटिया की सेक्रेटरी ?"

" हाँ।"

" वह कैसे?"

" सीधी बात है। क्रिश्चन के पूना आने की ख़बर मिस जेन को थी। दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति भाटिया के निकट नहीं दिखता, जिस के माध्यम से उसे मालूम हुआ हो।"

" ऐसा भी हो सकता है कि ऑफ़िस में भाटिया बैठा हो और महाबलेश्वर में यह काम किसी कांट्रेक्ट किलर ने किया हो।"

" संभव है, परन्तु क्रिश्चन को भाटिया की ऑफ़िस में बुलाने वाली जेन है। भाटिया को गवाह चाहिये था। इस का मतलब भले कोई दूसरा व्यक्ति भी हो, परन्तु भाटिया और जेन का तालमेल तो था ही। ठीक आठ बजे हैं।" मैं ने टेबल के खाने से कागज़ निकालकर उसे देते हुए कहा, " वारंट तैयार कराने के लिये नोट बनालो तो चलें ?"

" कहाँ ?"

" जेन के घर। उससे मालूम होगा कि उस दिन भाटिया कहां था और उस की गतिविधियां क्या थीं।"

आधे घंटे के बाद, हम लोग ऑफिस से निकले। इस बीच नरेश ने दो बार अपनी

ऑफ़िस में फ़ोन किया और तैयार किया हुआ नोट सिपाही के हाथ वहां भेजा। हम लोग आकर कार में बैठे। मैं ने कार स्टार्ट करते हुए कहा, " बड़ी मज़ेदार बात यह है कि तहक़ीक़ात के समय भाटिया भी क्रिश्चन के साथ था और अपने अनुमान बता बता कर, अपनी राय क्रिश्चन पर लादी। क्रिश्चन समझ रहा है कि पूरी जांच उस ने स्वयं की है। वास्तव में भाटिया उस पर छा गया था। "

हम लोग मिस जेन के घर के पास आ पहुंचे। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि जेन का फ़्लैट दूसरे माले पर था। ऊपर पहुंच कर मैं ने दरवाज़े के पास लगे काल बेल का बटन दबाया। एक युवती ने आकर दरवाज़ा खोला। वह जेन ही थी। मुझे देख कर उस की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। फिर एकदम अपने आप को संभालते हुए कहने लगी, "मिस्टर नावाणी, आइये, अन्दर आइये।" हम दोनों अन्दर दाख़िल हुए। उस ने हमें सामने सोफा की ओर इशारा करते हुए कहा, " बैठिये, कहिये कैसे आना हुआ ?"

मैं ने कहा, "आप को नहीं मालूम ?"

वह सहम गई। कहने लगी, " क्या मतलब ?"

मैं ने उत्तर टाल दिया " क्या आप यहां अकेली रहती हैं ?"

" नहीं, मम्मी भी रहती है।"

" इस समय कहां है ?"

" कुछ दिन हुए, बम्बई गई है।"

" आप के परिवार में और कौन कौन हैं ?"

" कोई नहीं, केवल मैं और मम्मी।"

" भाटिया के पास कितने समय से नौकरी कर रही हैं ?"

" लगभग तीन साल से।"

" क्या आप भाटिया के सम्बंध में कुछ बता सकती हैं ?"

" कुछ याने?...... परन्तु यह सब किस लिये है ?"

" बताता हूं। बल्कि मैं तो समझता हूं कि आप को मालूम है कि मैं क्यों आया हूं।"

" मुझे कुछ पता नहीं है। केवल इतना कह सकती हूँ कि आप किसी विशेष प्रयोजन से आये हैं, नहीं तो आपकी और मेरी मित्रता इतनी नहीं है कि आप मेरे पास आयें।"

" बिल्कुल सही, परन्तु मेरे प्रश्न का उत्तर तुम ने नहीं दिया। मुझे भाटिया के सम्बंध में जानकारी चाहिये।"

मैं उसे 'आप' बस आप के बदले 'तुम' कहने लगा।

" कौन सी ?"

" उस के पारिवारिक जीवन के सम्बंध में।"

" मुझे केवल इतना मालूम है कि उन का पारिवारिक जीवन सुखी नहीं था। सुनीता के लिये उन के दिल में काफ़ी प्रेम था। उस की तलाक़ की ज़िद के बावजूद भाटिया ने उसे समझाने का प्रयत्न किया क्योंकि, उन के दिल में सुनीता के प्रति प्रेम और श्रध्दा थी।"

" मैं समझता हूं कि तुम्हें इस सम्बंध में सब मालूम है।"

" जहां तक मुझे मालूम है, वे अवश्य चाहते थे कि सुनीता तलाक़ न ले। यह केवल उन का असीम प्यार था या किसी दूसरे मतलब का दिखावा था, यह मैं नहीं कह सकती, परन्तु इतना अवश्य है कि अन्तिम दिनों में उन का दिल टूट गया था, और उस के लिये केवल सुनीता ज़िम्मेदार थी, क्योंकि उस ने आहूजा से ज़रूरत से ज़्यादा सम्बंध बढ़ा रखा था।"

" क्या भाटिया का किसी दूसरी महिला से प्रेम था ?"

" पहले तो मुझे नहीं लगता था, परन्तु बाद में मालूम हुआ।"

" वह महिला कौन है ? क्या तुम्हे कुछ मालूम है ?"

वह चुप हो गई और नीचे फ़र्श की ओर देखने लगी। मैं ने कहा, " यदि मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं तो वह तुम ....." मैं ने जान बूझ कर वाक्य आधे में ही छोड़ दिया।

उस ने धीमे से कहा, " परन्तु वह एक तरफ़ा था।"

मैं ने कहा, " तुम्हें लगता होगा कि मैं ये सब व्यक्तिगत बातें क्यों पूछ रहा हुं पर इन बातों का श्रीमती भाटिया की हत्या से काफी सम्बंध है। तुम्हारी और मिस्टर भाटिया की स्थिति ही ये बातें स्पष्ट कर पायेंगी। वैसे भाटिया ने तो सब कुछ बता दिया है।"

वह आश्चर्य में पड गई। मैं ने कहा, " भाटिया के प्रेम दिखाने के पहले भी क्या तुम्हें कभी ध्यान में आया था कि वह तुम में रुचि ले रहा है ?"

" नहीं , वह बिल्कुल रूखे स्वभाव का व्यक्ति है और आवश्यकता से अधिक न
बोलता।"

" उस ने प्यार का प्रदर्शन सबसे पहले कब किया ?"

" कुछ दिन हुए हैं। उस ने कहा , 'जेन, मैं तुम्हें काफ़ी चाहने लगा हूं। यदि सुनी
मुझसे तलाक़ ले तो क्या तुम मुझ से शादी करोगी ?' मैं ने उसे बताया कि मैं
क्रिश्चन से शादी करने का वायदा किया है। हम लोगों का काफ़ी समय से आपस
प्यार है। सो तो उसे भी मालूम था। वह चुप हो गया था और फिर कभी शादी की बा
नहीं की। केवल एक बार इतना कहा कि 'जेन, तुम यदि मेरे साथ शादी नहीं क
सकती तो उस का मुझे दुख नहीं है और साथ ही इस का यह भी अर्थ नहीं है कि म
दिल में तुम्हारी प्रति प्यार और इज्ज़त नहीं होगी। मैं तुम्हे हमेशा याद करता रहूंगा
और कुछ इस प्रकार के वाक्य।"

" उस के बाद क्या कहा ?"

" क्या कहा ?" उस ने प्रश्न दोहराया। फिर अपने आप को सम्हाल कर कह
"फिर उस दिन के बाद उस ने ऐसी कोई बात नहीं की।"

मैं ने कहा, " देखो मिस जेन , तुम्हें कह चुका हूं कि भाटिया ने मुझे सब कुछ बा
दिया है। अब तुम जितना सच बताओगी उतना तुम्हारे लिये अच्छा है और जित
जल्दी बताओगी उतना अच्छा।"

" परन्तु मुझे कुछ मालूम नहीं है कि भाटिया ने आप को क्या बताया है। साथ
मुझे इस मामले का कुछ पता भी नहीं है।"

" क्रिश्चन के पत्र तुम्हारे पास घर में आते हैं ?"

" नहीं , ऑफ़िस में।"

" घर में क्यों नहीं ?"

" ताकि मम्मी को मालूम न हो।"

" ऑफ़िस में यह सम्भव हो सकता है कि भाटिया तुम्हारे पत्र पढ़े ?"

" मैं नहीं समझती।"

" क्रिश्चन ने तुम्हें पूना आने के बारे में लिखा था , जब वह अभी छुट्टी लेकर यहां

आया था और वह चिठठी ऑफ़िस के पते पर आई थी ?"

"हाँ।"

"भाटियाने तुम से प्यार का प्रदर्शन उस पत्र के आने के पहले किया था या बाद में?"

"पहली बार जब उस ने कहा था, वह पत्र आने के काफ़ी पहले था और दूसरी बार जब उस ने कहा था कि तुम मुझे हमेशा याद रहोगी इत्यादि, वह पत्र प्राप्त होने के बाद कहा था।"

"क्या भाटिया को पहले से ही मालूम था कि क्रिश्चन को तुम से प्यार है।"

"हाँ।"

"बता सकती हो कि उसे यह पता कैसे और कब लगा ?"

"परन्तु इतना सब पूछने की क्या आवश्यकता ? यदि मैं उत्तर देने से मना करूं तो?"

"भले ही मना करो। उस स्थिति में तुम्हें गिरफ़्तार करने के अलावा और कोई चारा नहीं होगा। तुम ने श्रीमती भाटिया की हत्या करने में भाटिया की सहायता की है , पुलिस को गुमराह किया है , खुद अपने प्रेमी को ठगा है। वैसे मैं तुम्हें अपनी सफ़ाई प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान कर रहा हूं। बताओ कि भाटिया को तुम्हारे और क्रिश्चन के प्यार का पता कब और कैसे चला ?"

"मुझे मिस्टर भाटिया के कार्यालय में आये हुअे अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि एक बार क्रिश्चन उस की उपस्थिति में ऑफ़िस में मुझ से मिलने आया। दूसरी बार उस की अनुपस्थिति में हम लोग आपस में ..... क्रिश्चन मुझे गले लगाकर बैठा था कि अचानक मिस्टर भाटिया आ गये। उन्हें बहुत गुस्सा आया और उन्होंने हम दोनों को बहुत डांटा।"

"आफिस में और कोई कर्मचारी है ?"

"नहीं , केवल एक महिला है जो सबेरे आकर सफ़ाई करके चली जाती है।"

"अच्छा, उस दिन क्रिश्चन का पत्र मिलने के बाद भाटिया ने तुम्हें और क्या कहा था?"

"किस बारे में ?"

"सुनीता के बारे में। यदि तुम कहो तो मैं तुम्हें कह सुनाऊ कि उसने क्या कहा था ?"

वह सिर झुका कर सोच में पड़ गई। मैं ने कहा " उस दिन भाटिया ने तुम्हें कहा कि सुनीता के मौत के बाद ही उसे कुछ शांति मिलेगी और साथ ही उस की सारी सम्पत्ति उसे मिलेगी , परन्तु तलाक़ देने की स्थिति में न उसे शांति मिलेगी और ना ही सम्पत्ति। उस ने तुम्हें सहायता करने की विनती की। तुम ने लालच में आकर अथवा उस पर दया करके क्रिश्चन को उस के कहने के अनुसार गुमराह किया।"

जेन ने कहा, "यह जो कुछ आप ने सुना है वह झूठ है। यदि भाटिया ने आप को इतना कुछ बताया है तो मैं भी आप को बताती हूं कि हक़ीक़त क्या है।"

उस ने लम्बी सांस ली और फिर कहा, "भाटिया ने उस के दूसरे दिन मुझ से कहा कि तुम मुझे एक काम में मदद करो। उस ने मुझे श्रीमती भाटिया का पत्र दिखाया , जिस में उस ने भाटिया को लिखा था कि वह स्वयं अपनी पूरी सम्पत्ति उस के नाम हस्तांतरित कर रही है। अब उम्मीद है कि उसे तलाक़ देने में वे देर नहीं करेंगे और कुछ ऐसा ही लिखा था। तीन सप्ताह बीत गये थे, परन्तु श्रीमती भाटिया का फिर कोई पत्र नहीं आया था। भाटियाजी का विचार था कि वह स्वयं जाकर कागज़ पूरे करवा कर आये। उसे एक बात का भय था कि यदि वह ये सब काग़ज़ खुद तैयार करवाता है और हस्ताक्षरित करवाता है तो फिर वह समर्पण (Assignment) किसी के आपत्ति लेने पर रद्द भी हो सकता है। उस का मुख्य कारण यह था कि सुनीता, आहूजा के दबाव में यह स्टेटमेन्ट भी दे सकती थी कि समर्पण (Assignment) भाटिया ने उस से ज़बरदस्ती करवाया है।

भाटिया को विश्वास था कि आहूजा अवश्य सुनीता पर दबाव डालेगा और उसे यह भी विश्वास था कि उस के स्वयं जाने के अलावा काम नहीं होगा। सुनीता को तलाक़ देने का उस का विचार नहीं था। उस का कहना था कि यदि सम्पत्ति पर सुनीता का पूरा अधिकार रहेगा तो वह ग़ुस्से में आहूजा को भी सब कुछ दे सकती है।उसे मालूम था कि क्रिश्चन पूना में है। उस ने कहा, यदि मैं कार्यालय का शीशेवाला दरवाज़ा बंन्द करके उसी के पोज़ में उसी की कुर्सी पर बैठूं और बाहर से क्रिश्चन आये और देख कर चला जाये तो उस से बड़ा कोई ठोस गवाह नहीं मिलेगा। फिर वह कह सकेगा कि जिस दिन समर्पण सम्पादित हुआ था, उस दिन वह यहां पूना में था और सुनीता ने यह कार्य अपने आप बिना किसी दबाव के किया है। फिर न तो सुनीता मुकर सकती है

और न किसी के आपत्ति लेने से समर्पण (Assignment) रद्द हो सकता है। कार्यक्रम के अनुसार मैंने १५ तारीख को क्रिश्चन को शाम को ५ बजे आने को कहा। वैसे उसे उस दिन ४ बजे बस द्वारा महाबलेश्वर जाना था, क्योंकि दूसरे दिन उसे ड्यूटी पर जाना था, परन्तु मेरे ज़िद करने पर वह रुक गया। बाद में मुझे मालूम हुआ कि उस दिन शाम को वह किसी के साथ कार में चला गया था। मिस्टर भाटिया उस दिन दोपहर को ही महाबलेश्वर चले गये थे। यहां से सब कागज़ तैयार करवा कर ले गये थे। उस दिन मैं आॅफिस में लगभग १२ बजे आई थी, क्योंकि मुझे शाम को देर तक भाटिया के वापिस लौटने तक बैठना था।

मैं मिस्टर भाटिया की कुर्सी पर, उन का कोट और टोपी पहन कर इस प्रकार बैठ गई, ताकि बाहर से क्रिश्चन मुझे भाटिया समझ कर उल्टे पैर चला जाये। वह भाटिया से डरता है, और उस की उपस्थिति में आने की हिम्मत नहीं करता। इस प्रकार की हम लोगों ने दो तीन बार रिहर्सल भी की।

लगभग पांच बजे क्रिश्चन आया। मुझे भाटिया समझ कर उस की अन्दर आने की हिम्मत नहीं हुई और बाहर से ही लौट कर चला गया, जिसकी हम लोगों को उम्मीद थी।"

"तुम्हारी हाज़री में उस दिन भाटिया ने महाबलेश्वर में कोई फ़ोन किया था?"

"मैं आॅफ़िस में आई, उस से पहले वह फ़ोन कर चुका था। उस ने मुझे से कहा, 'मैं ने सुनीता को फ़ोन कर दिया है।' वह भाटिया की उपस्थिति में आहूजा को संग रखना पसन्द नहीं करती थी। मिस्टर भाटिया को आने से रोक नहीं सकती थी। इसलिये आहूजा को रोकना पसन्द करती थी।"

"फिर जब तुम्हें मालूम हुआ कि श्रीमती भाटिया की हत्या हुई है तो क्या तुम ने यह नहीं महसूस किया कि जो कुछ हुआ वह अपराध का काम है। तुमने पुलिस को बताना अपना कर्तव्य नहीं समझा? स्वयं तुम्हारा प्रेमी क्रिश्चन फंस सकता था।"

"वास्तव में पहले मुझे मालूम हुआ कि श्रीमती भाटिया ने आत्महत्या की है। दो दिन तक मिस्टर भाटिया बहुत दुखी थे और मैं शपथपूर्वक कह सकती हूं कि वह ढोंग नहीं था। हम लोगों की इस सम्बंध में तथा कागज़ों के सम्बंध में कोई भी बातचीत नहीं हुई। उस दिन शाम के समय जब आप आफिस में आये तो मुझे यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि श्रीमती भाटिया की हत्या हुई। आप के जाने के बाद मिस्टर भाटिया ने मुझ से कहा कि 'उस बात का किसी से भी कोई ज़िक्र मत करना, यदि करोगी तो तुम्हें भी हत्या में मदद करने के अपराध में गिरफ्तार किया जायेगा।' कुछ उस धमकी

के भय कारण , और कुछ प्यार के विश्वास के कारण मैं शान्त रही। मैं सच कह रही हूं कि मैं ने जो कुछ भी किया है वह उस पर एहसान करने के लिये नहीं कि उस के दिल में मेरे प्रति प्यार है, परन्तु एक दुखी व्यक्ति को मदद करने के लिये किया है। जिस प्रकार विषय को मेरे सामने प्रस्तुत किया गया वह कार्य भाटिया की इच्छा अनुसार तो था , परन्तु मूल रूप से श्रीमती भाटिया की भलाई के लिये ही था। डर था कि सारी सम्पत्ति आहूजा को न दे दे। मैं शपथपूर्वक कहती हूं कि यदि हत्या की बात मुझे मालूम होती तो मैं उसे बिल्कुल ही मदद नहीं करती। अपितु एक अच्छे नागरिक की भान्ति पुलिस को सूचना देकर अपना कर्तव्य निभाती। मैं ने जब से हत्या की बात सुनी है , तब से मेरे मन पर एक प्रकार का बोझ है कि आगे चलकर इस अपराध का हिसाब देना पड़ेगा।"

वह रूआंसी - सी हो गई।

मैं ने कहा, " अब सुनो, समर्पण (Assignement) के कागज़ तो काफ़ी दिन पहले ही तैयार हो चुके थे। साथ ही उन पर हस्ताक्षर भी हो गये थे। वास्तव में हत्या में तुम्हारी सहायता प्राप्त करने के लिये ही उस ने यह सब नाटक रचा था।"

" शायद इसलिये, क्योंकि उसे विश्वास था कि मैं हत्या की बात सुनकर उस की मदद नहीं करूंगी।"

" यह तो देखना अभी बाकी है , मैडम।"

■

१०. चिमनदास के बयान के कुछ संदर्भ

योजना के अनुसार लाश को लटका कर भाटिया को तुरन्त ही वापस पूना लौटना था। सिनेमा से लौटने के बाद मेरा पहला काम था बंगले की सफ़ाई कर सामान और चीजों को वैसे का वैसा जमाकर रखना, क्योंकि सम्भावना थी कि श्रीमती भाटिया चुपचाप मरना पसन्द न करे और सामान ऊपर नीचे हो। सिनेमा से लौटने के बाद तुरन्त ही परिवार जनों को घर छोड़कर तथा कार पार्क करने के पश्चात् मैं सीधे श्रीमती भाटिया के बंगले पर पहुंचा। सिनेमा पर जाते समय मैं ने दोनो गेट खुले रखे थे। मैं जल्दी में था क्योंकि मिस्टर भाटिया के आने का टाईम हो चुका था। मैं ने सोचा था लौटते समय बंद कर दूंगा पर लौटते समय मुझे याद आया कि भाटिया अपना काम पूरा कर चुका होगा इसलिये मैं ने बंगले में से निकलना उचित नहीं समझा। पूरा परिवार साथ में था और सिनेमा पर सभी को ले जाने का कारण भी यही था कि इस बात की किसी को भनक न लगे। इसलिये बहाना बना कर शहर वाले लम्बे रास्ते से कार ले आया।

मैं ने बंगले में पहुंच कर देखा कि दरवाज़ा खुला हुआ था। हिम्मत कर मैं भी अन्दर घुसा और ऊपर बेडरूम की ओर कदम बढ़ाये। मुझे लगा कोई व्यक्ति दौड़ रहा है। मैं ने पीछे पड़ना ठीक नहीं समझा, क्योंकि मुझे विश्वास था कि वह भाग रहा है और जब मुझे विश्वास हुआ कि वह चला गया है तो मैं ने बती जलाई। बेडरूम के दरवाज़े में चाबियां टंगी थीं। मैंने दस्ताने पहन रखे थे। चाबियां देख कर मुझे समझने में देर नहीं लगी कि वह सुन्दर आहूजा ही था । मैं दरवाज़ा खोल कर अन्दर घुसा। पलंग की चद्दरें अस्त व्यस्त थी। एक शीशे के ग्लास के टुकड़े फर्श पर बिखरे पड़े थे। एक फोल्डिंग कुर्सी उल्टी पड़ी थी। मैं ने सब सामान धीरे धीरे सजा कर रखा, मानो कुछ हुआ ही नहीं था। मैं ने नीचे ड्राइंग रूम का भी निरीक्षण किया। मुझे कोई भी चीज़ अस्त व्यस्त हुई नहीं दिखी। हर बात की संतुष्टि करके मैं वापिस लौट आया। मैं ने दोनों गेट लांक किये। न चाहते हुए भी मैंने अेक दो बार उस पेड की तरफ़ देखा। मेरे मन में अपने प्रति धिक्कार की भावना भर आई, परन्तु यह समय कुछ सोचने का नहीं था। वह बिचारी तो भाटिया के साथ पिक्चर देखने जाने वाली थी। आपस में टंटा होने के बावजूद जब कभी पिक्चर देखने की बात होती थी, तो वह भाटिया के साथ भी उतने शौक से जाती थी जितना सुन्दर के साथ। ....दूसरे दिन जब क्रिश्चन और भाटिया ने तहकीकात कर केस क्लोज़ कर दिया तो मेरे मन को शांति हुई। वेस्टर्न इण्डिया इन्शोरेन्स कंम्पनी में हुए गोलमाल के कारण मिली सज़ा काटने के बाद मैं ने विचार किया था कि कोई पाप या अपराध का काम नहीं करूंगा। इतना ही नहीं मैं ने कोई धंधा या नौकरी करने का विचार त्याग कर एकांत

वाला जीवन बिताना चाहा। इसके लिये मैं ने महाबलेश्वर को पसन्द किया। बीमा एजन्सी मेरी श्रीमती के नाम से चालू थी। मैं ने उसे चालू रखा। कभी कभी पूना या बम्बई का चक्कर लगा कर बिज़िनेस देकर गारंटी पूरी कर आता था। पैसा तो अच्छा बनाया हुआ था और जीवन भर खत्म होनेवाला नहीं था, क्योंकि मैंने अभी तक ब्याज में से ही जीवन निर्वाह किया है।

परन्तु कुछ लालच वश और कुछ भाटिया के साथ सहानुभूति होने के कारण, मुझे इस कुकृत्य में मदद करनी पड़ी। उस की पत्नी का व्यवहार देखकर मुझे भाटिया पर तरस आता था।

इंस्पेक्टर नावाणी और नरेश जिस रात मेरे पास आये, उस समय तक मेरे दिल को संतोष था, परन्तु उन्हें देखते ही मैं समझ गया था कि केस ने पलटा खाया है। उन का मेरी कार पर शक था। वे यह समझ रहे थे कि मेरी कार का हत्या में उपयोग किया गया है। मुझे स्वाभाविक रूप से डर लगा, क्योंकि कॉर्बेरिटर की ओर नावाणी का ध्यान जाता। उस समय फिर भी मैं ने यह नहीं समझा कि आहूजा के यह बताने पर कि उस की कार का कॉर्बेरिटर किसी ने चुराया था, नावाणी इस बात के साथ उसे जोड़ पायेगा।

......मैं ने कई जासूसी उपन्यास पढ़े हैं। एक बात मैं ने दिमाग़ में बिठा रखी थी कि यदि वास्तविक हत्यारा पुलिस को गुमराह करने में सफल हो जाता है, तो पुलिस चोर के बदले साधु को पकड़ती है।

यहां भारत में चोर पकड़ा जाये या साधु, एक बार पकड़े जाने के बाद किसे नहीं पड़ी है कि आगे मेहनत करे, परन्तु मैं यहां भी ग़लत था। सुबह को जब मैं ने समाचार पत्र पढ़ा तो दो पर्यटकों को समझा बुझा कर पुलिस थाने भेजा कि वे कुछ ऐसी बातें जाकर करें ताकि पुलिस का ध्यान आहूजा और उस की कार की ओर आकर्षित हो। उन्होंने वहां जाकर बताया कि.......

दूसरे दिन शाम को जब क्रिश्चन एक दूसरे पुलिस अफ़सर के साथ बंगले पर आया और कुछ समय के पश्चात् वापस गया तो मुझे विश्वास हो गया कि अब नावाणी भी आनेवाला है, क्योंकि में ने उसे थोड़ी देर पहले बाज़ार में कार से जाते हुए देखा था। मैं एकदम जाकर सुनीता के बंगले की बेडरूम वाली खिड़की खोल आया। घर की चाबियां भाटिया ने मुझे दे रखी थीं। मैं ने दो पत्र टाईप करके जेब में डाले। कुछ समय प्रतीक्षा करने के पश्चात् मैं ने नावाणी को बंगले में घुसते हुए देखा। वह अकेला था। मेरी हिम्मत बढ़ी। काले कपड़े पहनकर मैं पीछे वाले किचन की छत से ऊपर चढ़ा। एक चिट्ठी पत्थर में बांध कर नावाणी की ओर फैंकी। मुझे मालूम था कि इस का कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। मैं ने जान बूझ कर दूसरी चिट्ठी पीछे बरामदे में गिराई, जिसे पढ़ने से मुझे विश्वास था कि नावाणी इस मामले में किसी गैंग का हाथ होने की बात सोचेगा।

समाप्त

■

Summary of Sindhi Books

Writer: Gobind Khushalani. **Publisher : St. Kanwar Foundation**

1) Novel : 2002 A. D.
Title "**PAAN HURTRYOON MAAYUN**" - Sindhi Original
"Self willed wayward women" English Translation

Story of a confused lady who tried to get all that she already had in plenty In the process she started visiting priests and so called saints As a result she lost the way and whatever she did have

Story of a hubby, who instead of guiding the misled and innocent wife, started ignoring her Instead of enjoying the married life he tried to get respite in relation with other women. As a result of extra marital relations, he also lost everything.

This novel has been published in Sindh also.

2) Novel : 2003 A. D.
Title "**HIK DAFO VARI**" Sindhi Original
"Once Again" English translation
Hindi translation of the book is in your hands.

Story of an unfettered lady, who could not forget her First Love, and without understanding the difference between Love and Lust forgets the values and responsibilities of marriage.

As a result she lost her life and put her well wishers in great trouble Story of a mystery, to know the end of which, the readers will continue un-interrupted reading i e. without break.

A. T V serial has been made in Sindh, based on this Novel It has been telecast in full twice, in 2004 and 2005 Script of the serial has been written by Mr Ali Baba a well known expert on the subject in Sindhi.

3) Novel : 2004 A. D.
Title "**GULISTAN GHALEEZ THI RAHYO AAHE**" Sindhi Original
"A beautiful Garden becomes filthy" English Translation

Story of terrorism in the back ground of Kashmir A thriller based on present day political and social atmosphere The book covers plenty of historical facts of Kashmir and detailed description of terrorists actions

Main intention is survey of social facts. Terrorists are no doubt troubling the people of Kashmir directly or indirectly, but they have not succeeded widening the rift between Hindus and Muslims at the grass root levels.

Preface of the book has been written by the eminent Lawyer Ex Law Minister and well known Sindhi Personality Mr. Ram Jethmalani. He was once chairman of Kashmir committee on behalf of Central Government. He could see the story of book nearer to the facts prevalent in Kashmir.

The National Council for Promotion of Sindhi Language (ministry of H.R. D., Government of India) has awarded First prize of the year to the book.

4) Novel : 2005 A. D.
Title : "**PYAR MEN PAAN KAHRO**" Sindhi original
"Why Ego in Love" English translation.

Story of Sindhworki families in India, in the immediate background of post partition. It is a Love story in romantic style. The entire novel is narrated in present tense.

A house-hold lady who had no outside exposure, proves to be more mature than her Sindhworki husband in worldly knowledge and behaviour.

This novel has been published in Sindh also by a magazine in instalments.

5) Short Story Collection : 2005 A.D.
Title : "**HAR DEGI CHAMCHA**" Sindhi original
"Spoon of every Bowl" English translation.

This is collection of ten short stories including some entertaining satires. A story written by the Author in 1955 at the Age of 15 is also given in this collection.

6) Novel : 2006 A. D.
Title: "**MULIK TA MUNHINJO**" Sindhi original
"My country, really special" English translation.

Story of Sindh in background of 5000 years ago, real matters regarding then development of Mohenjo Daro and Sindhi civilization in a story of Fiction. Because of such background of the story, Mr. Shoukat Hussain Shoro then Director of Institute of Sindhology Hyderabad Sindh has said; it is a historical Novel. He has written preface of the book.

The novel covers problems of modern Sindh in ancient background. Indication of solutions is also shown. Modern problems are diversion of Sindhu's waters, uneasy assertive behaviour of outsiders on cultural, educational and commercial matters etc of the original citizens; and attempts by the Government to set aside Sindhi Language in order to promote Urdu and other languages. In the novel the ancient people could solve all the problems with unity and wisdom, and with some assertiveness, the water problem.

7) Short story collection: 2006 A. D.

Title "**ISTAMURARI**" Sindhi original

"Hope of continuity" English translation.

A collection of nine stories and satires. The title Satire has been acclaimed most entertaining, covering new untouched subject and style.

8) History : 2006 A. D.

Title **CHACHNAMAH RETOLD**" English original.

(Published by Promila & Co., in association with Bibliophile South Asia, CHICAGO ; Add: C-127, Sarvodaya Enclave, New Delhi 110017 India. Email : ashokbutani@gmail.com)

The original "Chachnamah" oldest available book on history of Sindh was written in old and confusing style in Arabic. Its translations in Sindhi, English and even Persian are also based on same style. The language is perplexing and presentation is in the style of then prevalent "Arabian Nights".

The Author says he has rewritten the entire book in current style and language, keeping in view the needs of modern readers, specially the younger generation. Basic material is the same with no change at all.

One could see that, so many Great Religious books like Ramayan, Mahabharat even Koran Shareef and Bible etc are presented in modern style and language, so many times. No additions /alterations are made in the basic story and contents. Such books are popular among comman readers. For the researchers original versions are preserved separately.

Keeping this in view Gobind Khushalani thought of presenting Last Hindu King of Sindh Rai Dahar in proper perspective. Therefore Chachnamah has been presented in new style and language without any additions or alterations.

9) Novel : 2007 A.D.
Title: "**DIL KAR DARKHAT DASTUR**" Sindhi original
"Make your mind like a tree"- English translation.

This novel is part of trilogy. The first book is one at Sr. No. 1 above and the third one is to be published in the year 2009, details of which are given at Sr. No. 11 below.

This Novel covers story of a self willed wayward man (instead of woman as in earlier novel). The man behaves in such a way that instead of benefiting himself, he puts with him in trouble all his well wishers.

The story is in the background of undesirable practices in corporate circles.

10) History : 2008 A. D.
Title :"**CHACHNAMAH AJU JE ANDAAZ MEN**" Sindhi original
"Chachnamah in Modern style" English translation.

This is Sindhi translation of "Chachnamah Retold" (at Sr. No. 8 above). To avoid mix-up with basic material some relevant additional information is given in separate Annexures. This is with a view to uptodate knowledge about the period, based on research.

11) Novel : 2009 A. D.
Title : **"AEE ALLA"** Sindhi original
"Oh God" English translation.

This is third one in the trilogy, to be published this year.

Story of two self willed wayward elderly friends who join a Charitable Institution with corrupt intention. In the process the corruption is not limited to money matters, but moves away to sexual matters also. They start visiting foreign countries for the purpose at institution's expenses. Latter some cracks are developed in their mutual relationship. Ultimately one is murdered and the other is stripped off his authorities.

PAHLA PYAR (Novel In Hindi)

By Gobind Khushalani

'पहला प्यार' एक ऐसी औरत की कहानी है, जो अपना पहला प्यार तो भुला न सकी, पर प्यार और वासना के फ़र्क़ को न समझते हुए शादी के बँधन और महत्व में अपना कर्तव्य भुल बैठी।

परिणाम स्वरूप अपनी जान गँवाकर अपने चाहनेवालों को कठिनाईयों में डाल गई।

एक रहस्यमय कहानी, जो अन्त तक पाठकों को जकड़ कर रखेगी।

नाटकीय विशेषता लिये हुए इस उपन्यास पर आधारित १६ एपिसोड का **टी.वी सीरियल** सिंध(पाकिस्तान) से टेलिकास्ट होकर लोकप्रिय बन चुका है।

St. Kanwar Foundation,
Ahmedabad 380014